अनिल-प्रकाशन
2619-20 न्यू मार्किट, नई सडक, दिल्ली-110006



क्रिकेट कैसे खेलें

प्रस्तुति- राजेन्द्र कुमार राजीव
सशोधन- लोकेश थानी

प्रकाशक अनिल प्रकाशन
2619-20 न्यू मार्किट,
नई सड़क, दिल्ली 110006
मुद्रक गोयल प्रिंटर्स, दिल्ली-110032
संस्करण 1989
मूल्य : 50-00

अनुक्रम

अध्याय-1

भारतीय टेस्ट क्रिकेट का उद्भव

यद्यपि क्रिकेट, एक अत्यन्त ख्याति प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय खेल है, किन्तु आजकल भारत में भी सर्वाधिक लोकप्रिय खेल बन चुका है। जिन दिनों भारतीय क्रिकेट टीम का क्रिकेट टेस्टमैच, विदेश की किसी टीम से होता है, उन दिनों देश के कोने-कोने में किशोरों से लेकर वृद्ध तक, इस खेल की गतिविधि जानने के लिए उत्सुकतापूर्वक रेडियो और ट्रांजिस्टर पर कान्टेन्ट्री सुनते दृष्टिगोचर होते हैं। इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों में विस्तृत समाचार पढ़ने के लिए लोग चालू खेल की स्थिति से अवगत होने को बड़े बेचैन रहते हैं। भारत में जितना आकर्षण क्रिकेट खेल के प्रति पाया जाता है, उतना और किसी खेल के प्रति नहीं। इसकी लोकप्रियता में उत्तरोत्तर वृद्धि ही पाई जा रही है और ऐसा लगता है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध खेल ने हमारे देश में राष्ट्रीय खेल का स्थान पा लिया है। अतएव इसकी लोकप्रियता की स्थिति को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति यह जानने की जिज्ञासा करेगा कि भारत में क्रिकेट का आगमन कब और कैसे हुआ? और भारतीय क्रिकेट का इतिहास क्या है?

पहला टेस्ट इंग्लैण्ड में खेला गया

क्रिकेट के उद्भव के विषय में यह माना गया है कि यह खेल, सबसे पहले सन् 1300 ई० में इंग्लैण्ड में केन्ट नगर के निवन्डन स्थान में खेला गया था। इसका प्रमाण, इंग्लैण्ड के राजा एडवर्ड प्रथम की आलमारी से उपलब्ध उनकी एक डायरी में लिखित रूप से उपलब्ध हुआ है।

उन दिनों भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन था। यहाँ उसमें काम करने वाले अधिकांश अंग्रेज कर्मचारी इंग्लैण्ड क्रिकेट का खेल खेला करते थे। उस समय यह प्रारम्भिक अवस्था में था और इसमें भाग लेने वाले थोड़े ही अंग्रेज थे।

भारत में क्रिकेट का आगमन

भारत में क्रिकेट का खेल, इंग्लैण्ड से ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा शुरू किया गया। यहां आकर उन्होंने अपना क्रिकेट खेलने का शौक जारी रखा। इसका प्रारम्भ सन् 1721 ई० में खम्भात हुआ। एक इतिहासविद के अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजी नाविक थे। इसी प्रकार से क्रिकेट के खेल ने भारत में अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दीं।

शुरू में यह खेल केवल अंग्रेजों के खेलने की चीज ही समझा जाता था। कुछ कीमती खेल होने और विदेशी छाप होने के कारण तत्कालीन भारतीय जनता ने वर्षों तक इस खेल के प्रति उदासीनता का ही रुख अपनाया। अब तक उपलब्ध प्रमाणों से पता चलता है कि अंग्रेजों के बाद भारत में सबसे पहले क्रिकेट खेलने वाले भारतीयों में पारसी लोग थे।

कलकत्ता क्रिकेट क्लब की स्थापना

पुराने अभिलेखों से पता चलता है कि सर्वप्रथम कलकत्ता में सन् 1792 ई० में "कलकत्ता क्रिकेट क्लब" की स्थापना की गई। उन दिनों कलकत्ता ही भारत की राजधानी थी। अंग्रेज व्यापारी और बड़ी-बड़ी कम्पनियों में काम करने वाले कुछ बड़े-बड़े अंग्रेज पदाधिकारी ही इस क्लब के सदस्य थे और शौकिया तौर पर क्रिकेट खेला करते थे। राजधानी होने के कारण यहीं से अंग्रेजों ने भारत में अपने कदम जमाने शुरू किये थे। इसके साथ साथ भारत के अन्य बड़े नगरों में भी क्रिकेट का खेल खेलने के प्रति रुचि बढ़ी और इसका प्रचार प्रसार हुआ।

ओरियण्टल क्रिकेट क्लब

बम्बई में सन् 1848 ई० में एक पारसी श्री [illegible] ने छोटे छोटे अबोध पारसी बच्चों को क्रिकेट सिखाना शुरू किया।

वास्तव में यहीं से भारत में क्रिकेट की नींव पड़नी शुरू हुई। और इसी वर्ष 'ओरियण्टल क्रिकेट क्लब' की स्थापना की गई। यह क्लब पारसियों का ही क्लब था। इसके खेलने का मुख्य स्थल, वही था, जो आजकल बम्बई का 'आजाद मैदान' कहलाता है। उन दिनों पैवेलियन आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी अपितु पैवेलियन के स्थान पर [illegible] के

भारत मे प्रथम क्रिकेट मैच

क्रिकेट प्रचार के प्रारम्भिक दिनो मे बम्बई और पूना के दो जिमखाना मे एँग्लो इण्डियन्स' (ऐसे अग्रेज जो भारत म नोकरी करने आए थे और यहीं बसने लगे थे) भी क्रिकेट खेला करते थे किन्तु कई वर्षों तक यह खेल क्लबो के आपसी सदस्यों के बीच ही खेला जाता रहा। अन्त मे इतिहास का वह महत्वपूर्ण दिन भी सन् 1877 ई० मे आया, जब भारत मे पहली बार दो विभिन्न टीमो के बीच बम्बई के जिमखाना मैदान पर पहला अन्तर्जातीय क्रिकेट मैच खेला गया। कहना न होगा कि इन दिनों टीमो मे एक पारसी टीम थी और दूसरी बम्बई जिमखाना की एँग्लो-इण्डियन टीम। बम्बई जिमखाना के 168 रना के उत्तर मे पारसी टीम ने 105 रन बनाकर 63 रनो से यह मैच खो दिया। एक एक पारी के आधार पर खेला गया यह मैच हार-जीत के मुद्दो से परे हटकर खेला जाने वाला भारत का पहला ऐतिहासिक मैच था।

इग्लैण्ड मे प्रथम भारतीय टीम

उसी वर्ष कुछ धनी पारसियो ने मिलकर एक योजना बनाई कि एक पारसी टीम को इग्लैण्ड भेजा जाए। योजना बनाना जितना सरल था, उसको क्रियान्वित करना उतना ही कठिन। बम्बई के एक व्यापारी श्री जे० एम० फ्रामजी पटेल, जो इग्लण्ड मे जाकर कई बार क्रिकेट देख और खेल चुके थे, उन्होने इस काम को पूरा करने का सकल्प किया। इसम उन्हें दो अन्य पारसियो—श्री ए० बी० पटेल तथा श्री बी० बी० बारिया का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अन्त मे नौ वर्षों के प्रयत्न के बाद 12 अगस्त, सन् 1886 ई० को जाकर इस योजना ने साकार रूप धारण किया। और पहली भारतीय क्रिकेट टीम इग्लैण्ड के दौरे पर रवाना हुई।

इस टीम मे इग्लैण्ड मे कुल 28 मैच खेले, जिसम एक जीता, 19 हारे और 8 अनिर्णीत समाप्त हुए। एक-मात्र जीत नोरमन हस्ट का स्थानीय टीम के विरुद्ध प्राप्त हो गई। एक पारी और 62 रना से भारत की इस पहली पारसी टीम का नेतृत्व किया था डॉ० एच० पटेल ने।

—

इग्लैण्ड के उक्त दौरे पर जाने वाली टीम के कुछ अन्य सदस्यों में बल्लेबाज थे—पी० डी० दस्तूर, ए० सी० मेजर, जे० एम० मोरनास तथा एस० एच० हारवार, जबकि गेंदबाज थे डी० डी० खम्बाटा, डी० डी० बारिया, एस० एन० मेदावर तथा एम० फाम जी० ओवर आर्म गेंद बाजी करते थे, जबकि कप्तान तथा अन्य सभी गेंदबाज अण्डर आर्म गेंद बाजी मे निपुण थे।

दो वर्ष बाद ही सन् 1888 ई० मे पी० डी० कांगा, पे० एम० दिवेजा तथा डी० सी० पण्डाले ने मिलकर दूसरी पारसी टीम को इग्लैंड के दौरे पर भेजने में सफलता प्राप्त की। इस बार दौरा सफल रहा। कुल खेले गए 31 मैचो मे से 8 मे विजय 11 मे हार और 12 अन्य मैचो को अनिर्णीत कराकर इस टीम ने यह बता दिया कि भारत में क्रिकेट कितनी तेजी से उन्नति कर रहा है।

इस टीम में सन् 1886 म इग्लैण्ड जाने वाली पहली टीम के केवल दो सदस्य मोरनास और हारवार शामिल किए गये थे तथा कप्तान की जिम्मेदारी, आल राउडर एच० डी० काग को सौंपी गई थी। अन्य सदस्यो में एम० सी० बापासोला (आल राउण्डर तथा सकट कालीन विकेट कीपर) आर० डी० कपर (बल्लेबाज तथा नियमित विकेट कीपर), डी० एफ० दूभाष (बल्लेबाज), एम० ई० पावरी (तेज गेंदबाज), के० आर० ईरानी (तेज गेंदबाज तथा आक्रपक बल्लेबाज), डी० सी० पोण्डले, डी० सी० मेहता (दोनो आफ ब्रेक गेंदबाज) एव डी० एन० रायटर (बायें हाथ के तेज गेंदबाज) थे। कपूर ने 55 पारियों से 952 रन तथा दूभाष ने 24 पारियों मे 810 रन बनाकर बल्लेबाजी औसत म सबसे ऊपा स्थान प्राप्त किया। जबकि गेंदबाजी मे पावरी ने कुल 170 विकेट प्राप्त करके अन्य सभी गेंदबाजो को पीछे कर दिया और कुल 32 कैच भी लपके, विकेटकीपर कपूर से सिर्फ दो कैच कम।

अनेक क्रिकेट क्लबों की स्थापना

इग्लैंड के दो दौरों की सफलताओं तथा असफलताओ ने राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट के प्रति तमाम नवयुवकों को आकर्षित किया और इसी उत्साह मे कई छोटे-बड़े क्रिकेट क्लबों की स्थापना की गयी, जहां नियमित रूप से क्रिकेट का अभ्यास किया जाने लगा।

भारतीयों के नाम पर अब तक वे ही टीमें थीं, जिनमें पारसी खिला-

डियो के अतिरिक्त और कोई भारतीय खिलाड़ी नहीं था। इस बीच हिन्दुओं ने संगठित होकर सन् 1878 में हिन्दू क्रिकेट क्लब की स्थापना कर डाली। और इस क्लब ने अपना पहला मैच सन् 1884 में बम्बई जिमखाना के विरुद्ध खेला। उसी समय एक हिन्दू परमानन्ददास ने इस हिन्दू क्लब को आर्थिक रूप से बहुत सहायता दी। अतः क्लब का नाम बदलकर परमानन्द जीवनदास हिन्दू जिमखाना रख दिया गया।

दूसरी तरफ भारतीय मुसलमानों ने भी सन् 1883 में अपना एक अलग क्लब बना लिया। और 1893 में उसका नाम मोहम्डन जिमखाना रखा, जिसे कुछ वर्षों के बाद इस्लाम जिमखाना के नाम से जाना जाने लगा।

किन्तु अभी भी ये सभी क्लब सिर्फ अपने क्लब के सदस्यों के साथ क्रिकेट खेला करते थे और यही कारण था कि जब सन् 1890 में जी० एफ० वरनोन के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम ने पहली बार भारत का दौरा किया तो उनके विरुद्ध भारतीय टीम के नाम पर पारसी टीम ही मैदान में उतरी। पहली पारी में 98 रन बनाकर हालांकि इंग्लैण्ड ने 17 रनों की बढ़त प्राप्त कर ली थी। किन्तु दूसरी पारी में उसके सभी बल्लेबाज मात्र 61 रन बनाकर आउट हो गए। जिसमें एम० ई० पावरी ने बेहतरीन गेंदबाजी द्वारा 34 रन देकर 7 विकेट चटकाये। जीत के लिए आवश्यक रन 76 बनाते हुए 6 पारसी बल्लेबाज आउट हो गये और भारतीय क्रिकेट के इतिहास में पहली बार किसी भारतीय टीम ने इंग्लैण्ड की किसी टीम को 4 विकेट से हराकर भारत भूमि पर पहली विजय हासिल की।

भारत में क्रिकेट की उन्नति के लिए एक बार फिर पारसी आगे आये और उन्होंने उत्तरी भारत का दौरा किया। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य क्रिकेट को लोकप्रिय बनाना था। पारसी टीम ने पटियाला अलीगढ़, इलाहाबाद, मुजफ्फरपुर आदि स्थानों पर विभिन्न मैच खेले। महाराजा पटियाला द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सवों में भी पारसी टीम ने हर वर्ष सम्मिलित होकर पटियाला और शिमला में कई मैच खेले।

अध्याय-2

गेंद, बल्ला, मैदान और पोशाक

किसी भी खेल को सीखने से पहले उसके नियम-उपनियमों को अच्छी तरह जान लेना बहुत आवश्यक होता है । यदि खेल की बुनियाद ही कमजोर हो गई तो फिर खेल को सही तकनीक से खेलना नहीं सीखा जा सकेगा । एक अच्छे स्तर का खिलाड़ी बनने के लिए खेल की बुनियाद और आधारशिला नियमों की जानकारी पहले प्राप्त कर लेने का अर्थ है आधी मंजिल तय कर लेना ।

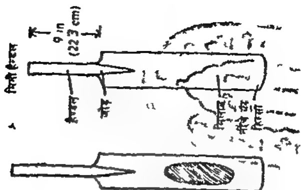
नियमों की जानकारी पहले होने से खेल सीखते वक्त आपको गलत और सही ढंग से खेलने का अहसास शुरू से ही होगा, तो आप खेल को दोष रहित ढंग से खेलने में आरम्भ से ही अभ्यस्त हो जाएंगे । और नियमों से पहले क्रिकेट खेल के साज सामान का ज्ञान भी उतना ही जरूरी है ।

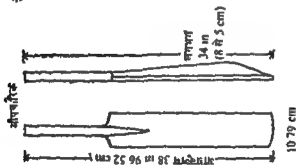
तो आइए, क्रिकेट खेल के नियमों उपनियमों से पहले साज-सामान की जानकारी हासिल कीजिए ।

गेंद और बल्ला

1 क्रिकेट में इस्तेमाल गेंद का भार 155.9 ग्राम ($3\frac{1}{2}$ औंस) से कम तथा 163 ग्राम ($5\frac{3}{4}$ औंस) से अधिक नहीं होना चाहिए उसकी परिधि (वृत माप) $8\frac{13}{16}$" से कम और 9" [illegible] अधिक नहीं होनी चाहिए ।

2 बैट या बल्ले का क्रिकेट के प्रारम्भ में कोई निश्चित आकार निर्धारित नहीं किया गया था । पर अब बैट के आकार-प्रकार के बारे में यह नियम है कि बैट मूठ सहित 38 से लम्बा नहीं होना चाहिए । बैट की हत्थे से नीचे वाले भाग की चौड़ाई चार या सवा चार इंच से अधिक नहीं होनी चाहिए । बल्ले के वजन के बारे में अब तक कोई मान्य नियम नहीं बन सका है । यह खिलाड़ी की सामर्थ्य और समझ पर

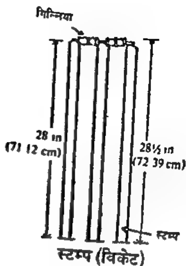


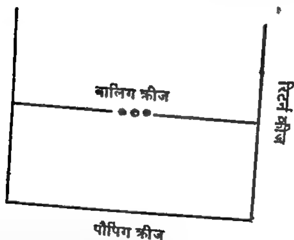


बल्ले

छोड़ दिया गया है। यदि बैट बहुत भारी उपयोग में लाया जाएगा तो खिलाड़ी जल्दी थक जाएगा और शॉट मारने के लिए उसे फुर्ती से सही दिशा में घुमा भी नहीं पाएगा। और यदि बैट हल्का होगा तो खिलाड़ी उससे करारे शॉट नहीं मार पाएगा। अतः यह खिलाड़ी की सुविधा और विवेक पर निर्भर है कि उसे बैट ऐसा चुनना चाहिए जिसका भार न कम हो न अधिक जिससे खिलाड़ी बिना थके अच्छे और करारे शॉट मार सके, बैट घुमाने में उसे थकावट महसूस न हो।







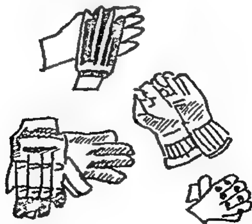
क्रिकेट के नियमों के अनुसार बल्ले की लम्बाई विभिन्न वर्ग में इस प्रकार होनी चाहिए।

बल्ले का साइज	हैंडिल	बल्ले की लम्बाई	चौड़ाई	पूरी लम्बाई
3	26 सेमी	46 सेमी	9 5 सेमी	72 सेमी
4	27 "	48 "	9 8 "	75 "
5	28 "	50 "	10 1 "	78 "
6	29 "	52 "	10 4 "	81 "
7	30 "	56 "	10 8 "	86 "
8	32 "	56 "	10 8 "	88 "

विकेट—एक विकेट के लिए तीन स्टम्प काम मे लाए जाते हैं। क्रिकेट की पीच के दोनों ओर तीन तीन स्टम्पो के दो विकेट लगे होते हैं।

क्रिकेट मे तीनो स्टम्पो की एक-दूसरे से इतनी दूरी रखी जाती है कि उनके बीच से गेंद न निकल सके। तीनों स्टम्पो को गाडने के बाद उनकी सम्मिलित चौड़ाई 9" होनी चाहिए।

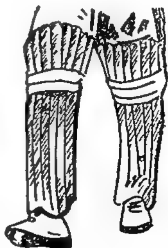
स्टम्प गाडने के बाद विकेट की ऊचाई बिना गिल्लियों के 28" (71 12 से मी) तथा गिल्ली रखने के बाद ऊचाई 28½" होनी चाहिए।



पोशाक—सुरक्षा की दृष्टि से क्रिकेट खिलाड़ी को कुछ खास किस्म की पोशाक पहननी चाहिए खासतौर से बल्लेबाज और विकेटकीपर तथा स्लिप मे खड़े फील्डरो को। बल्लेबाज को पैरो की सुरक्षा के लिए पैड बांधने चाहिए जो घुटनो और पैर के सामने के नीचे तक के भाग को तेज गेंद के आघात से सुरक्षित रखते हैं। पैंट के अन्दर एब्डोमिनल गार्ड अवश्य पहनना चाहिए।

हाथो मे स्पंज के दस्ताने होने चाहिए ताकि यदि भूल से गेंद बल्ले पर न आकर अगुलियो पर लगे तो जख्मी होने का अदेशा न हो।





जूते ऐसे होने चाहिए कि भागते-दौड़ते परेशानी न हो। अन्दर से जूते काफी मुलायम होने चाहिए। क्योंकि क्रिकेट का खेल दिन भर चलता है और दिन भर जूते पहने रहने से पैर की अंगुलियां जूते में जकड़ी रहती हैं, अतः मुलायम जूता इन्हें दिन भर आराम दे सकता है।

मोजे मोटे तथा घुटनों तक लम्बे होने चाहिए, ताकि पैरों की सुरक्षा रहे। कई खिलाड़ी मोजे के आस-पास रबड़ या स्पंज के पिलो रखकर तब जूते पहनते हैं ताकि गेंद के आघात से पैरों की अंगुलियों को सुरक्षित रखा जा सके।

सिर की सुरक्षा के लिए हैट अवश्य पहनना चाहिए। इससे सुरक्षा तो होती ही है, साथ ही धूप की चमक से आंखें बची रहती हैं।

क्रिकेट खिलाड़ी पोशाक के रूप में सफेद पैंट और सफेद शर्ट, टी-शर्ट या फुल स्लीव्स की बनियान का इस्तेमाल करते हैं। पैंट और शर्ट ढीली-ढाली होनी चाहिए ताकि हाथ-पैर को अच्छी तरह हरकत करने का मौका मिले। शर्ट का कपड़ा ऐसा होना चाहिए कि वह ज्यादा-से-ज्यादा पसीना सोख सकने की क्षमता रखे।

क्रिकेट खिलाड़ी को शर्ट के ऊपर स्वेटर अवश्य पहनना चाहिए ताकि मैदान की ठंडी हवा से वह सुरक्षित रह सके।

क्रिकेट का मैदान और पिच

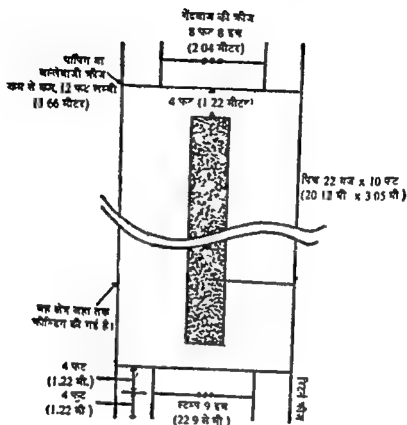
क्रिकेट का मैदान साफ-सुथरा तथा समतल होना चाहिए। यदि मैदान पर घास हो तो उसे काटकर एक-सा कर देना चाहिए।

आजकल सभी प्रथम श्रेणी मैच विकेट पर ही खेले जाते हैं।

पिच की लम्बाई 22 गज होती है तथा चौड़ाई 10 फुट। पिच समतल, साफ और कठोर होनी चाहिए। इस पर उगी घास हटा दी जाती है। पिच कंक्रीट और पानी में भीगे हुए मसाले से तैयार की जाती है, इसके ऊपर पानी छिड़ककर रोलर फिराया जाता है।

पिच का जूट बिछाकर भी बनाया जाता है पर आजकल ज्यादातर टर्फ पिचों का ही इस्तेमाल किया जाता है।

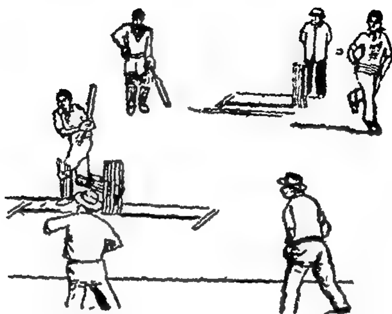
क्रिकेट में पिच का बड़ा महत्त्व होता है। पिच स्लो और फास्ट बनाने के अलग अलग तरीके होते हैं। अपन तथा विरोधी टीम के बोलरा



नीज, पिच आदि का माप

गुणों को देखते हुए ही पिच को फास्ट या स्लो बनाया जाता है। वैसे क्रिकेट का पिच न ज्यादा फास्ट बनाना चाहिए और न ज्यादा स्लो ताकि उस पर स्पिन गेंदबाज और फास्ट गेंदबाज दोनों ही चल सकें। इस तरह का पिच एक आदर्श पिच कहलाता है।

पिच के एक छोर के क्रिकेट के निश्चित क्षेत्र में जिसे क्रीज या पॉपिंग क्रीज कहा जाता है, बल्लेबाज खड़ा होता है और दूसरे छोर के



मैदान के मध्य पिच तथा दोनों ओर विकेट, गेंदबाज और
बल्लेबाज के साथ फील्डर भी

विकेट के निश्चित क्षेत्र में बने क्रीज के मध्य से गेंदबाज बौलिंग करता है। गेंदबाज गेंद को ठप्पा पिच पर ही खिलाकर गेंद को ब्रेक देता है।

अध्याय-3

क्रिकेट के नियम

क्रिकेट के नियम बनाने का श्रेय एम सी सी को दिया जाता है। सर्व प्रथम सन् 1744 में क्रिकेट के नियम बनाए गए। इन नियमों को जहां पम्फलेट के रूप में छापा गया वहां ये नियम निनन नामक कपड़े के रूमालों में भी छापे गए। इन नियमों को क्रिकेट जगत में 1744 की संहिता के नाम से प्रचारित किया गया।

इस तरह उस समय से ही क्रिकेट के नियमों का जोर शोर से प्रचार प्रसार हुआ। ये ही नियम आगे चलकर क्रिकेट के नियमों की आधार शिला बने।

सन् 1787 में इंग्लैंड के शहर लंदन के डारसेट स्क्वायर में टाम लार्ड ने अपना क्रिकेट ग्राउंड स्थापित किया। साथ ही साथ एम सी सी की स्थापना भी हुई।

तभी से एम सी सी क्रिकेट के नियमों को स्थापित करने वाली अधिकारिक संस्था बनी। आज भी क्रिकेट के नियमों का संशोधन एम सी सी ही करती है।

सन 1788 में एम सी सी ने पहली बार क्रिकेट के नियमों में संशोधन किया था। इसके बाद क्रिकेट के मूलभूत नियमों को सन 1947 में काफी बदल डाला गया।

कुछ वर्ष पूर्व एक दिवसीय या सीमित ओवरों के मैचों की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर कुछ नए परिवर्तन एक दिवसीय मैचों के लिए अलग से किए गए हैं।

इन सभी नियमों को अच्छी तरह जानना हर क्रिकेट खिलाड़ी, दर्शक, कमेन्टेटर आदि के लिए अत्यंत आवश्यक है। तभी खेल का भरपूर मजा आएगा।

(1) क्रिकेट मच दो टीमो के बीच होता है । दोना ही टीमो मे 11 11 खिलाडी नियमित खिलाडी होते है । इनके अलावा चार-चार खिलाडी रिजव या अतिरिक्त होते है । जो किसी खिलाडी को चोट लगने की अवस्था मे उसके स्थान पर खेलन के लिए सुरक्षित रखे जाते है । इन खिलाडियो मे 12वें खिलाडी का नाम टीम के नियमित खिलाडियो के साथ घोषित किया जाता है । 12वा खिलाडी किसी भी क्षण किसी क्षेत्र रक्षक के मदान से जाते ही क्षेत्र रक्षण कर सकता है । यह गेंदबाजी और बल्लेबाजी नही कर सकता है । जहा और खिलाडी, किसी खिलाडी के घायल हो जान या बीमार हो जाने पर ही आते ह । 12वा खिलाडी मदान और पेवेलियन के बीच कभी भी आ सकता है । वही ड्रिक्स इटरवल मे पानी की ट्रान्नी के साथ आता है ।

हर टीम मे एक कप्तान, एक उपकप्तान एक विकेट कीपर अनिवाय रूप से होता है । कप्तान अपनी टीम का सर्वेसर्वा होता है । वही टीम का नतत्व करता है खेल की नीति निर्धारण करता है । फील्डिंग जमाता है ।

गेंदबाजी और बल्लेबाजी का क्रम निश्चित करता है । टास करन मे अग्रणी होता है । पिच मौसम, अपन गेंदबाजो व बल्लेबाजो की क्षमता को देखकर गेंदबाजी करने या बल्लेबाजी करन का निणय लेता ह । कप्तान की अनुपस्थिति में यह सब जिम्मेदारी उप कप्तान निभाता है ।

(2) खेल के मदान मे क्षेत्र रक्षण कर रही टीम के 11 खिलाडी दोनो अम्पायर और दोनो बल्लेबाजो के अतिरिक्त और कोई नही रह सकता है । बल्लेबाज या क्षेत्र रक्षण कर रहे खिलाडियो के बीमार हो जाने अथवा चोट खा जान पर एवजी खिलाडी (सब्सीट्यूट) बुलाया जा सकता है ।

बल्लेबाजके घायल हो जाने पर उसे रनर दिया जाता है । जो उक्त भागने मे असमथ बल्लेबाज के स्थान पर दाडता है । उक्त बल्लेबाज के आउट होते ही रनर भी मदान स बाहर आ जाएगा ।

रन लेते समय दौडने की अवस्था मे रनर के रन आउट हो जाने की अवस्था —रनर का साथी खिलाडी जिसके लिए रनर दौड रहा है आउट माना जाएगा । रनर के रहते बल्लेबाज को

दौडना नही चाहिए। यदि बल्लेबाज रन लेने दौडता है व रनर खड़ा रहता है तो रन नही माना जाएगा। रनर के दौडने पर ही रन माने जाएगे।

(3) एक बर्टिग क्रीज से दूसरी बर्टिग क्रीज तक पूरी तरह दौड़ने पर ही रन माना जाएगा। कोई भी बल्लेबाज क्रीज या रिटर्न क्रीज को बल्ले से या खुद अपने शरीर से पार कर नही लाएगा तो वह रन नही माना जाएगा। इसे शार्ट रन कहते है।

(4) हिट की गई गेंद सीमा रेखा से बाहर सीधा टप्पा खाए तो छह रन दिए जाते है। गेंद सीमा के पहले या सीमा पर ही टप्पा खाकर जाए तो चार रन माने जाएगे। सीमा के बाहर को आउट फील्ड कहा जाता है वहा अगर गेंद कैच भी कर ली जाए तो खिलाडी आउट नही होगा। जब तक गेंद सीमा रेखा से नही टकरा जाती चार रन नही दिए जाएगे। अगर क्षेत्र रक्षक खुद सीमा से बाहर चला जाए और गेंद सीमा से न टकराए तो चार रन दिए जाएगे।

(5) इसी तरह यदि बल्लेबाज गेंद को डीप मे खेलकर आखिरी गेंद पर एक रन बनाकर बल्लेबाजी का अपना छोर बनाए रखना चाहता है और क्षेत्र रक्षक जानबूझ कर पर से गेंद को सीमा रेखा के पार कर देता है इस अवस्था में अम्पायर को चाहिए कि क्षेत्र रक्षण कर रही टीम को दण्डित करे और भविष्य में ऐसा न करने की चेतावनी दे। ऐसी अवस्था में उक्त बल्लेबाज को अपना बनाया एक रन तो मिलेगा ही साथ मे 5 रन और मिलेंगे व बल्लेबाज का स्थान भी नही बदला जाएगा।

(6) इस स्थिति में अगर क्षेत्र रक्षक गेंद का पीछा करता है उसे छूता या रोकता नही और गेंद को सीमा रेखा पार कर जाने देता है तो फिर उस स्ट्रोक से बल्लेबाज को चार रन ही मिलेंगे और छोर भी बदला नही जाएगा। छोर बदल लेने के बावजूद बल्लेबाज को अपने छोर पर वापस जाना पड़ेगा।

(7) अगर गेंद ओवर थ्रो होकर सीमा रेखा के पार चली जाए और ऐसी अवस्था में बल्लेबाज रन लेने दौड पड़े हो पर एक-दूसरे को क्रास न किए हो यानी अपने-अपने छोर पर नही पहुंचे हो। और क्षेत्र रक्षक द्वारा फील्ड करके फेंकी गई गेंद सीमा रेखा के पार चली जाए तो बल्लेबाज को इस अवस्था में

चार रन मिलेंगे। लेकिन अगर बल्लेबाज ने एक-दूसरे को क्रास किया हो तो एक और रन जुड़कर 5 रन मिलेंगे। और अगर बल्लेबाज तीसरा रन लेने की कोशिश म एक-दूसरे को क्रास कर गए हो और गेंद सीमा रेखा पार कर जाए तो बल्लबाज को सात रन मिलेंगे। अत ओवर थ्रो के मामले मे सतर्क रहना चाहिए और ध्यान रखना चाहिए कि गेंद जब ओवर थ्रो हुई तो बल्ले बाजो ने एक-दूसरे को क्रास किया या नही।

(8) विकेट कीपर या गेंदबाज के हाथ मे आते ही गेंद डेड हो जाती है यानी खेल म नही रहती।

(9) अगर गेंद बल्लेबाज के पड मे फस जाए तो उस डेड मान लिया जाता है। पर अगर गेंद विकेट कीपर के पड म अटक जाए ता गेंद 'डेड' नही मानी जाएगी।

(10) निम्न अवस्था म भी गेंद डेड मानी जाएगा —

(क) यदि किसी कारणवश बल्लेबाज गेद खेलन को तयार नही हो।

(ख) यदि गेंदबाज गेंद फेंकने की क्रिया के पहले ही गेंद गिरा दे।

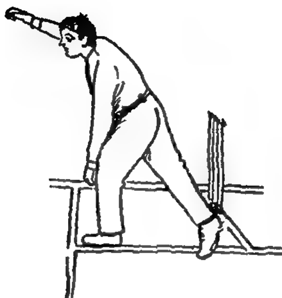
(ग) यदि बल्लेबाज का गेंद मिलने से पहल ही बल्लेबाज के छोर की एक या दो गिल्लया गिर जाए।

नो बाल

(11) बालिंग छोर पर खडा अम्पायर ऐसी किसी भी गेंद को नो बाल घोषित कर सकता है। यदि वह गेंद फेंकते समय गेंदबाज के कदमो की स्थिति मे सतुष्ट नही है। जस—

(क) गेंदबाज का पिछला पर रिटन क्रीज के अन्दर पडा हो और रिटन क्रीज या रिटन क्रीज फारवर्ड एक्सटेंसन को नहीं छू रहा हो।

(ख) फ्रट फुट यानी अगले पर का कुछ हिस्सा (चाहे हवा मे या जमीन मे) बौलिंग क्रीज से पीछे रहता है।



नो बाल

(12) गेंदबाज ओवर आम गेंद फेंके या अण्डर आम। बायें हाथ से गेंद करेगा या दाहिन से। आवर द विकेट फेंकेगा या राउंड द विकेट। इनकी जानकारी अम्पायर को पहले दी जानी चाहिए। बिना जानकारी दिए गेंद करने की स्थिति में अम्पायर गेंद को नो बाल द सकता है।

(13) गेंद को सही ढग से फेंकने की जगह थ्रो करने पर भी गेंद को नो बाल माना जाएगा।

(14) यदि गेंदबाज गेंद फेंकने से पूव ही बल्लेबाज के छोर पर रन आउट करने का प्रयास करे तो नो बाल होगी।

(15) यदि गेंदबाज गेंद करने के पूर्व नान स्ट्राइकर या अपने छोर पर खड़े बल्लेबाज को रन आउट करने की कोशिश करता है तो यदि ऐसे मे कोई रन ले लिया जाता है उसे माना जाता है और वह रन नो बाल का माना जाता है। गेंदबाज द्वारा इस प्रकार के प्रयत्न को नो बाल माना जाएगा।



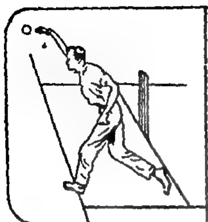
नो बाल

(16) यदि कोई नो बाल हुई हो जिसे बल्लेबाज ने न खेला हो और वह विकेट के पीछे बिना रुके सीमा पार कर जाए तो अम्पायर नो बाल देगा साथ ही चार रन भी देगा यानी एक्स्ट्रा के चार रन कहे जायेंगे।

(17) यदि नो बाल पर खिलाडी चौका मार दे तो उसे रन मिलेंगा। पर ओवर में वह गेंद नहीं गिनी जाएगी। चित्र देखें अगले पेज पर।

(18) यदि नो बाल पर खिलाडी रन लेते हुए रन आउट हो जाए तो वह आउट माना जाएगा। इस स्थिति में भी बल्लेबाज टीम को एक अतिरिक्त रन और गेंदबाज को अतिरिक्त गेंद मिलेंगी।

(19) गेंदबाज गेंद ओवर द विकेट फेंकेगा या राउंड द





ठीक गेंद

विकेट यह जानना बल्लेबाज का अधिकार है। इसलिए गेंदबाज अम्पायर को बिना बतलाए परिवर्तन करने पर अम्पायर नो बाल घोषित करेगा।

वाइड गेंद

(20) यदि गेंदबाज गेंद को इतने ऊपर फेंके कि बल्लेबाज अपनी सामान्य अवस्था में उस गेंद को छू भी न पाए तो गेंद वाइड मानी जाएगी। इस पर बल्लेबाजी कर रही टीम को एक अतिरिक्त रन और गेंदबाज को अतिरिक्त गेंद दी जाएगी।

(21) यदि गेंद लेग और ऑफ स्टंप पर बल्लेबाज के बल्ले की पहुंच से काफी दूर हो तो गेंद को वाइड कहा जाएगा।

बाई रन

(22) यदि कोई गेंद बल्ले से बिना छुए निकल जाए तो उस पर दौड़कर रन लिए जा सकते है ऐसे रनो को बाई रन कहा जाता है। यह जरूरी नही है कि गेंद विकेटो या विकेट कीपर के पास से ही गुजरे। यह रन अतिरिक्त रन माने जाते है।

लैग बाई

(23) यदि गेंद बल्लेबाज के बल्ले को न छू कर शरीर के किसी भी हिस्से को छूती हुई निकल गई हो—साथ मे यह शत भी है।

(क) बल्लेबाज ने गेंद पर शाट लगाने का प्रयास किया हो।

(ख) बल्ले ने उस गेंद से चोट लगने से अपन आपको बचाया हो।


लेग बाई की एक स्थिति

(24) अगर बल्लेबाज कोई शाट न खेलकर गेंद का हाथ या शरीर के किसी अन्य हिस्से से जानबूझ कर डिफलेक्ट कर देता है और बाई रन लेन को भागता है। इस स्थिति मे अम्पायर

गेंद को डेड घोषित कर देता है। बल्लेबाज इस स्थिति में अपने विकेटों पर वापिस चले जायेंगे और रन को नहीं माना जाएगा। चाहे गेंद सीमा रेखा भी पार कर चुकी हो।

(25) अगर बहुत तेज हवा चल रही हो तो विकेटों से बेल्स हटाई जा सकती है। पर ऐसा अम्पायरों व कप्तानों की सहमति से ही सम्भव है। ऐसी अवस्था में गेंद लगने से विकेट के जरा भी हिलने पर आउट माना जाएगा।

आउट – आउट होने की अब दस स्थितियां हैं।

(26) **क्लीन बोल्ड**— यदि कोई सामान्य गेंद विकेटों से लग जाए और बेल्स में से एक भी गिर जाए तो खिलाड़ी क्लीन बोल्ड आउट हो जाता है। यदि गेंद बल्लेबाज के बैट या पैड से लगकर भी विकेट में लगे तो भी बल्लेबाज क्लीन बोल्ड आउट माना जाएगा।

ध्यान रहे अगर गेंद बल्लेबाज द्वारा खेल लिए जाने के बाद स्थिर हो जाए और अनजाने से बल्लेबाज के पैर द्वारा विकेट में लग जाए तो बल्लेबाज आउट नहीं होगा। क्योंकि गेंद डेड हो चुकी थी।

(27) **कैच आउट**— गेंद बल्ले से लगकर बिना जमीन पर टप्पा खाए किसी भी क्षेत्र रक्षक द्वारा कैच कर ली जाए और कैच लेने पर दस सेकिंड हाथ में रहे। तो बल्लेबाज आउट होगा। बल्लेबाज के पैड जूते से लगकर आई गेंद पर भी बल्लेबाज आउट होगा। अगर गेंद आउट फील्ड में किसी भी खिलाड़ी द्वारा कैच की जाए तो बल्लेबाज आउट नहीं होगा।

गेंद अम्पायर को छू कर भी कैच की जाए तो भी बल्लेबाज आउट होगा।

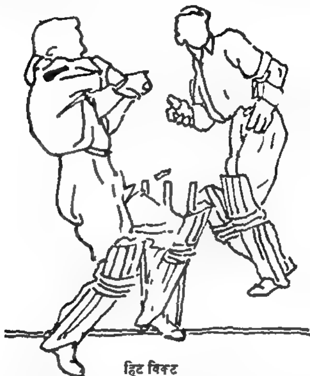
यदि गेंद बल्ले को छू कर बिना जमीन पर टप्पा खाए विकेट कीपर के पैड में लगे तो भी बल्लेबाज आउट होगा।

(28) **हेण्डलिंग द बाल**— यदि बल्लेबाज गेंद को जब खेल में हो हाथ से पकड़ ले तो वह आउट होगा।

(29) **हिटिंग द बाल ट्वाइस**—यदि बल्लेबाज जानबूझ कर गेंद को दो बार टच करे तो वह आउट होगा।

(30) **हिट विकेट**— यदि बल्लेबाज गेंद को मारने की कोशिश में अपना बल्ला विकेट में मार दे। या उसके शरीर का

कोई भी हिस्सा विकेट से टकरा जाए या गेंद खेलने के बाद रन के दौरान भी विकेट मे बल्ला मार दे तो वह आउट होगा ।



हिट विकट

यदि बल्लेबाज ने हिट विकेट होने से पूर्व अपना शाट पूरा कर लिया हो तो वह आउट नही होगा ।

(31) पग-बाधा—एल बी डब्लू या लेग बिफोर विकेट की चार स्थितियो से पृष्ठ-23 पर दिए चित्र द्वारा समझा जा सकता है ।

चित्र म न 1 की स्थिति मे बल्लेबाज नोट आउट होता है क्योंकि उसका पैर स्टप के बाहर है । चित्र न 2 की स्थिति मे बल्लेबाज आउट माना जाएगा क्योंकि उसके पैर स्टपो के आगे है । चित्र न 3 मे अम्पायर यदि समझता है यदि पगबाधा न



होती तो गेंद विकेट के ऊपर से निकल जाती तो बल्लेबाज नाट आउट होगा। यदि अम्पायर समझता है पगबाधा न होती तो गेंद सीधे विकेट मे जाती तो खिलाडी आउट होगा। चित्र 4 मे बल्लेबाज आउट होगा नम्बर 5 मे इकदशा म बल्लेबाज नाट आउट है कारण गेंद लेग स्टप पर टप्पा खाकर आई है। टप्प के निशान पर ध्यान दें।

इसके अलावा एल बी डब्ल्यू के समय से गौर तलब बात गेंद की बाउड या उछाल आर गेंद की टन पर खास ध्यान रना चाहिए। गेंद टप्पा खाकर या स्पिन होकर विकेट से ऊपर या विकेटा से परे नही जा रही थी।

(32) आबस्ट्रक्टिंग द फील्ड— यानी क्षेत्र रक्षण म दबाव डालना यदि बल्लेबाज किसी क्षेत्र रक्षक को क च लेन या गेंद पकडने स रोके ता वह आबस्ट्रक्सन दी फील्ड के तहत आऊट दिया जाएगा। यदि दुघटनावश क्षेत्र रक्षक और बल्लेबाज टकरा जाए तो इस नियम का लाग नही माना जाएगा।

बल्लेबाज द्वारा किसी क्षेत्र रक्षक को गाली देना, दुर्व्यवहार करना भी आवस्ट्रक्सन द फील्ड म आता है उसे आऊट दिया जा सकता है।

रन आऊट

(33) रन लेते हुए यदि कोई बल्लेबाज अपनी क्रीज तक ना

पहुंचा हो और विकेट को द्वारा या गेंदबाज, फील्डर द्वारा गेंद से विकेट गिराया जाय तो बल्लेबाज आउट होता है।

यदि बल्लेबाजों ने एक दूसरे को क्रास न किया हो तो ऐसे मे भी वही बल्लेबाज आउट माना जाएगा जिसके छोर का विकेट गिरा हो।

यदि बल्लेबाज शाट सीधा गेंदबाज की ओर मार और रन ले भागे यदि गेंद किसी फील्डर को छूकर विकेट मे लगेगी तो पहले रन आउट होगा। यदि सीधी बिना किसी के छुए लगेगी तो खिलाड़ी रन आउट नहीं होगा।

(34) **स्टंप आउट**—यदि बल्लेबाज शाट मारते समय क्रीज से बाहर निकल आए और विकेट कीपर गेंद विकेटो म मार दे तो वह खिलाड़ी स्टंप आउट होगा।

बल्लेबाज के वापिस क्रीज से बहर होने की स्थिति मे किसी भी खिलाड़ी द्वारा बेल्स गिराने की अवस्था म बल्लेबाज स्टंप आउट होगा।

(35) **टाइम्ड आउट**—इस नए नियम के अनुसार यदि बल्लेबाज के आउट होने के दो मिनट तक यदि नया बल्लेबाज विकेट पर नहीं आता है तो अम्पायर उस आने वाले बल्लेबाज को टाइम्ड आउट दे सकता है।

(36) बल्लेबाज सिर्फ पूरी तरह लकड़ी का बल्ला ही इस्तेमाल करेगा। किसी धातु फाइबर का बल्ला इस्तेमाल नहीं होगा। आस्ट्रेलिया के डेनिस लिलि द्वारा एल्युमीनियम के बल्ले के प्रयोग के बाद यह नियम बनाया गया है।

(37) बल्ले की अधिकतम लम्बाई 96 5 से मी तथा चौड़ाई 10 8 से मी होती है।

(38) बल्लेबाज के हेलमेट म लगकर पर आया कैच माना जाएगा और उसे पकड़ जाने पर बल्लेबाज आउट होगा।

(39) मैच के अन्तिम चरण म एक घंटे पूर्व 20 मडटरी ओवर यानि बीस अनिवार्य ओवर होंगे जायेंगे।

(40) पिच पर पहले दिन रोलर नहीं किया जा सकता है।

(41) स्कोर के विषय मे अंतिम निर्णय अम्पायर करेंगे।

(42) अगर नई गेंद मे चमक लाने के लिए कोई भी फील्डर रगड़ सकता है।

(43) आफ साइड मे छह से ज्यादा खिलाडी नही खड हो सकते हैं।

(44) 200 रन करने के बाद, दो दा पारी के मचा मे नई गेंद ली जा सकता ह । पर यह गेंदबाजी कर रही टीम की अपनी इच्छा पर ह । उस पर कोई दबाव नही डाला जा सकता ह ।

(45) गेंद खो जाने या गेंद का आकार बिगड जान पर अम्पायर उतन ओवर खेली गई गेंद ही इस्तमाल करन की इजाजत देंगे ।

(46) फालो आन—पाच दिनो के मच मे यदि पहले बल्लेबाजी करन वाली टीम दूसरी टीम से 200 रन स अधिक की बढन ले ले ता वह अपनी प्रतिद्वन्द्वी टीम को फोलोआन दे सकती है । यानी उक्त टीम को एक और पारी खेलनी होगी ।

200 से ज्यादा रन बनाने वाली टीम यदि फालो आन नही दना चाहे तो कोइ बात नही है ।

तीन दिवसीय मचो मे यह अवधि 150 रनो की है । दो दिन के मच मे यह अवधि 100 रनो की है ।

(47) पारी की घोषणा - कप्तान अपन विवेक से जब चाहे तब पारी घोषित कर सकता है । बस एक बार पारी घोषित होने के बाद घोषणा वापिस नही ले सकता है ।

एक दिवसाय यानी सीमित ओवरों के अन्तर्राष्टीय मचो के नियम —

(1) कधे पर आती गद को वाइड गेंद माना जाएगा । जिसम गेंदबाज को एक अतिरिक्त गेंद और बल्लेबाज टीम को अर्तिरिक्त रन मिलेगा

(2) लग आर आफ से जरा भी बाहर जानी गेंद को वाइड माना जाएगा ।

(3) हर टीम को सीमित समय म अपन निश्चित ओवर फेंकने हागे । कम ओवर फेंकने पर टीम को नकद जुर्माना अदा करना हागा ।

(4) परिस्थितियो के अनुसार निश्चित ओवरो की सख्या मे कमी की जा सकती है । यह निणय दानो अम्पायरो व कप्तान की सहमति स लिया जाएगा ।

(5) पहल 15 ओवर म आफ साइड मे सर्किल के अन्दर छह खिलाडी रहग जा 15 ओवर के बाद हटा दिए जायेंगे ।

बल्लेबाज के लिए कुछ हिदायतें

बल्लेबाज को सबसे पहले गार्ड लेना चाहिए अर्थात् अपने बल्ले की स्थिति विकेटों के आगे ठीक रख, खड़े होने की ही सही स्थिति पर ध्यान देना चाहिए। उसके बाद फील्ड में खड़े विरोधी टीम के क्षेत्र रक्षकों पर नजर डालनी चाहिए कि वे कहां-कहां खड़े हैं या उनका कैप्टन उन्हें किन-पॉइंटों पर खड़े होने की हिदायत दे रहा है। यानी फील्ड में क्षेत्र रक्षकों का पूरा खाका बल्लेबाज के दिमाग में रहना चाहिए। क्षेत्र रक्षण के खाके से यानी क्षेत्र रक्षकों की स्थिति से बल्लेबाज यह आसानी से जान सकता है कि किस प्रकार की गेंद खेलने के लिए उसे तैयार हो जाना चाहिए।

हर बल्लेबाज को रन बनाने के लिए दौड़ते समय अपने साथी को



उछलती गेंद को बल्ले से आगे बढ़कर इस ढंग से लगाएं

भी सतर्क कर देना चाहिए ताकि वह भी तुरन्त ही दौड़ पड़े। कहने का तात्पर्य यह है कि सफलतापूर्वक रनों का अम्बार लगाने के लिए दोनों ओर के बल्लेबाजों में आपसी तालमेल होना चाहिए।

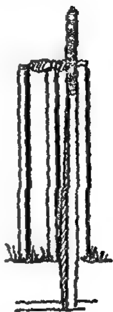


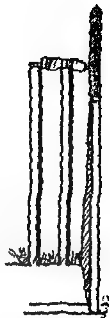
पीछे हटकर उछलती गेंद को इस ढग से दबाए ताकि
कैच न उछले

अब हम फिर गार्ड लेने की स्थिति पर विचार करेंगे क्योंकि ऊपर तो हमने बल्लेबाज की स्थिति और खेलने की आरम्भिक सतर्कता का केवल एक चित्र प्रस्तुत किया था। गार्ड लेने की दरअसल तीन प्रमुख स्थितियां हैं जिनके अनुसार बल्लेबाज अपनी व बल्ले की स्थिति निश्चित करते हैं। स्टम्पों के आगे बल्ला रखने की स्थिति बल्लेबाज के अपने पसंदी के शॉटों के अनुसार होती है। पहले तरीके मे बल्ला मध्य वाले स्टम्प की सीध मे रखा जाता है, दूसरे तरीके मे बल्ले को लैग स्टम्प की सीध में रखा जाता है तथा तीसरे तरीके मे बल्ला मिडिल और लैग स्टम्प की सीध मे रखा जाता है।

पार्ड—अब आपको उपर्युक्त तीनों गार्ड लेने की स्थितियो के लाभ-हानि से अवगत करा दें। यदि बल्ला मध्य स्टम्प की सीध मे रखकर खेला जाय तो लैग की ओर शॉट मारने मे तो आसानी होगी पर साथ ही एल० बी० डब्ल्यू (लैग बिफोर विकेट) होने का खतरा हमेशा बना रहता है। यदि आप लैग स्टम्प की सीध मे बल्ला रखकर गार्ड लेना

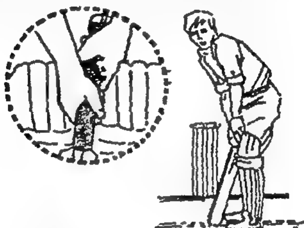






गार्ड तीन तरह से लिया जा सकता है—मिडिल स्टम्प की सीध में (सबसे बाए), मिडिल और लेग स्टम्प के बीच में (बीच मे) तथा लेग-स्टम्प की सीध मे (सबसे दाए)

चाहते हैं तो एल० बी० डब्ल्यू का खतरा तो जाता रहेगा पर केवल ऑफ की ओर ही शॉट मारने का चास मिल पायेगा, लग की ओर शॉट मारने में कठिनाई होगी। ऐसी स्थिति मे मिडिल और लैग स्टम्प की सीध से बल्ला रखकर खेलने मे सुविधा होती है। इस स्थिति में लैग और ऑफ दोनों ओर शाट मारने में आसानी होगी, साथ ही एल० बी० डब्ल्यू द्वारा आउट होने का खतरा भी कम हो जाता है। अत अधिकतर बल्लेबाज तीसरी स्थिति में ही गार्ड लेकर खेलना पसंद करते हैं।



ग्रिप—सही तकनीक से प्रभावकारी स्ट्रोक लगाने के लिए बल्ले को सही ढग से पकडने का तरीका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। बल्ले की पकड (ग्रिप) ऐसी होनी चाहिए कि सभी तरह के शॉट खेलने में आसानी हो। बल्ले के हैंडिल को मध्य मे इस प्रकार पकडना चाहिए कि दोनों हाथों की हथेलियो के किनारे एक दूसरे से सटे रहें। पकड मजबूत होनी चाहिए न कि बहुत कसी हुई। यदि पकड कसी हुई होगी तो बल्ले को घुमाने मे दिक्कत आ सकती है। हैंडिल को यदि मध्य के बजाय चौडे हिस्से के नजदीक से पकडा जाएगा तो ड्राइव शॉट लगाने मे कठिनाई हो सकती है। यदि बहुत ज्यादा ऊपर पकडा तो बल्ले से शॉट मारने में अधिक शक्ति लगानी पडेगी और थकावट जल्दी आ सकती है। अत हैंडिल को मध्य से पकडने की आदत डालें। पकडने मे दायें हाथ की हथेली नीचे तथा बायें हाथ की ऊपर होनी चाहिए। बाए हाथ की पकड मजबूत तथा दाए हाथ की पकड अपेक्षाकृत कुछ ढीली होनी

चाहिए। बाएं हाथ की बंधी मुट्ठी का भाग सामने की ओर अर्थात् गेंदबाज की ओर होना चाहिए तथा दाएं हाथ की मुट्ठी का अगला भाग पीछे स्टम्पों की ओर होना चाहिए। दूसरे शब्दों में बाएं हाथ की हथेली का भाग पीछे और दाएं हाथ की हथेली का भाग आगे की ओर हो। बल्ले को ऐसी सुविधा से पकड़ें कि किसी प्रकार कठिनाई न हो।

स्टांस— स्टांस का अर्थ है बल्ले को स्टम्पों के आगे सही स्थिति में रखकर खड़े होने का ढंग बल्ले को आसानी से किसी भी ओर फुर्ती से घुमाने के लिए सही ढंग से खड़ा होना भी बहुत आवश्यक है।

बल्लेबाज को अपने दोनों पैरों को क्रीज के समानान्तर रखना चाहिए और दोनों पैरों के मध्य की दूरी भी अधिक नहीं रखनी चाहिए। आराम



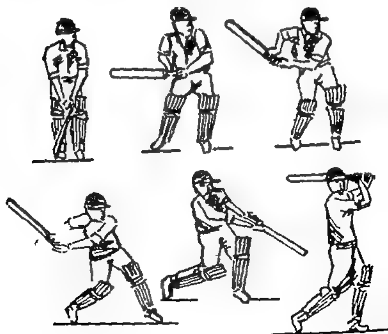
गार्ड लेकर सही स्टांस में खड़े होने का ढंग

से खड़े हो पाएं उतना ही फासला कम-ज्यादा रखें। जितना सम्भव हो, तनकर खड़ा होना चाहिए। घुटनों को बहुत थोड़ा मोड़कर खड़ा होना चाहिए। बायां कंधा सामने वाले विकेट जहां से गेंदबाज गेंद फेंकता है,

उस दिशा में होना चाहिए। बल्ले पर हाथों का बोझ नहीं डालना चाहिए।

कुछ बल्लेबाज बाएं कंधे की दिशा मिड ऑन की तरफ रखकर भी खड़े होते हैं। यह तो खड़े होने का तरीका क्लासिक है। सही माने में खड़े होने के यही तरीके हैं। पर यह जरूरी नहीं कि बिल्कुल इन्हीं ढंगों को ज्यों-का-त्यों अपनाया जाए। आप अपनी सुविधा और शारीरिक स्थिति के अनुकूल सहजता से खड़े होने का अन्य तरीका भी अपना सकते हैं।

परन्तु यदि सामने स्पिन गेंदबाज बॉलिंग कर रहा हो तो उपर्युक्त क्लासिकी ढंग से खड़े होने से ही लाभ हो सकता है।



बैटिंग में पद संचालन

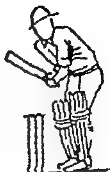
बाए कधे को मिड ऑन की तरफ करके खडे तभी होना चाहिए जब सामने तेज गेंदबाज बॉलिंग कर रहा हो। परन्तु फिर भी हर बल्लेबाज का खडा होने का ढग कुछ अपनी ही विशेषता लिए होता है। खडे होने के मामले मे स्पष्ट तौर पर यही कहा जा सकता है कि केवल विकेट के सामने खडे न हों ताकि एल० बी० डब्ल्यू होने का खतरा हो, बाकी थोडी बहुत स्थिति बदलकर सुविधानुसार किसी भी कोण में बाए (सामने पडने वाले) कधे को रखें।

किसी भी पद्धति से बल्लेबाज खडे होने का अभ्यास करें पर अपनी दोनों आखों को गेंदबाज के हाथ मे से छूटती गेंद पर केन्द्रित रखना चाहिए। ताकि गेंद के फेंकने की स्टाइल और आती हुई गेंद की सही दिशा का ज्ञान हो सके और बल्लेबाज उसके अनुसार शॉट मारने का तुरन्त निर्णय ले सके। पहले से निर्णय लेना कि मैं अबकी गेंद को हुक करूगा या फलां कट लगाऊगा स्यकर भूल होगी। क्योंकि बल्लेबाज तो अपने आपको पहले से निर्णय किए शॉट को मारने के लिए तैयार कर लेगा और गेंद कही ऐसी फेंकी गई कि सोचे हुए शॉट की पोजीशन ही नहीं बनती तो ऐसे मे बल्लेबाज गडबडाकर या तो कैच दे बैठेगा या फिर अपने स्टम्प उखडवा लेगा।

तो अब आपने गार्ड लेने, बल्ले को पकडने और स्टांस यानी स्टम्पों के पास खडे होने की मुद्रा के बारे मे जान लिया। अब हम आपको सबसे पहले बल्ले से डिफेंस अर्थात् सुरक्षात्मक ढग से खेलना ही बताएगे। एक सफल बल्लेबाज को सुरक्षात्मक ढग से खेलना ही बेहतर है। आक्रमण का रुख भी अवश्य अपनाना चाहिए पर तभी जब आप अपने स्टम्पों की सुरक्षा करते हुए आक्रमणात्मक खेल का प्रदर्शन करें। अत' आक्रमणात्मक ढग से खेलते हुए या अपनी सुरक्षा का पूरा पूरा ध्यान रखते हुए खेलें।

स्ट्रोक्स—गेंद को रक्षात्मक ढग से खेलने के दो तरीके हैं—एक फारवर्ड डिफेंस स्ट्रोक और दूसरा बैकवर्ड डिफेंस स्ट्रोक। फारवर्ड डिफेंस मे गेंद को आगे बढकर रक्षात्मक ढंग से खेला जाता है और बैकवर्ड डिफेंस में थोडा पीछे हटकर गेंद को खेला जाता है। स्ट्रोक का अर्थ है गेंद को धीरे से मारना या थपथपाना। आउट होने से बचने के लिए ही स्ट्रोक प्ले का सहारा लिया जाता है या ढग से सैट होने तक स्ट्रोक प्ले लगाए जाते हैं।













फारवर्ड डिफेंसिव स्ट्रोक

फारवर्ड डिफेंस स्ट्रोक—इस सुरक्षात्मक स्ट्रोक को खेलने के लिए आती हुई गेंद के टप्पा खाने के स्थान तक आगे बढ़कर गेंद








फारवड अटकिंग स्ट्रोक

को वहीं रोक देता है, जिससे गेंद का ब्रेक वहीं टूट जाता है।

फारवर्ड डिफेंस स्ट्रोक अधिकतर उस गुडलैंग्थ गेंद पर लगाया जाता है जो स्टम्प की सीध में आए। वैसे गुड लैंग्थ गेंद की वह स्थिति होती है कि बल्लेबाज को यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि इस गेंद को आगे बढ़कर खेला जाए या पीछे हटकर। क्योंकि यह पता नहीं होता कि गेंद किस ओर ब्रेक ले।

फारवर्ड डिफेंस स्ट्रोक खेलने के लिए बल्लेबाज को ध्यान रखना चाहिये कि जैसे ही गेंदबाज गेंद फेंकने के लिये तैयार हो—तो उसके हाथ से गेंद छुटते ही बल्लेबाज का बल्ला बैक लिफ्ट स्थिति में पहुंच जाए (बैक लिफ्ट का अर्थ है—जब बल्लेबाज गेंद पर प्रहार करने के लिए बल्ले को पीछे ले जाते हुए उठाता है और फिर नीचे ले जाते हुए गेंद पर स्ट्रोक जमाता है तो बल्ले को पीछे ले जाते हुए उठाने की स्थिति को बैकलिफ्ट कहते हैं)। गेंद टप्पा खाकर जैसे ही उछले बल्लेबाज को फुर्ती से अपना बाया पैर आगे बढ़ाकर बल्ले को नीचे की ओर से आगे लाकर गेंद पर अड़ा देना चाहिए। इस समय बल्लेबाज के शरीर का भार अगले पैर पर ही हो। ऐसे में पिछला पैर पंजे के बल होगा। ध्यान रखें कि पिछला पैर क्रीज पर रहे। उससे आगे कभी न आए वरना स्टम्प आउट का खतरा हो सकता है। गेंद पर बल्ला अड़ाते समय बल्ले में हत्थे का झुकाव आगे की ओर ज्यादा हो। ऐसी स्थिति में उछलती हुई गेंद नीचे दबेगी और पास खड़े क्षेत्र रक्षकों को कैच लेने का अवसर नहीं मिल पायेगा।

फारवर्ड डिफेंस स्ट्रोक दरअसल बल्लेबाजी का बुनियादी स्ट्रोक है अत हर बल्लेबाज को इस स्ट्रोक का अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए। अधिकतर बल्लेबाजी के स्ट्रोक्स इसी स्ट्रोक पर आधारित हैं। ध्यान रखें कि पिच पर गेंद काफी स्पिन ले रही हो तो बल्ले पर गेंद आने की स्थिति में बल्ले को थोड़ा पीछे खींच लें और स्वयं भी थोड़ा पीछे हो जाए। ऐसी स्थिति में गेंद बल्ले से टकराकर वहीं गिर जाती है।

अब आइए बैकवर्ड डिफेंस स्ट्रोक के बारे में बताएं।

बैकवर्ड डिफेंस स्ट्रोक—बैकवर्ड डिफेंस स्ट्रोक उस गेंद पर लगाया



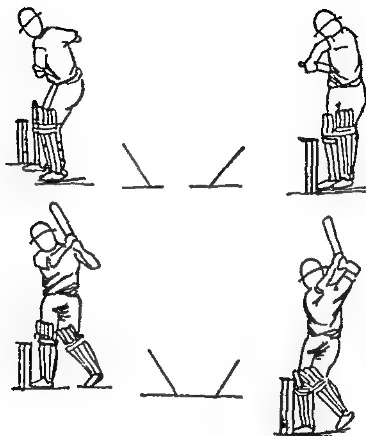






बेकफुट डिफेंसिव स्ट्रोक

जाता है जो गुडलेंथ से थोड़ी-सी शॉर्ट आती है। यह स्ट्रोक थोड़ा पीछे हटकर लगाया जाता है। इस स्ट्रोक में बल्लेबाज को गेंद देखने का ज्यादा



बैकफुट कटिंग स्ट्रोक

समय मिल जाता है और वह स्ट्रोक को अच्छी तरह लगाने का मौका पा लेता है। इसमें पीछे हटते हुए पिछला पैर (दायां) स्टम्प और क्रीज के लगभग बीच में आ जाता है। पीछे हटकर स्ट्रोक खेलते समय इस बात का ध्यान रखें कि कहीं हिट विकेट की स्थिति न आ जाए (हिट का भय है—यदि पीछे हटते हुए बल्लेबाज से स्टम्प गिर जाते हैं तो

वह हिट विकेट घोषित करते हुए आउट मान लिया जाता है)। बैकवर्ड स्ट्रोक खेलने के लिए बल्लेबाज यदि पंजों के स्ट्रोक लगाने का तरीका अपनायें तो वह सबसे अच्छा तरीका माना जाता है।

इस प्रकार सर्वप्रथम इन्हीं दोनों बुनियादी स्ट्रोक्स में माहिर होने का अभ्यास करना चाहिए। इन स्ट्रोकों को सीखने के बाद नम्बर आता है आक्रामक शॉटों का जो रन बनाने के लिए लगाए जाते हैं। तो अब उन्हीं शॉटों को सही ढंग से लगाने के तरीके आपको बतायेंगे।

ड्राइव शाट

ड्राइव शॉट आक्रामक बल्लेबाज का प्रमुख शॉट कहा जाता है। ड्राइव का अर्थ है—आगे की ओर धकेलना। अर्थात् गेंद को आगे की ओर शॉट मारकर खेलना। ड्राइव शॉट आगे बढ़कर तथा पीछे हटकर दोनों तरीकों से खेला जाता है।

ड्राइव शॉट मारने के चार तरीके हैं जिनमें शॉट मारने का बुनियादी ढंग तो सब में एक सा है पर शॉट किस ओर खेला जाता है और उन्हें खेलने के लिए किस प्रकार पैर आगे पीछे बढ़ाकर किस तरह बल्ला घुमाकर शॉट मारा जाता है, इसमें भिन्नता है। ड्राइव शॉट के प्रकार ये हैं—(1) स्ट्रेट ड्राइव (2) आन ड्राइव (3) ऑफ ड्राइव तथा (4) कवर ड्राइव। तो आइए बारी बारी से इन शॉटों को मारने के तरीकों पर नजर डालें। इन सभी शॉटों में बल्लेबाज गेंद को खुले हाथों से शक्ति लगाकर प्रहार करता है ताकि गेंद बाउण्ड्री या अधिक से अधिक दूर पहुंचाकर ज्यादा से ज्यादा रन लेने की कोशिश कर सके। ड्राइव शॉटों को खेलते समय बल्लेबाज का यह ध्यान रखना चाहिए कि उसका बायां कंधा सामने गेंदबाज की ओर होना चाहिए। इस स्थिति में खड़े होने से बल्ला गेंद पर सही ढंग से लगता है। यदि गेंदबाज की ओर सीना करके शॉट लगाया जाएगा तो शॉट गलत ढंग से लगेगा।

स्ट्रेट ड्राइव—स्ट्रेट ड्राइव ऐसी गेंद पर मारा जाता है जो मिडिल स्टम्प की ओर आ रही हो और इतने पास में आकर पिच करती हो कि बायां पैर आगे बढ़ाकर उसे आसानी से खेला जा सके। गेंद के टप्पा खाते ही उसे बल्ला पर लाने की कोशिश न करके पीछे ले जाकर फुर्ती से गेंद पर लाएं और दाएं हाथ से पूरी शक्ति लगाकर गेंद को गेंदबाज






आन ड्राइव तथा आन ड्राइव शाट

न्या सामने लगे स्टम्पो की ओर धकेल दें। हाफ वाली पर हिट करने का एक फायदा यह होता है कि गेंद लगभग जमीन से लगी हुई जाती है जिससे कैच आउट होने का खतरा नहीं होता।



स्ट्रेट ड्राइव   आन ड्राइव शॉट

इस स्ट्रोक में बल्लेबाज की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि उसका बायां कंधा आगे बढ़ बाए पैर के घुटने की सीध में हो। बल्ले को बाए बाजू के सहारे गेंद पर लाकर दाए बाजू की शक्ति लगाकर उसे सामने की ओर हिट करें। स्ट्रेट ड्राइव शॉट में गेंद से लगने के बाद खाली बल्ला विकेट की सीध में ही जाना चाहिए। स्ट्रेट ड्राइव शॉट में बैक लिफ्ट ज्यादा रहता है।

ऑफ ड्राइव—गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद यदि सीधी आकर पिच करती है तब तो स्ट्रेट ड्राइव शॉट का इस्तेमाल किया जाता है। और यदि गेंद ऑफ स्टम्प के बाहर पिच करती है तो उस पर ऑफ ड्राइव शाट का इस्तेमाल किया जाता है।

ऑफ ड्राइव शॉट मारने के लिए भी बक ' ट ज्याद। र जाता

है। इसमें बल्लेबाज बल्ला बैक लिफ्ट करते हुए फाइन लैग की ओर उठाता है और आगे की ओर लाते समय उसे थोड़ा ऑफ की ओर तिरछा कर लेता है। सिर और कंधा ऑफ की ओर झुका होता है। इस प्रकार पीठ का भाग गेंदबाज की ओर हो जाता है।

आप भी जब ऑफ ड्राइव शॉट का अभ्यास करें तो इन सब स्थितियों को मद्दे नजर अवश्य रखें। ऑफ ड्राइव शॉट लगाते समय क्षेत्र रक्षकों की स्थिति का ध्यान अवश्य रखें। केवल ऑफ ड्राइव मारना सीखना ही पर्याप्त नहीं बल्कि क्षेत्र रक्षकों के बीच से गेंद निकालने की कला भी आनी चाहिए। जहां गेंद निकलने की अधिक जगह हो उसी तरफ से गेंद निकालनी चाहिए तभी इस शॉट की उपयोगिता है। ऑफ की ओर लगने वाले सभी ड्राइव शॉट काफी खूबसूरत लगते हैं। पर जरा सी चूक से आसान कैच भी दे जाते हैं। अतः इस शॉट का अभ्यास करने के लिए ऑफ दिशा के सभी पाइंटों पर फील्डरों को खड़ा कर बारी-बारी से इनके बीच से गेंद निकालने का अभ्यास करना चाहिए।

आन ड्राइव—जो गेंद बीच के या लेग स्टम्प की सीध में आकर टप्पा खाए और लेग की ओर हो जा रही हो या जाने वाली हो तो ऐसी गेंद पर आन ड्राइव शॉट मारा जाता है। इस शॉट के लिए अक्सर फिर गेंद बहुतर होती है परन्तु पैरों पर आती इस गेंद पर सीधी नजर रखने की आवश्यकता होती है। जरा सी चूक में ही यह गेंद खतरनाक साबित हो सकती है।

इस शॉट को लगाते समय आपका वजन तथा शरीर का झुकाव (सिर कंधा और कोहनी आदि) मिड विकेट तथा मिड ऑन की ओर होना चाहिए। क्योंकि गेंद को भी इसी दिशा में हिट करना होता है ताकि शॉट मारने में आसानी हो। ऑन ड्राइव शॉट में दाए हाथ का सहारा ज्यादा लेना पड़ता है क्योंकि गेंद को लेग साइड की ओर घुमाने के लिए बल्ले को दायें हाथ के सहारे ही ज्यादा शक्ति प्राप्त होती है। बाकी सभी स्थितियां ऑफ ड्राइव के समान ही होती हैं केवल दिशा का फर्क है।

कवर ड्राइव—जो गेंद ऑफ स्टम्प से परे या उसकी सीध में टप्पा खाकर या बिना टप्पा खाए आती है तो उस में गेंद पर कवर ड्राइव शॉट आजमाना चाहिए। यह भी ऑफ ड्राइव की तरह का ही शॉट है पर इसमें गेंद ऑफ के काफी नजदीक होती है अतः बल्लेबाज को अपना सिर तथा कंधा अधिकतर ऑफ की ओर ही झुकाए रखना चाहिए।

ताकि शॉट भरपूर मारा जाए। इस शॉट में कभी-कभी शॉट लगाते समय बल्लेबाज का पिछला पैर घुटने के बल पर टिक जाता है। कवर ड्राइव एक जोखिम भरा शॉट है। क्योंकि इस शॉट की खासियत यह है कि इससे शॉट की दिशा गेंद की दिशा में नहीं होती अतः शॉट मारने में जरा भी बल्ले का निशाना चूका कि कैच गया।

इसमें बल्लेबाज का बायां पैर पंजे के बल खड़ा होता है ताकि शॉट शक्ति से लग सके।

बैक फुट ड्राइव—ड्राइव शॉट जितनी तरह के पैर आगे बढ़ाकर लगाये जा सकते हैं, उतने ही पैर पीछे हटाकर भी लगाए जा सकते हैं। पैर पीछे हटाकर ड्राइव शॉट तभी खेले जाते हैं जब गेंद बल्लेबाज से दूर टप्पा खाए अर्थात् गेंद 'शॉट ऑफ लैंग्थ' हो। इसमें गेंद ऑफ स्टम्प के बाहर की ओर पिच करती है। कभी-कभी गेंद स्टम्प की सीध में भी फेंकी जाती है। बैक फुट ड्राइव लगाना जोखिम भरा काम है। पर यदि यह शॉट अच्छी तरह सीख लिया जाए तो इसमें रन बनाने की काफी गुंजाइश होती है।

बैक फुट से ऑन ड्राइव में दायें पैर को पीछे हटाते हुए बल्ला बैक लिफ्ट करते समय ऑफ और मिडिल स्टम्प की ओर घूम जाना चाहिए। ऐसे में बल्ले पर बायें हाथ से नियन्त्रण रखा जाता है। इसमें बैक लिफ्ट काफी ज्यादा रखी जाती है।

जैसे ही गेंद शॉट ऑफ जाए, फुर्ती से पहले अपना दायां पैर पीछे ले जाए। इस बीच गेंद पर नजर रखते हुए उसको ठीक से समझने का भी काफी मौका मिल जाता है। इस स्थिति में आपके सारे शरीर का भार दाए पैर पर आ जाता है और बाया पैर शरीर को शॉट की सही स्थिति में संतुलन बनाये रखने में सहायता देता है। दाए पैर का पंजा प्वाइंट की ओर हो जाता है। बल्ले को बैक लिफ्ट करते समय जब बल्ला गेंद पर मारने के लिए नीचे की ओर लाते हैं तो बाईं कोहनी मुड़ी हुई स्थिति में होती है। दायीं कोहनी शरीर से सटकर तनी हुई स्थिति में होनी चाहिए। ऐसे में जब बल्ला गेंद को हिट करने की स्थिति में आएगा तो दाए हाथ और कंधे का स्ट्रोक मारने में भरपूर सहयोग मिलेगा। इस तरह यह बैक फुट स्टाइल में ऑफ ड्राइव शॉट कहलाएगा। बैक फुट से ऑफ की ओर लगाए गए शॉट काफी सुन्दर लगते हैं। साथ ही रन भी इनके द्वारा अच्छे खासे बनाए जा सकते हैं।

बैक फुट स्टाइल से कवर ड्राइव लगाने के लिए अपने पिछले पैर को

गेंद की दिशा में पीछे हटा लें। इसमें तनिक भी देर न करें वरना कवर ड्राइव शॉट ठीक नहीं लग पाएगा। इस स्ट्रोक में सिर तथा बाएं कंधे का झुकाव ऑफ साइड की ओर रखना चाहिए। स्ववायर ड्राइव कवर की तरह ही लगाया जाता है। इसमें केवल गेंद कवर के बजाय प्वाइंट की ओर जाती है।

बैक फुट स्टाइल में स्टेट ड्राइव शॉट स्टम्प की ओर आने वाली शार्ट पिच गेंद पर लगाया जाता है।

इस प्रकार बैक फुट स्टाइल में सभी तरह ड्राइव शॉट लगाए जा सकते हैं। परन्तु ये शॉटस फ्रंट फुट स्टाइल के ड्राइव शॉटस से थोड़े कठिन होते हैं और इनमें एकाग्रता और सावधानी की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता पड़ती है। अतः इनका अभ्यास बहुत ही लगन से करना चाहिए।

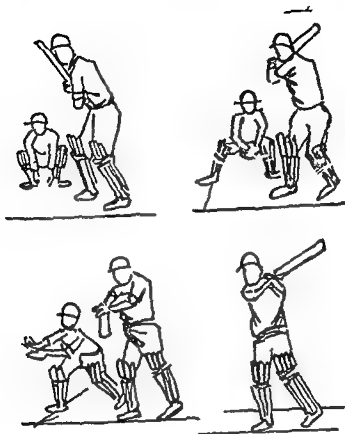
अब आप बैक फुट स्टाइल में लगने वाले ड्राइव शॉटस के बारे में अच्छी तरह समझ गए होंगे। फ्रन्ट फुट स्टाइल पांव आगे बढ़ाकर ड्राइव शॉटस लगाये जाते हैं। शेष तरीका समान ही है।

कट शाट्स

बल्लेबाजी में 'कट शॉट्स' का अपना ही महत्व है। इन शॉटों में बड़ी खूबसूरती है। कट के लिए जो गेंद ऑफ स्टम्प से परे आती है, उसे बल्लेबाज आड़े बल्ले से हल्का सा छुआ भर देता है कि गेंद दिशा बदलकर तेजी से एक ओर निकल जाती है।

'कट' करने का अर्थ है तराशना। अर्थात् इसमें गेंद की गति को रोककर विपरीत दिशा में नहीं पहुंचाया जाता बल्कि तेजी से आती हुई गेंद के किनारे बल्ले का किनारा छुआ देने से वह अपनी गति से जाती हुई थोड़ी दिशा बदलकर निकल जाती है। कट शॉट मारना कोई आसान काम नहीं है। जरा सी चूक से सीधा आउट कैच ही बनता है।

अतः कट शॉट उन्हीं गेंदों पर लगाया जाना चाहिए जो पिच करने के बाद तेजी से आएं। तेज गेंद पर ही कट लगाने चाहिए धीमी गेंद पर नहीं। धीमी गेंद पर कट लगाने के लिए आपको बल्ला तेज [illegible] पड़ेगा और बल्ले के घूमने से कट शॉट में [illegible] ने की [illegible] रहती है।

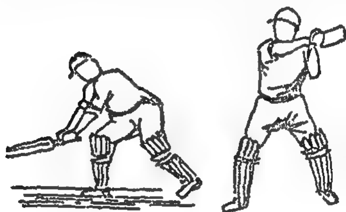


[illegible] की एक बानगी

तेज विकिटों पर कट शॉट्स (स्क्वेअर कट तथा लेट कट) बहुत अच्छी तरह खेले जाते हैं। इसमें बल्ले को कलाई का झटका देकर गेंद पर आड़ छुआया जाता है। ज़रा सी ताकत लगाने से कट शॉट बिगड़ जाता है।

स्क्वेअर कट—स्क्वेअर कट शॉट साधारणतया बैक फुट पर खेला जाता है। यह शॉट उस समय लगाया जाता है जब गेंद ऑफ स्टम्प से परे आ रही हो। इसमें एक बात ध्यान देने की यह है कि स्क्वेअर कट

शॉट तभी लगाया जाए जब टप्पा खाने के बाद गेंद की उठान बल्लेबाज अच्छी तरह देख पा रहा हो। जब गेंद बल्लेबाज के काफी निकट आ जाए तभी स्क्वेयर कट का इस्तेमाल करें। कुछ माहिर बल्लेबाज गेंद के निकलते ही आगे बढ़कर कवर पाइंट के पीछे की गेंद को खूबसूरती से कट करते हैं। इसमें बल्ले को आड़ा करके गेंद के ऊपर किनारे पर कट करते हैं। यदि इसमें जरा भी चूक हुई और बल्ला ऊपरी किनारे के बजाय जरा भी इधर-उधर लगा कि सीधा कैच उछलेगा। अतः इस शॉट के लिए गेंद को अच्छी तरह समझना अति आवश्यक है।



स्क्वेयर कट

गेंद के ऊपरी किनारे पर कट लगाने के लिए बल्ले को [illegible] पाइंट अधिक ऊंचा उठाकर शॉट लगाना चाहिए। जिस दिशा में गेंद जा रही हो उसी दिशा की ओर आपका पिछला पैर अर्थात दायां पैर रखें। पैर इतना दूर अवश्य हो कि बल्ले को घुमाने में जरा भी असुविधा न हो। आपका बायां पैर गली या कवर की दिशा में होना चाहिए और शरीर का वजन उसी पैर पर रहना चाहिए। जो गेंदें ओवर पिच होती हैं उन पर आगे बढ़कर [illegible] गेंदें [illegible] हैं, [illegible] पीछे हटकर स्क्वेयर कट लगाना चाहिए।

लेट कट—लेट कट शॉट भी स्क्वेयर कट की तरह ही एक बेहतरीन [illegible] है। इसमें इसे काफी ही [illegible] लगाया जाए, [illegible]

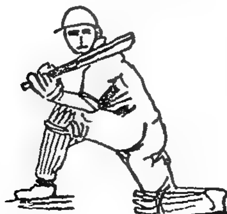
विश्वनाथ बड़ी खूबसूरती से लगाते हैं। इस शॉट का प्रयोग बहुत धुरंधर बल्लेबाज ही करते हैं। यह शॉट भी गेंद की गति पर निर्भर होता है। तेज गेंद या मध्यम तेज गेंदों पर भी लगाया जाता है। इसे बैक फुट पर खेलते हैं। धीमी गेंदों पर भी यह लगाया जा सकता है पर इसमें काफी सावधानी बरतनी पड़ती है।

लेट कट का अर्थ है—देर से लगाया गया कट। अर्थात् इस शॉट को तब लगाया जाता है जब गेंद बल्लेबाज के पास से गुजर जाए। शॉट लगाने के लिए पिछला पैर ऑफ स्टम्प की ओर रखा जाता है। इसमें बल्ले को केवल कलाई के झटके से घुमाया जाता है।

लेट कट शॉट उस गेंद पर बेहतरीन लगता है जो गुड लैग्थ से पीछे टप्पा खाती हुई आती है और ऑफ स्टम्प से बहुत दूर हो तथा विकेटों को लगभग पार करने की स्थिति में आ जाए।

लेट कट शॉट मारने के लिए भी काफी अभ्यास और अनुभव की जरूरत है।

स्वीप शाट—स्वीप का अर्थ है 'झाड़ू लगाना'। यह शॉट कुछ इसी अन्दाज से लगाया जाता है जैसे झाड़ू लगाते हैं तभी इसका नाम 'स्वीप शॉट' पड़ा।



स्वीप शॉट की अवस्था

स्वीप शॉट उस गेंद पर लगाया जाता है जो कुछ ओवर पिच हो तथा लेग स्टम्प से बाहर टप्पा खाये। इस शॉट के लिए गेंद हाफ वाली हो तो क्रॉस करते हुए भी शॉट लगाया जाता है।

इस शॉट में जैसे ही बल्ला गेंद पर आए, उसे कलाई के सहयोग से, घुमा दिया जाना चाहिए। आपका दायां घुटना जमीन पर टिक जाता है और कलाई भरपूर घूमती है, अतः शरीर का सन्तुलन बनाये रखना पड़ता है। आगे वाले पैर को गेंद की टप्पे वाली दिशा की ओर बढ़ाकर शॉट मारना चाहिए। ऐसा करने से एल० बी० डब्ल्यू की आशंका कम रहती है क्योंकि पैर काफी आगे बढ़ाने से यदि गेंद बल्ले पर न आई तो पैर पर आ जाती है।

इस शॉट को मारते समय एक बात ध्यान में रखें कि गेंद को फाइन लैग की ओर न मारकर स्क्वेअर लेग की ओर मारें ताकि सुरक्षित लग सके। ज्यों ही गेंद टप्पा खाकर उछले, आड़े बल्ले से भरपूर शॉट मार दें—इस प्रकार कि गेंद बल्ले से लग कर ऊपर न उठे वरना कैच जाने की आशंका रहती है।

गेंद जब ऐसी स्थिति में हो जिसे आप फुल टॉस या हाफ वाली बना सकते हों, तभी स्वीप शॉट का इस्तेमाल करें। 'लैग ब्रेक' तथा 'आउट स्विंग' गेंदो पर स्वीप शॉट न लगाए तो ही अच्छा है।

हुक शॉट—यह शॉट उन्हीं गेंदों पर लगाया जाता है जो लगभग सिर की ऊंचाई तक आती हैं। यह शॉट जितना रोमांच पैदा करता है उतना ही खतरनाक भी होता है। यह भी तेज आती हुई गेंदो पर भली प्रकार से लगाया जा सकता है।

हुक शॉट शराब लैंग्थ की तथा विकेट की सीध में ऊंची आती गेंदो पर विशेषतया लगाया जाता है।

हुक शॉट के लिए अपना पिछला पैर ऑफ स्टम्प की तरफ ले आए तथा शरीर को उसी ओर झुका भी दें। ऐसा करने से यदि गेंद आपके बल्ले पर न आ पाए तो भी आप चोट लगने के खतरे से बच सकें। गेंद पर शॉट मारने के लिए बैक लिफ्ट अधिक रखना चाहिए। और बल्ले का घुमाव हॉरिजेंटल क्रॉस रहता है। ऑफ स्टम्प के बाहर पिच करने वाली तथा सिर से बहुत ऊंची गेंदों पर हुक शॉट नहीं लगाना चाहिए। क्योंकि ऐसी गेंद बल्ले पर पूरी तरह नहीं आने पातीं और विकेटकीपर को कैच मिल जाता है।

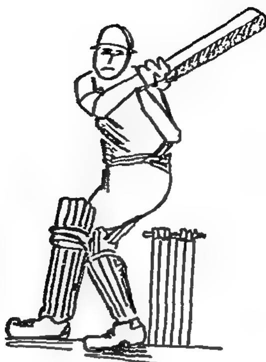





हुक करना

पुल शॉट—हुक शॉट की तरह ही लगाया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि हुक शॉट के लिए गेंद सिर और कन्धों की ऊंचाई तक आती है और पुल शॉट के लिए गेंद कमर तक की ऊंचाई तक आती है।

पुल शॉट शॉट पिच वाली गेंदों पर बखूबी लगाया जाता है। इसमें गेंद ऑफ स्टम्प से थोड़ी बाहर तथा लेग साइड तक के बीच पिच करती है। इस शॉट के लिए पिछला पैर ऑफ स्टम्प की ओर ले जाएं। बल्ले को गली की ओर उठाए और आगे पैर गेंद की दिशा मे बढ़ाकर रखें। बल्ले को गेंद पर लाते समय दोनों बाहें तकरीबन सीधी हो जाती हैं। इसमें जैसे ही शॉट मारने के लिए बल्ला गेंद पर आते हैं और शॉट



हुक शॉट की फिनिशिंग

पूरा हो जाता है तो शरीर का भार दायें पैर से हटकर बाएं पैर पर आ जाता है।

बेहतर हो पहले आप पुल शॉट का अभ्यास करें बाद में ही हुक शॉट का अभ्यास करें। इससे आपको हुक शॉट लगाने और समझने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी।

लेग ग्लांस—लेग ग्लांस शॉट बहुत ही दक्ष बल्लेबाज लगाते हैं। कहा जाता है कि इस शॉट की खोज रणजी ने की थी और वह बड़ी कुशलता से इस शॉट को लगाते थे।

लेग ग्लांस शॉट तेज पिच पर तथा तेज गेंदों पर भली भांति लगाया जाता है। इसमें गेंद को बल्ले के प्रहार से लेग की ओर मारा जाता है।



पुल शॉट



लैग ग्लांस

यह एक प्रकार से डिफेंस स्ट्रोक की तरह का ही शॉट है पर जैसे ही गेंद पास आती है, बल्ले को टेढ़ा कर उसे लग की ओर घुमा देते हैं तो यह लग ग्लांस शॉट बन जाता है।

जब गेंद लैग स्टम्प से बाहर पिच करती है या स्टम्पो की सीध मे पिच करती है और गेंद ब्रेक होकर लग की तरफ मुड़ती है, तब लैग ग्लांस शॉट लगाया जाता है।

लैग ग्लांस शॉट बैक फुट और फ्रंट फुट दोनो स्टाइल मे लगाया जाता है। फ्रंट फुट स्टाइल मे ग्लांस के लिए आगे वाले पैर को गेंद की दिशा की सीध मे ही बढ़ाए और बल्ले को गेंद पर लगाते ही उसका मुह स्क्वेयर लैग और विकेटकीपर के स्थान के बीच की दिशा म घुमा दें। इस तरह बल्ला लगाने से गेंद दबना चाहिए, उछलना नही चाहिए।

शॉट पिच गेंद पर पिछला पैर ऑफ स्टम्प की ओर ले जाना चाहिए। और घूमते हुए बल्ले को गेंद के पास लाकर बल्ला स्क्वेअर लैग की ओर घुमा देना चाहिए।

बैक फुट ग्लास लगाने के लिए अगला पैर लैग स्टम्प से थोड़ा बाहर रखते हैं और बल्ले को आगे बढ़े पैर की पिंडली के पीछे रखते हैं और गेंद के नजदीक आते ही पिछले पंजे पर घूमते हुए बल्ले का मुंह गेंद पर लाते ही उसे लैग की ओर घुमा देते हैं। इस शॉट के लिए बड़े अभ्यास की जरूरत होती है।

फुल टॉस—उस गेंद पर लगाया जाता है जो लैग साइड की ओर घुटनों से लेकर कमर तक की ऊंचाई पर आती है। इसे क्रॉस बट स्टाइल से खेला जाता है।

शाट लगाने के लिए बाएं पैर को आगे बढ़ाएं और शरीर का वजन उस पर डाल दें, पिछले पैर से संतुलन बनाए रखें। बल्ले को जमीन के हॉरिजंटल रखें। गेंद पर शॉट लगाते समय दायीं कलाई को घुमाते हुए इस तरह बल्ले को गेंद पर लाएं कि कैच न उछलने पाए।

नीची आती गेंद को फुल टॉस करने के लिए ऑन ड्राइव की तरह सीधे बल्ले से ही खेलना चाहिए।

इस प्रकार ये बल्लेबाजी के कुछ प्रमुख शॉटस, कट्स आदि हैं जिनका नियमित अभ्यास करना चाहिए। सभी शॉट्स खेलने के लिए चुस्ती फुर्ती से काम लें तथा दृष्टि को गेंद पर, खास तौर से तेज आती गेंदों पर जमाने का अच्छा तरह अभ्यास करें। क्योंकि गेंद पर जब तक आप दृष्टि नहीं जमा पाएंगे, आप किसी भी शॉट को विश्वासपूर्वक खेलने में असमर्थ रहेंगे।

रन लेना—प्रत्येक शॉट को मारने के बाद विकेटों के बीच रन लेने का अभ्यास कीजिए तभी शॉट लगाने का पूरा लाभ आपको मिल पाएगा। शॉट की समाप्ति पर शरीर ढीला छोड़ना उचित नहीं। शॉट मारते ही गेंद को अच्छी तरह देखकर कि वह कितनी दूर गई फुर्ती से रन लेने के लिए दौड़ जाएं। इससे शॉट सीखने के साथ-साथ रन लेने के लिए दौड़ने का अभ्यास भी साथ साथ होता रहेगा।

रन लेने में एक बात का विशेष ध्यान रखें ताकि रन आउट होने की नौबत न आने पाए। वह यह कि यदि आपने शॉट अपने सामने विकेटों की ओर जहां गेंदबाज होता है, मारा है तब तो रन लेने का



आउट बल्ला क्रीज पर तो है, पर टिका हुआ नहीं है।

निर्णय करके आपको दौड़ जाना चाहिए, आपके संकेत पर ही आपका दूसरा साथी भी आपकी जगह लेने दौड़ पड़ेगा क्योंकि वह समझ जाएगा कि गेंद की दूरी के मुताबिक ही सोच समझ कर आपने दौड़ लगाई है।

इसी प्रकार यदि आपने कोई शॉट ऐसा मारा है कि गेंद विकेटकीपर के पीछे की ओर गई है तो गेंदबाज की ओर खड़ा आपका बल्लेबाज साथी गेंद की दूरी के मुताबिक निर्णय लेकर दौड़ना शुरू कर देगा। उसे देखकर आप भी उसका स्थान लेने दौड़ जाएंगे।

इसी प्रकार यदि गेंद दायें-बायें ओर जाती है तो दोनों बल्लेबाजों को एक दूसरे के संकेतों के मुताबिक रन लेने के लिए आपस में तालमेल बैठाना पड़ेगा।

इसी तालमेल के लिए जरूरी है कि बल्लेबाजी के शॉटस कटस आदि का अभ्यास करते करते रन लेने का भी उसी तेजी फुर्ती से अभ्यास करें ताकि आप अधिक से अधिक स्टेमिना बना सकें और थकावट आपके पास फटकने भी न पाए।

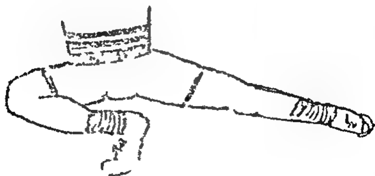
[illegible] के लिए कुछ व्यायाम



हाथों को गोल गोल घुमाना



कमर से पीछे की ओर झुकना



[illegible]

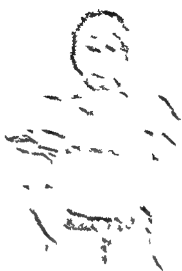
हाथों के व्यायाम के लिए पी० टी० करना सबसे अच्छा व्यायाम है। हाथों को बारी-बारी से गोल-गोल घुमाना चाहिए। पहले हाथ सामने फैला लें फिर नीचे लाते हुए पीछे की ओर ले जाते हुए ऊपर लाए और कंधे से घुमाते हुए सिर की ऊंचाई तक लाते हुए फिर सामने की ओर ले आए। फिर यही व्यायाम दूसरे हाथ से करें। गेंदबाजी में भी गेंद वाले हाथ को सामने से नीचे और पीछे ले जाते हुए ऊपर लाकर फिर सामने लाते हुए गेंद को फेंका जाता है। अतः हाथ घुमाने वाला व्यायाम बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा।

इसी प्रकार हाथों को पीछे ले जाकर (हिप के पास) दोनों हाथों को एक दूसरे से पकड़ लें। फिर बंधे हुए हाथों को पीठ की ओर घुमाते हुए कंधों तक लाने की कोशिश करें। इस व्यायाम से कंधे पुष्ट होते हैं।

इसी प्रकार की तेज गति की कोई भी एक्सरसाइज करते रहें तो क्रिकेट में गेंदबाजी के लिए आप हमेशा तत्पर बने रहेंगे। चाहे लगातार बॉलिंग करने का अवसर मिले, आप थकावट महसूस नहीं करेंगे। गेंद बाजी की प्रैक्टिस शुरू करने से पहले हाथ पैरों की मांसपेशियों को गर-माने और लोच लाने के लिए थोड़ा व्यायाम (जम्पिंग, साइकलिंग प्रैक्टिस, पी० टी० आदि) अवश्य कर लेना चाहिए। इससे हाथ पैर खुल जाते हैं और हाथों को मूव करने में कोई दिक्कत नहीं आती।

गेंदबाज के लिए आवश्यक निर्देश—एक सफल गेंदबाज बनने के लिए आपमें कुछ खूबियां अवश्य होनी चाहिए या फिर उन खूबियों के मुताबिक अपने आप को ढाल लेना चाहिए। तभी आप गेंदबाजी के क्षेत्र में सफल हो पाएंगे।

गेंदबाज में पास सबसे बड़ी खूबी यह होनी चाहिए कि वह कभी भी हिम्मत न हारे। क्योंकि गेंदबाजी को कई बार असफलता का मुंह देखना पड़ता है। सबसे ज्यादा आघात वाली बात होती है जब कोई गेंदबाज सही दिशा में, सही स्थान पर गेंद को पिच कराता है और फिर भी बल्लेबाज उस गेंद पर चौका या छक्का मार देता है। यहां गेंदबाज के हतोत्साह होने का भय रहता है वह सोचता है कि ठीक गेंद फेंकने पर भी यह कैसे हो गया। परन्तु यह भी सही है कि यदि कोई गेंदबाज सही ढंग से गेंद फेंक रहा है तो सामने वाला बल्लेबाज भी तो माहिर [illegible] है जो सही ढंग से उस गेंद को फेंक रहा हो। तो ऐसे









सामने से बॉलिंग एक्शन

और सर्वेत काम करता है। गेंद की पकड़ ऐसी होनी चाहिए कि गेंद को घुमाव देने मे उंगलियों की हरकत में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। अत गेंद पर उंगलियों की पकड़ पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए।

आरम्भ में दौड़ने की एक जैसी लम्बाई रखें और अभ्यास करें। दौड़ने की लम्बाई कम ज्यादा करने से आरम्भ में नुकसान हो सकता है। जब अच्छा खासा अभ्यास एक ही लम्बाई से दौड़कर गेंद फेंकने का हो जाए तब आवश्यकतानुसार गेंद में तेजी कम ज्यादा कर अभ्यास करें।

गेंद का टप्पा खिलाने का एक स्थान नियत कर उस पर काफी समय तक अभ्यास करते रहना चाहिए तब तक जब तक गेंद सही फेंकी न जाने लगे। उसके बाद टप्पा खिलाने का दूसरा स्थान चुनिए। इसी गेंद को उंगलियां द्वारा घुमाव देने के अलग-अलग ढंगों को भी बारी-बारी से आजमाइए।

यदि गेंदबाज पॉपिंग क्रीज पर अपनी इच्छानुसार उसे डायरेक्शन देने में निपुण हो जाए तो समझ लीजिए आधी सफलता हाथ लग गई। गेंदबाजी के ये दोनों ही महत्वपूर्ण हिस्से हैं जिन पर अधिकार करना बहुत आवश्यक है।

गेंदबाजी की कुछ बुनियादी बातें—गेंदबाजी सीखने वाले खिलाड़ी को शुरू-शुरू मे केवल सीधी गेंदें फेंकने का अभ्यास करना चाहिए। यदि यह आरम्भ मे ही गेंद को स्पिन कराने की कोशिश मे टेढ़ी-मेढ़ी गेंदें फेंकने का अभ्यास करेगा तो दोनों ही ओर से उसे निराशा ही हाथ लगेगी।

आरम्भ मे उसे गेंद को तीन स्टम्पों मे से किसी एक को निशाना बनाकर फेंकने की कोशिश करनी चाहिए। इस तरह गेंद फेंकने से जब वह चाहे उसी ओर के स्टम्प को गेंद फेंककर गिरा दे तो समझ लीजिए उसका सीधी गेंद फेंकने का अभ्यास अच्छा खासा हो गया। यह नहीं होना चाहिए कि वह गेंद बाएं स्टम्प को लक्ष्य कर फेंके और वह लगे दाएं वाले स्टम्प पर। ऐसे मे उसे सताष नहीं कर लेना चाहिए कि कोई स्टम्प तो गिरा। निशाना खाली तो नहीं गया। यह सोचने वाला खिलाड़ी भयंकर भूल करेगा। उसे ऐसे मे यही सोचना चाहिए कि उसका निशाना गलत लगा क्योंकि वह इच्छित स्थान पर नहीं लगा। तभी खिलाड़ी म आत्मविश्वास जागेगा और मनोबल भी ऊंचा होगा।

यदि खिलाड़ी एक ही लैंग्थ और एक ही डायरेक्शन से गेंद एक ही

स्थान पर टप्पा खिलाता जाए तो यह गुड लैन्थ गेंद फेंकने की निपुणता कही जाएगी और ऐसी बॉल को 'गुड लैन्थ बॉल' कहेंगे।

गुड लैन्थ गेंद की परिभाषा को इस तरह व्यक्त किया जा सकता है—जब फेंकी हुई गेंद बल्लेबाज को इस परेशानी में डाल दे कि वह गेंद फॉरवर्ड स्ट्रोक (आगे बढ़कर खेलना) से खेले या बैकवर्ड स्ट्रोक (पीछे हटकर खेलना) से तो ऐसी गेंद गुड लैन्थ कहलाएगी।

अधिकतर गेंदबाज बल्लेबाज को परेशान करने के लिए गुड लैन्थ गेंद फेंकने की कोशिश करता है। लेकिन बीच-बीच में और ढंग की गेंदें फेंककर भी वह बल्लेबाज को भ्रमित करने की कोशिश करता है।

गुड लैन्थ गेंद स्लो बॉलर अलग ढंग से फेंकेगा तो फास्ट बॉलर अलग ढंग से। अर्थात् फास्ट बॉलर की फेंकी गई गेंद का टप्पा स्लो बॉलर की गेंद के टप्पे से कम दूरी पर पड़ेगा। इसी तरह अन्य प्रकार की गेंदबाजी में भी गेंद के टप्पे का स्थान बदल सकता है। फिर चतुर गेंदबाज तो बल्लेबाज की ऊंचाई को मद्देनजर रखकर भी गुड लैन्थ गेंद के टप्पे का अलग स्थान बनाते हैं।

स्पिन बॉलर बनने के लिए भी पहले सीधी गेंद फेंकने का अभ्यास जरूरी है। सीधी गेंद फेंकने के अभ्यास के बाद ही स्पिन गेंद फेंकने का अभ्यास करना चाहिए।

गेंद को स्पिन कराना कोई मामूली बात नहीं है। क्रिकेट की बॉल भारी होती है—और फिर केवल स्पिन कराने से ही तो काम नहीं बनता। स्पिन कराते हुए गेंद इच्छित स्टम्प पर भी तो लगनी चाहिए। अतः स्पिन कराते हुए निशाना बैठाना कोई हंसी खेल नहीं है। इसके लिए पूरी मेहनत, लगन, एकाग्रता और तपस्या की जरूरत होती है।

सीधी गेंद और स्पिन गेंद में बहुत अन्तर है। सीधी गेंद तो सीधी ही आती है स्टम्पों की ओर, पर स्पिन लेती हुई मालूम तो ऐसी पड़ती है जैसे ऑफ स्टम्प की ओर आ रही है पर वह अचानक टर्न लेकर लेग स्टम्प को गिरा देती है। इसी प्रकार लेग स्टम्प की ओर दिखाई देती है, पर अचानक ऑफ स्टम्प की ओर मुड़कर उसे गिरा देती है। या फिर घूमती हुई गेंद पर जरा भी बल्ला गलत लग गया कि कैच बना। अतः स्पिन गेंद जिस तरह एक बल्लेबाज को चक्कर में डालती है उसके पीछे उस गेंदबाज की मेहनत और लगन का ही कमाल है।

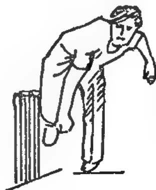
गेंद की तेजी में परिवर्तन लाकर भी बल्लेबाज के लिए मुश्किल











गेंद फेंकने की एक बानगी

पैदा की जा सकती है। पहले कई तेज गेंदें फेंकने के बाद यदि बीच में एकाध धीमी रफ्तार वाली गेंद फेंकने से बल्लेबाज गड़बड़ाकर बल्ला सही ढंग से गेंद पर न लाकर कैच दे सकता है।

गेंदबाज की एक खूबी यह भी होनी चाहिए कि दो चार गेंद फेंककर वह बल्लेबाज की कमजोरियों को भाप ले और फिर उन्हीं कमजोरियों को दृष्टिगत रखते हुए गेंदबाजी करे। इस प्रकार बल्लेबाज गेंदबाज पर हावी नहीं हो पाता।

गेंदबाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमे आत्मविश्वास होना चाहिए। जरा-सी असफलता मिलने पर—लगातार जैसे यदि कोई उसकी गेंद पर छक्का या चौका मार ले। या फिर उसकी गेंदों पर बहुत ज्यादा रन बना ले—तो ऐसे मे घबराना या हतोत्साह नही होना चाहिए। वरना आप अपना खेल ही भूल जाएंगे। या फिर भी नहीं समझना चाहिए कि आपके सामने बहुत प्रसिद्ध बल्लेबाज हैं जिसे आप आऊट नहीं कर पायेंगे। हमेशा यही भाव रखें कि—अमुक बल्लेबाज को तो आप अभी आऊट कर देंगे। जब भी वह आपकी गेंदों पर रन बनाए, आपका निश्चय और भी दृढ होता जाना चाहिए कि आप इसे आऊट करके ही रहेंगे। तभी आप एक सफलतम् गेंदबाज बन सकेंगे।

गेंदबाजी सीखने के लिए आपको अपने कद-काठी पर विशेष ध्यान देना चाहिए। तेज गेंदबाज बनने के लिए शरीर की लम्बाई अच्छी खासी होनी चाहिए। साढ़े पांच फुट से कम नहीं होनी चाहिए। जितनी ज्यादा लम्बाई होगी तेज गेंदबाज बनने के लिए उतना ही अच्छा होगा। क्योंकि लम्बाई इसमें काफी हद तक सहायक होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि कम लम्बाई तेज गेंदबाजी में बाधक होती है। पर यह निश्चित है कि वह सहायक अवश्य होती है। अत अच्छा यही है कि आप अपने शरीर की काठी के अनुरूप वह गेंदबाजी चुनें जिसमे प्राकृतिक रूप से आपका शरीर भी सहायक हो। जैसे बास्केट बाल और वॉलीबॉल ऐसे खेल हैं जिनमें शरीर की लम्बाई जितनी ज्यादा हो उतना ही अच्छा है। ठिगने कद का खिलाड़ी ये खेल तो खेल सकता है पर कई बातो मे जहां लम्बाई सहायक होती है, उसका लाभ नही उठा पाता।

ग्रिप और रन अप का महत्व

गेंदबाज के लिए ग्रिप अर्थात—गेंद की पकड और रन अप यानी एक निश्चित दूरी से विकेट तक दौड़कर आना—इन दोनों मूल बातो

का बड़ा महत्व है।

गेंद को उंगलियों द्वारा विभिन्न ढंग से पकड़कर फेंकने से ही गेंद को स्पिन, कट या स्विंग कराया जाता है। अतः इसमें ग्रिप का बड़ा महत्व है, सबसे पहले गेंद को विभिन्न ढंग से पकड़ने के तरीकों और फेंकने की स्टाइल पर ध्यान देना चाहिए। इसमें किस ढंग से गेंद को पकड़कर किस तरीके से हाथ को घुमाकर गेंद को फेंकना चाहिए, इस पर विशेष ध्यान दें।

याद रखें कि गेंद को सही दिशा, गति और संतुलन रन अप से ही मिलता है। अतः विभिन्न प्रकार की गेंदों को फेंकने के लिए विभिन्न दूरी के रन अप की आवश्यकता पड़ती है। यह एक गणित की तरह का प्रामाणिक फार्मूला है जिसे जब आप अपनाएंगे तो पाएंगे कि गेंदों को इच्छित स्थान पर पिच कराने, स्विंग कराने और स्पिन कराने में रन अप की कम ज्यादा दूरी का कितना महत्व है।

गेंदबाज को धीरे-धीरे दौड़ते हुए तेजी लानी चाहिए और उस स्थान पर बराबर नजर रखनी चाहिए जहां वह गेंद को पिच कराना चाहता है।

तेज गेंदबाजी—आधुनिक क्रिकेट में तेज गेंदबाजी महत्वपूर्ण हिस्सा है। किसी क्रिकेट टीम में स्पिन गेंदबाज के साथ एक-दो तेज या मध्यम तेज गेंदबाज होने अति आवश्यक हैं। खास तौर से आरम्भ के ओपनर बल्लेबाजों की जोड़ी को तहस नहस करने के लिए आरम्भ में ही तेज गेंदबाज का इस्तेमाल ज्यादा लाभदायक रहता है। क्योंकि स्लो बॉलर आरम्भिक बल्लेबाजों को जमने का मौका देने में सहायक हो सकते हैं।

ऊपर बताया जा चुका है कि तेज गेंदबाजी के लिए शरीर की लम्बाई जितनी अधिक हो तेज गेंदबाजी उतनी अच्छी की जा सकती है। तेज गेंदबाजी के लिए सही रन अप तथा और एक्शन की आवश्यकता होती है। ताकि गेंद सही दिशा में जाकर सही स्थान पर पिच कराई जा सके।

गेंद को शक्ति और तेज गति प्रदान करने के लिए तेज गेंदबाजी में लम्बे रन अप यानी लम्बी दूरी (प्रत्येक खिलाड़ी की अपनी निश्चित लम्बाई की दूरी) से गेंद फेंकना आवश्यक है। आरम्भ में दौड़ धीरे धीरे शुरू कर जैसे क्रीज लाइन पास आती जाए रफ्तार में तेजी





आउट स्विंगर गेंद की पकड़ इन स्विंगर गेंद की पकड़

छाती बल्लेबाज की ओर रहती है जबकि आउट स्विंगर गेंद में गेंदबाज का कंधा बल्लेबाज की ओर रहता है। कलाई को हल्का सा सिर की दिशा में लचकाकर बाजू घुमाता हुआ शरीर के उसी ओर आता है जबकि आउट स्विंगर गेंद में गेंदबाज का बाजू घूमता हुआ शरीर के दूसरी ओर जाता है।

इन स्विंगर गेंद के लिए फील्डरों को लेग की ओर खड़ा किया जाता है। तीन फील्डर शॉर्ट लेग के पास, एक मिड विकेट तथा एक मिड ऑफ के पास रखते हैं। इन स्विंगर में जब गेंद आफ स्टम्प से परे पिच कराना हो तो ऑफ स्टम्प का निशाना लेना होता है। इसी तरह लेग स्टम्प की सीध में पिच कराना हो तो गेंद को ऑफ स्टम्प से परे का निशाना लेकर फेंकना होगा।

अब तो आप इन स्विंगर गेंद के बारे में जान गये होंगे। चित्र में गेंद की ग्रिप को अच्छी तरह देख समझ लीजिए।

कटर

कटर स्टाइल में जब गेंद को फेंका जाता है तो वह टप्पा खाने के











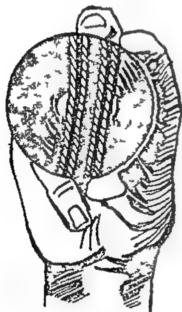


इन स्विंगर गेंद फेंकने का ढंग

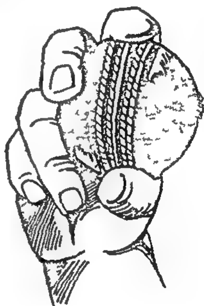
बाद अपनी दिशा अचानक बदल देती है। इसमे गेंद को विशेप ढग से पकड़ा जाता है।

कटर मुख्य रूप से दो प्रकार से फेंकी जाती है—(1) आफ कटर तथा (2) लग कटर।

ऑफ कटर—ऑफ कटर स्टाइल से गेंद फेंकने के लिए गेंद आफ साइड से अ दर की ओर आती है। ऑफ कटर गेंद साधारण मीडियम पेस पर फकी जाती है। यह एक प्रकार तेज आफ ब्रेक गेंद होती है। गेंद को कलाई के झटके के सहारे या लचकाकर कट कराया जाता है। ऑफ कटर मे गेंद को तेजी से फेंका जाता है।



लेग कटर गेंद की पकड



ऑफ कटर गेंद की पकड

ऑफ कटर के लिए गेंद इस तरह पकड़ते हैं कि गेंद की सीवन फाईन लग की ओर रहे। प्रथम दोनो अगुलिया लगभग अपस मे जुडी होती हैं। ये सीवन पर सम्व रूप मे रखी जाती हैं। जब गेंद को तेजी से फेंका जाता है तो अगुलियो को घडी के काटे घूमने की दिशा मे घुमा

दिया जाता है ताकि गेंद पिच करके कट होती है। ऑफ कटर में गेंद बाज की हथेली ऑफ साइड की ओर रहनी चाहिए। ऑफ कटर गेंद ऐसे बल्लेबाज को फेंकनी चाहिए जो आफ साइड मे अन्दर आने वाली गेंदों को खेलने मे सक्षम न हो। बल्लेबाज की कमजोरिया समझकर उसी स्टाइल की गेंदें फेंकनी चाहिए।

लैग कटर—लैग कटर गेंद फेंकने के लिए गेंद की सीवन स्लिप दिशा की ओर रहनी चाहिए। और हथेली लैग साइड की ओर रहनी चाहिए।

लग कटर गेंद पिच होने पर लग साइड से आफ की ओर कट करती हुई जाती है। इसमे गेंदबाज को बाजू विरुद्ध दिशा मे मोड़कर गेंद को फेंकना होता है जो एक कठिन काम है।

इसमे हाथ की तर्जनी और मध्यमा अगुलिया एक दूसरे से दूरी पर हो और अगूठा तर्जनी अगुली के लगभग नीचे रहे।

(चित्र मे ठीक स्थिति देखिए)

याकर—ऐसी गेंद जो बल्लेबाज के पैरो के पास टप्पा खाए, याकर गेंद कहलाती है। याकर गेंद बल्ले के नीचे से निकलकर तेजी से विकेटो मे घुस जाती है। याकर गेंद बल्लेबाज को गड़बड़ा देती है। वह इसे खेलने मे अक्सर चूक जाता है। यह गेंद ठीक पॉपिंग क्रीज पर पिच करती है।

बम्पर या बाउन्सर—बम्पर एक खतरनाक स्टाइल है जो बल्लेबाज को भयभीत करने के लिए होती है। बम्पर शार्ट पिच गेंद होती है जो टप्पा खाते ही तेजी से उछलती है।

बम्पर गेंद का इस्तेमाल कभी कभी उचित है पर लगातार बम्पर गेंद फेंकना खेल भावना के विरुद्ध है। इस शार्ट पिच पर फेंकी गेंद टप्पा खाकर बल्लेबाज के सिर पर उछलती है। यदि बल्लेबाज सिर नीचे झुकाकर या दाए बाए करके न बचे तो वह चोट ग्रस्त हो सकता है। या उल्टा सीधा बल्ला अड़ाकर कैच दे बैठता है।

बम्पर या बाउन्सर गेंद आने पर अधिकतर बल्लेबाज शार्ट भूलकर अपना बचाव करने की ही कोशिश मे होता है। इससे खेल नीरस हो जाता है।

बम्पर तेज गेंदबाजों का एक बड़ा खतरनाक हथियार माना जाता है। जब बम्पर गेंद फेंकने कोई तेज गेंदबाज आता है तो स्थिति बड़ी

भयावह हो जाती है। कभी गेंद कमर पर लगती है, तो कभी पसली तोड़ती है, कभी कंधे छील देती है, तो कभी सिर फोड़ देती है। फिर भी साहसी बल्लेबाज उन्हें खेलने के लिए डटे ही रहते हैं। कई बल्लेबाज आक्रान्त होकर मैदान छोड़ देते हैं। अभी हाल की पाकिस्तान यात्रा में हमारे क्रिकेट खिलाड़ियों को पाकिस्तानी तेज गेंदबाजों ने बम्पर और बीमर गेंदों का निशाना बनाने की अशोभनीय कोशिश की थी। पर भारतीय बल्लेबाजों ने साहस के साथ उनका मुकाबला किया था।

बम्पर में गेंदबाज गेंद को शॉर्ट पिच बनाकर ऊंची उछाल देता है जो बल्लेबाज के सिर, कन्धे, छाती, पसली, कमर, हाथ आदि पर आघात करती है।

वैसे अब यह नियम बना दिया गया है कि एक ओवर में कोई भी तेज गेंदबाज दो बम्पर गेंदें फेंक सकता है। परन्तु यह नियम शिथिल है।

बीमर—बीमर गेंद में तेज गेंदबाज गेंद को सीधा बल्लेबाज पर फेंककर उसे आतंकित करता है। यह स्थिति बम्पर से भी ज्यादा भयावह होती है।

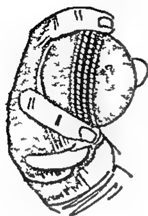
बीमर गेंद को गेंदबाज क्रीज पर पिच नहीं कराते। यदि गेंद के आघात से बचने के लिए बल्लेबाज पॉपिंग क्रीज से हट जाए तो गेंद स्टम्प ले उड़ती है और बल्लेबाज आउट हो जाता है।

सीमर—यदि पिच पर हरी घास हो तो गेंद को सीवन से पकड़ा जाता है। सीवन को बल्लेबाज की ओर लम्ब रूप में रखा जाता है। जब गेंद को बल्लेबाज की तरफ फेंका जाता है तो वह टप्पा खाकर घास और सीवन के घर्षण से ऐसे कोण पर मुड़ जाती है कि बल्लेबाज समझ नहीं पाता। कभी कभी सीधी ही उठ जाती है। दरअसल यह पता नहीं चल पाता कि घास और सीवन के घर्षण से गेंद किस ओर ब्रेक हो जाएगी। गेंद की इस अनजान हरकत को न समझ बल्लेबाज चक्कर में पड़ जाता है। इस तरह से फेंकी गयी गेंद को 'सीमर' कहा जाता है।

खास बात यही है कि सीमर गेंद घास वाली पिच पर ही ठीक ढंग से फेंकी जाती है।

स्पिन गेंदबाजी

स्पिन गेंदबाजी सीखने के लिए गेंदबाज को पहले गेंद स्पिन कराना तथा लाइन और लैंथ पर कन्ट्रोल करना सीखना चाहिए तभी स्पिन



ऑफ ब्रेक या ऑफ स्पिन



लग ब्रेक या लग स्पिन

कुछ दूर रखते हैं। अगूठे को तजनी के पास ही रखते हैं तथा गद को बाकी दो अगुलियो का आधार दिया जाता है।

ऑफ स्पिन मे गेंद को स्पिन देन का काय तजनी यानी पहली अगुली करती है। ऑफ स्पिन गेंदबाज का बॉडी एक्शन बिल्कुल आउट स्विंगर गेंद फेंकने जैसा होता है।

इसम गेंद को ज्यादा से ज्यादा ऊचा हाथ घुमाकर, स्पिन कराकर फेंकना चाहिए। इसमे गद को ऑफ स्टम्प की दिशा मे टप्पा खिलाना चाहिए। गेंद की उडान और गति मे परिवतन कर या गेंद को थोडा पहले या थोडा बाद मे छोडने से गेद म जो विचित्र परिवतन आता है, उससे बल्लेबाज भ्रमित हो जाता है।

इसमे गेंदबाज का कधा पहले बल्लेबाज के सामने होता है। फिर अगला पैर जमाकर शरीर को कमर स घुमाते हुए गेंद को स्पिन देते हुए फेंकने के बाद गेंदबाज की पीठ बल्लेबाज की ओर हो जाती है। और हाथ जिससे गेंद फकी गयी, छाती के आगे से घूमता हुआ शरीर के दूसरी ओर निकल जाता है। गेंद को सही पकड के लिए चित्र देखिए।

लग स्पिन—इसम गेद लेंग साइड पर टप्पा खाकर ऑफ की दिशा म घूमती है। लेंग स्पिन फेंकने के लिए थोडा अधिक अभ्यास करना चाहिए। लैंग स्पिन म गेंद फेंकते समय शरीर से परे यानी दायी ओर

कराने के विभिन्न तरीके सीखे जा सकते हैं। गेंद को अंगुलियां और कलाई से फिरकी (घुमाना) देकर उसे स्पिन कराया जाता है। घूमती हुई गेंद जब पिच करती है तो वह अपनी दिशा उसी ओर बदलती है जिस दिशा में उसे गेंदबाज फेंकते समय फिरकी देता है। स्पिन गेंदबाजी अपने आप में एक विशेष कला है। हमारे यहां के चार महान स्पिनर बिशनसिंह बेदी, चन्द्रशेखर, प्रसन्ना तथा वेंकटराघवन संसार के सर्वोत्तम स्पिनर माने जाते हैं। नये उभरते स्पिनरों में शिवलाल यादव और दिलीप दोषी हैं।

एक संतुलित क्रिकेट टीम में बल्लेबाजों के लि[illegible] मध्यम तेज गेंदबाज तथा दो स्पिनर होने जरूरी होते हैं

यदि आप भी स्पिन गेंदबाज बनना चाहते हैं अंगुलियों और कलाई के माध्यम से फिरकी देने का

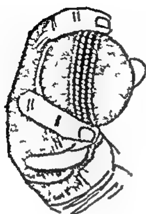
स्पिन गेंदबाजों के लिए बहुत लम्बे रन-अप की और न ही नयी गेंद की। जब गेंद पुरानी होकर अपनी चमक खो देे तब उससे स्पिन का काम सकता है, क्योंकि ऐसी गेंद बहुत अच्छी तरह [illegible]

जब गेंद को स्पिन कराकर काफी ऊंचा [illegible] तो हवा में उसका आकार धनुष जैसा हो ज्यादा देर तक उड़ती है। ऐसे में इसका पथ [illegible] धीरे धीरे नीचे गिरती है। इसे हाई ट्रेजेक्टरी जाता है। यदि गेंद अपेक्षाकृत नीचा हाथ [illegible] उसका पथ सपाट और सीधा होता है। तक नहीं ठहरती। ऐसी गेंद को लो ट्रेजेक्टरी कहते हैं।

हाई ट्रेजेक्टरी [illegible] गेंद में बल्लेबाज होती है कि गेंद कहां और कब आकर [illegible] कभी बल्लेबाज समय से पहले घुमा देता है

तो आइए अब स्पिन गेंदबाजों के [illegible]

ऑफ स्पिन—ऑफ स्पिन गेंद फेंकने लम्बरूप में रखते हुए पकड़ते हैं। तर्जनी तर्जनी अंगुली को सीवन के ऊपर बायीं [illegible]



ऑफ ब्रेक या ऑफ स्पिन



लेग ब्रेक या लैग स्पिन

कुछ दूर रखते हैं। अगूठे को तर्जनी के पास ही रखते हैं तथा गेंद को बाकी दो अगुलियों का आधार दिया जाता है।

ऑफ स्पिन में गेंद को स्पिन देने का काम तर्जनी यानी पहली अगुली करती है। ऑफ स्पिन गेंदबाज का बॉडी एक्शन बिल्कुल आउट स्विंगर गेंद फेंकने जैसा होता है।

इसमे गेंद को ज्यादा से ज्यादा ऊचा हाथ घुमाकर, स्पिन कराकर फेंकना चाहिए। इसमे गेंद को ऑफ स्टम्प की दिशा मे टप्पा खिलाना चाहिए। गेंद की उडान और गति मे परिवर्तन कर या गेंद को थोडा पहले या थोडा बाद मे छोडने से गेंद म जो विविध परिवर्तन आता है, उससे बल्लेबाज भ्रमित हो जाता है।

इसमे गेंदबाज का कधा पहले बल्लेबाज के सामने होता है। फिर अगला पैर जमाकर शरीर को कमर स घुमाते हुए गेंद को स्पिन देते हुए फेंकने के बाद गेंदबाज की पीठ बल्लेबाज की ओर हो जाती है। और हाथ जिससे गेंद फेंकी गयी, छाती के आगे से घूमता हुआ शरीर के दूसरी ओर निकल जाता है। गेंद को सही पकड के लिए चित्र देखिए।

लेग स्पिन—इसमे गेंद लैग साइड पर टप्पा खाकर ऑफ की दिशा म घूमती है। लैग स्पिन फेंकने के लिए थोडा अधिक अभ्यास करना चाहिए। लैग स्पिन म गेंद फेंकते समय शरीर से परे यानी दायी ओर

कराने के विभिन्न तरीके सीखे जा सकते हैं। गेंद को अंगुलियां और कलाई से फिरकी (घुमाना) देकर उसे स्पिन कराया जाता है। घूमती हुई गेंद जब पिच करती है तो वह अपनी दिशा उसी ओर बदलती है जिस दिशा में उसे गेंदबाज फेंकते समय फिरकी देता है। स्पिन गेंदबाजी अपने आप में एक विशेष कला है। हमारे यहां के चार महान स्पिनर बिशनसिंह बेदी, चन्द्रशेखर, प्रसन्ना तथा वेंकटराघवन संसार के सर्वोत्तम स्पिनर माने जाते हैं। नये उभरते स्पिनरों में शिवलाल यादव और दिलीप दोषी हैं।

एक संतुलित क्रिकेट टीम में बल्लेबाजों के अतिरिक्त दो तेज या मध्यम तेज गेंदबाज तथा दो स्पिनर होने जरूरी होते हैं।

यदि आप भी स्पिन गेंदबाज बनना चाहते हैं तो गेंद को पहले अंगुलियों और कलाई के माध्यम से फिरकी देने का अभ्यास कीजिए।

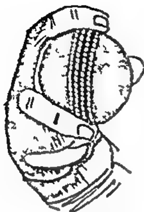
स्पिन गेंदबाजी के लिए बहुत लम्बे रन अप की जरूरत नहीं पड़ती और न ही नयी गेंद की। जब गेंद पुरानी होकर खुरदरी हो जाए और अपनी चमक खो दे तब उससे स्पिन का काम अच्छी तरह लिया जा सकता है, क्योंकि ऐसी गेंद बहुत अच्छी तरह स्पिन लेती है।

जब गेंद को स्पिन कराकर काफी ऊंचा हाथ करके फेंका जाता है तो हवा में उसका आकार धनुष जैसा हो जाता है और गेंद हवा में ज्यादा देर तक उड़ती है। ऐसे में इसका पथ धनुषाकार होता है और यह धीरे धीरे नीचे गिरती है। इसे हाई ट्रेजेक्टरी बाल (ऊंची उठान) कहा जाता है। यदि गेंद अपेक्षाकृत नीचा हाथ घुमाकर फेंकी गयी हो तो उसका पथ सपाट और सीधा होता है। ऐसी गेंद हवा में ज्यादा देर तक नहीं ठहरती। ऐसी गेंद को लो ट्रेजेक्टरी (नीची उठान) वाली बाल कहते हैं।

हाई ट्रेजेक्टरी वाली गेंद में बल्लेबाज को यह समझने में मुश्किल होती है कि गेंद कहां और कब आकर गिरेगी। इस असमंजस में कभी कभी वह बल्ला समय से पहले घुमा देता है या फिर समय से बाद में।

तो आइए अब स्पिन गेंदबाजी के विभिन्न तरीकों को जानें।

आफ स्पिन—आफ स्पिन गेंद फेंकने के लिए गेंद की सीवन को समकोण में रखते हुए पकड़ते हैं। तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों में से तर्जनी अंगुली को सीवन के ऊपर बायीं ओर तथा मध्यमा को सीवन से



ऑफ ब्रेक या ऑफ स्पिन



लग ब्रेक या लैग स्पिन

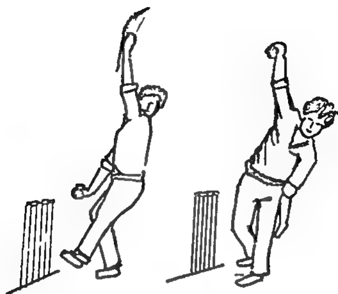
कुछ दूर रखते हैं। अगूठे को तजनी के पास ही रखते हैं तथा गेंद को बाकी दो अगुलियो का आधार दिया जाता है।

ऑफ स्पिन म गेंद को स्पिन देने का काय तजनी यानी पहली अगुली करती है। आफ स्पिन गेंदबाज का बॉडी एक्शन बिल्कुल आउट स्विगर गेंद फेंकने जैसा होता है।

इसमे गेंद को ज्यादा से ज्यादा ऊचा हाथ घुमाकर, स्पिन कराकर फेंकना चाहिए। इसमे गेंद को ऑफ स्टम्प की दिशा मे टप्पा खिलाना चाहिए। गेंद की उडान और गति मे परिवतन कर या गेंद को थोडा पहले या थोडा बाद मे छोडने से गेंद म जो विचित्र परिवतन आता है, उससे बल्लेबाज भ्रमित हो जाता है।

इसमे गेंदबाज का कधा पहले बल्लेबाज के सामने होता है। फिर अगला पैर जमाकर शरीर को कमर स घुमाते हुए गेंद को स्पिन देते हुए फेंकने के बाद गेंदबाज की पीठ बल्लेबाज की ओर हो जाती है। ओर हाथ जिससे गेंद फेंकी गयी, छाती के आगे से घूमता हुआ शरीर के दूसरी ओर निकल जाता है। गेंद को सही पकड के लिए चित्र देखिए।

लग स्पिन—इसमे गेंद लैग साइड पर टप्पा खाकर आफ की दिशा म घूमती है। लैग स्पिन फेंकने के लिए थोडा अधिक अभ्यास करना चाहिए। लैग स्पिन म गेंद फेंकते समय शरीर से परे यानी दायी ओर





ऑफ स्पिन गेंदबाजी की एक बानगी

स्पिन करानी पड़ती है।

लैग स्पिन से प्रथम तीन अंगुलियों में सीवन पकड़ी जाती है। सीवन की दिशा आड़ी रखी जाती है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। ये तीनों अंगुलियां सीवन पर अलग-अलग होनी चाहिए ताकि गेंद पर पकड़ सुविधाजनक हो। तीसरी अंगुली जो गेंद के लगभग नीचे की ओर रहती है, गेंद को स्पिन कराती है। गेंद पर दबाव का कार्य तर्जनी और मध्यम अंगुली से डाला जाता है।

क्योंकि लैग स्पिन गेंद एक कठिन गेंद होती है अतः अधिकतर गेंदबाज लैंथ और डायरेक्शन पर इच्छित नियंत्रण बहुत कम रख पाते हैं। इसके लिए यदि हाथ बड़ा हो या हाथ की अंगुलियां लम्बी ज्यादा हों तो लैग स्पिन बहुत अच्छी तरह करायी जा सकती है।

लैग स्पिन में अंगुलियों तथा कलाई को एक साथ तालमेल बैठाकर घुमाया जाता है। तभी गेंद अच्छा स्पिन लेती है। इसमें कलाई को घड़ी की सुइयां घूमने की उल्टी दिशा में घुमाकर गेंद को फेंका जाता है। ठीक उसी दिशा में जिस दिशा में किसी शीशी का ढक्कन खोला जाता है।

लैग ब्रेक या लैग स्पिन गेंद में चन्द्रशेखर और सुभाष गुप्ते बहुत माहिर माने जाते रहे हैं।

गुगली—गुगली गेंद लगभग लैग स्पिन की तरह ही फेंकी जाती है। एक तरह से यह भी कहा जा सकता है कि गुगली लैग स्पिन गेंद का एक खास हथियार है। गुगली स्टाइल में गेंद ऑफ साइड से लैग साइड की ओर स्पिन करती है। इसमें गेंद की पकड़ लैग ब्रेक वाली होती है। शरीर का एक्शन भी लगभग लैग ब्रेक वाला ही होता है। केवल कलाई की दिशा में थोड़ा अन्तर होता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि गुगली ऐसे प्रकार की गेंद है जो फेंकी तो लैग ब्रेक की तरह जाती है पर होती ऑफब्रेक है। इसमें हथेली की दिशा स्क्वेयर लैग की ओर होती है। लैग ब्रेक गेंद फेंकते हुए कभी-कभी बीच में गेंदबाज गुगली गेंद फेंक दिया करते हैं।

टाप स्पिनर—टॉप स्पिनर गेंद भी लैग ब्रेक की तरह ही फेंकी जाती है। इसमें गेंद पिच होने के बाद ऑफ साइड की ओर घूमने के बजाय तेजी से आगे की ओर बढ़ती है। इसमें गेंद की पकड़ भी लगभग लैग ब्रेक के समान ही होती है। केवल अन्तर इतना है कि इसमें अनामिका अंगुली सीधे विकेट की दिशा में गेंद को स्पिन कराती है जबकि



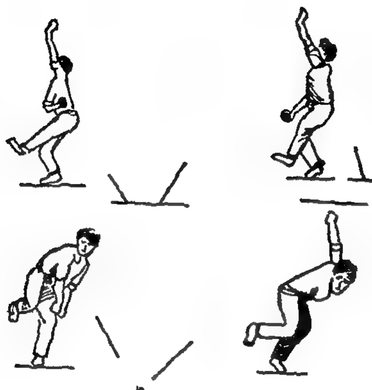






गुगली गेंद फेंकने का ढंग जो बिल्कुल लेग ब्रेक की तरह ही होता है

लेग ब्रेक में यह तीसरे स्लिप की दिशा में स्पिन करती है। इसमें लेग ब्रेक की अपेक्षा कलाई को कुछ जल्दी मोड़ दिया जाता है। इसमें गेंद न ऑफ की ओर न लेग की ओर टप्पा खाती है बल्कि टप्पा खाकर विकेट



लैग ब्रेक या लैग स्पिन गेंद फेंकना

की ओर आगे बढ़ती है।

सभी प्रकार की स्पिन गेंदें पिच की अवस्था को देखकर फेंकनी चाहिए। जिस स्पिन गेंद के लिए पिच अच्छी हो उसी प्रकार की स्पिन गेंद फेंकनी चाहिए। अब आप गेंदों की पकड़ और फेंकने का ढंग समझकर अभ्यास आरम्भ कीजिए।

अभ्यास करते समय क्रीज के निशान लगाकर ही अभ्यास करें ताकि दौड़ने में फुट वर्क का भी अभ्यास हो जाए। ध्यान रहे दौड़ के अन्तिम चरण में आगे वाला पैर पॉपिंग क्रीज से पीछे होना चाहिए और पिछला पैर क्रीज की पिछली लाइन के अंदर होना चाहिए। अगला पैर क्रीज के नियमों का उल्लंघन करने पर नो बाल करार दे दिया जाता है। नो बाल से बचने के लिए पहले से अभ्यास ठीक है।

अध्याय-6

फील्डिंग

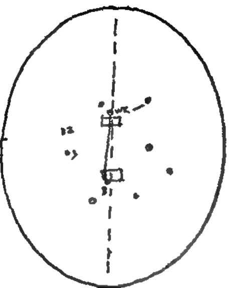
एक बल्लेबाज का एक गेंदबाज होना जरूरी नहीं। इसी तरह एक गेंदबाज का बल्लेबाज होना भी उतना जरूरी नहीं। पर एक बल्लेबाज या गेंदबाज को अच्छा क्षेत्र रक्षक (फील्डर) होना बहुत जरूरी है। बिना फील्डिंग आए उसका अच्छा बल्लेबाज या गेंदबाज होना कोई विशेष महत्व नहीं रखता। कारण हम बताए [redacted] हैं। यदि कोई बैटस-मैन अपनी टीम के लिए अच्छे रनों का स्कोर तो खड़ा कर देता है, पर यदि वह फील्डिंग करते समय चौके वाली गेंदों को छोड़ दे तो उसके द्वारा प्राप्त रनों का स्कोर बराबर हो जाएगा। इसी प्रकार कोई गेंदबाज दो-चार बल्लेबाजों को आउट कर नाम कमा ले, पर फील्डिंग में दो-चार कैच छोड़ दे तो उसके द्वारा प्राप्त सहयोग बेकार हो जाएगा। है न सच बात। अब तो आप फील्डिंग के महत्व को समझ गए होंगे।

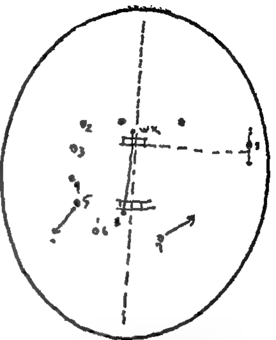
अतः केवल आपका अच्छा बल्लेबाज या गेंदबाज होना काफी नहीं। उसके साथ वैसी योग्यता का फील्डर होना भी निहायत जरूरी है वरना जितना सहयोग आप अपनी टीम को देंगे उतना ही नुकसान खराब फील्डर होने के नाते कर देंगे।

तो आइए, फील्डिंग की कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान दें।

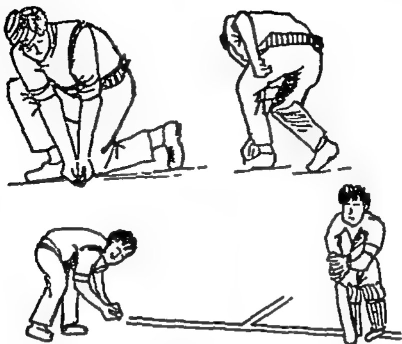
एक अच्छा फील्डर अपने साथी गेंदबाज का एक तरह से दायां हाथ होता है। बेचारा गेंदबाज तो ऐसी गेंद फेंकने में जी-जान लगा रहा हो कि बल्ला अड़ते ही कैच उछलने पर फील्डर उसे छोड़ दे तो वह फील्डर गेंदबाज के लिए सिर दर्द ही होगा।

एक अच्छे फील्डर का कर्तव्य है कि यदि वह विकेट से दूर खड़ा है तो अपने निकट से एक भी चौक्का जाती गेंद बाउन्ड्री पार न करने दे। और यदि वह विकेट के नजदीक खड़े होकर फील्डिंग कर रहा है तो एक-एक रन बनाने पर भी अंकुश लगा दे।





—लेग स्पिन गेंदबाज के लिए फील्डिंग की जमावट



गेंद को रोकने का ढंग

ध्यान देने योग्य बातें—फील्डर को हमेशा चुस्त रहना चाहिए। जैसे ही गेंदबाज गेंद फेंकने की स्थिति में आए उसे तुरन्त पोजीशन लेकर सतर्क होकर खड़े हो जाना चाहिए। ऐसे में फील्डर के दोनों हाथ आगे पेट के लगभग सामने हों और दोनों हाथों की झोली बनी हो। पर घुटनों से मुड़े हों और छाती तथा सिर आगे की ओर झुके हों।

फील्डर की नजर बराबर बल्लेबाज पर लगी रहनी चाहिए कि वह किस ओर शॉट लगाता है या गेंद उसके बल्ले से टकराकर किस ओर उछलती है। यदि फील्डर सतर्क नहीं रहेगा तो वह गेंद को रोकने या कैच लेने में असमर्थ रहेगा।

फील्डर को अच्छी फील्डिंग के लिए दोनों हाथों की हथेलियों और उंगलियों के बीच गेंद को सही ढंग से झेलना, तेज गेंद को एक हाथ से रोककर फील्ड करना, गेंद को सही स्थान पर फेंककर पहुंचाना आदि

को अपने प्रतिदिन के अभ्यास में शामिल करना चाहिए। केवल गेंदबाजी या बल्लेबाजी का अभ्यास ही महत्वपूर्ण नहीं है। फील्डिंग का अभ्यास हर बॉलर और बल्लेबाज को उसी लगन और मेहनत से करना चाहिए जितनी लगन और मेहनत से वे गेंदबाजी और बल्लेबाजी का अभ्यास करते हैं।

फील्डर को रोकी गई गेंद फेंकते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि वह गेंद कहां थ्रो करके पहुंचाए। यदि सामान्य स्थिति है और विरोधी टीम के बल्लेबाज अपनी अपनी जगह पर हैं तो उसे गेंद अपने विकेटकीपर को ही थ्रो करनी चाहिए। और यदि बल्लेबाज रन ले रहे या रहा हो तो गेंद फुर्ती से उस ओर की विकेट की ओर फेंके जहां के विकेट पर पहुंचने में बल्लेबाज को देर हो ताकि उसे रन आउट किया जा सके।

गेंद को रोकने की प्रक्रिया में पहले तेजी से दौड़कर गेंद को कवर करने की कोशिश कीजिए, उसके बाद एक पैर आगे बढ़ाकर झुकिए और गेंद को हाथ मे उठाकर तुरन्त विकेटकीपर या विकेट के निकट अपने किसी भी साथी को थ्रो कर दीजिए।

कभी कभी पास से गुजरती तेज गेंद को रोकने या कैच लेने के लिए दौड़ने का अवसर नहीं मिल पाता। ऐसे मे गेंद को पकड़ने के लिए फील्डर डाइव लगाकर गेंद को पकड़ता है, डाइव लगाना कोई इतना आसान काम नहीं है। गलत डाइव लगाने से हाथो मे मोच आ सकती है, पर जख्मी हो सकते हैं। या फिर मुंह पर चोट आ सकती है। इससे बचने के लिए सही डाइव लगाने का अभ्यास करें। फिर चाहे आप कसी भी डाइव लगाए, आपको चोट नहीं लगेगी और आप सुरक्षित रूप से जमीन पर गिरने में माहिर हो जाएगे। अक्सर डाइव लगाकर गेंद को रोकने के मौके आते रहते हैं। खास-तौर से विकेटकीपर के पीछे या आस-पास खड़े फील्डरो को डाइव लगाने के सबसे ज्यादा मौके आते हैं।

याद रखिए जहां बढ़िया गेंदबाज और अच्छा फील्डर हो तो अच्छे से अच्छा धुरंधर बल्लेबाज भी रनों के रास्ते बड़ी मुश्किल से निकाल पाता है।

फील्डर के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उससे कभी कैच नहीं छूटना चाहिए। मान लीजिए यदि उसने एक कैच छोड़ दिया—



कैच करने का सही तरीका

और यही बल्लेबाज बाद में 80 90 रन बटोर लेता है तो है न यह खतरनाक बात ! एक गेंद को रोकने में तो ज्यादा से ज्यादा चार रन जाएंगे, पर कैच छोड़ने की सजा बहुत बड़ी भुगतनी पड़ेगी ।

यदि एक आगे खड़ा फील्डर किसी गेंद को लपकने के लिए बढ़ता है तो उसके आसपास या पीछे खड़े फील्डर को उसे पीछे आकर तुरन्त कवर करना चाहिए, ताकि यदि आगे वाले फील्डर से कैच छूट जाए या वह गेंद न रोक पाए तो पीछे वाला फील्डर उसे लपक लें । अत प्रत्येक फील्डर को बैक अप (पीछे आकर कवर करना) के लिए तयार रहना चाहिए । कवर करने का ढंग चित्र मे देखिए ।

फील्डिंग की जमावट—फील्डिंग की जमावट गेंदबाज के गेंद फेंकने की स्टाइल पर निर्भर होती है । गेंदबाज के गेंद फेंकने के प्रकार का पता लगाकर कप्तान अपने फील्डरों को ऐसी जगह चुनकर खड़ा करता है जहां गेंद जाने की ज्यादा सम्भावना होती है ।



...ाउट' आपका हाथ जमीन को छू सकता है बशर्ते कि गेंद जमीन न छुए



ऊपर से आती गेंद को पकड़ने का ढग

फील्डरो के मदान मे खडे होने के जो स्थान नियत हैं, उनको निम्न नामो से सम्बोधित किया जाता है—

(1) थड मॅन (2) डीप फाइन लेग (3) लांग लेग (4) बकवड पांइट (5) सकिड स्लिप (6) फस्ट स्लिप (7) शाट फाइन लेग तथा लेग स्लिप (8) स्क्वेयर लेग (9) गली (10) कवर (11) शॉट एक्स्ट्रा कवर (12) सिली मिड ऑफ (13) फॉरवड शाट लेग (14) एक्स्ट्रा



फील्डरों के खडे होने के स्थान ऊपर चित्र मे दर्शाये गए हैं। इनमे से गेन्दबाजों क अनुसार स्थान चुनकर केवल वहीं फील्डरों को तैनात किया जाता है।

कवर (15) मिड ऑफ (16) बॉलर (17) मिड ऑन (18) मिड विकेट (19) लाग ऑफ (20) लांग ऑन।

इन्हीं नियत स्थानो पर फील्डर तैनात किए जाते हैं जो गेंद आने पर इधर-उधर दौडकर गेंद रोकते और विकेट कीपर तक पहुचाकर अपनी निश्चित जगह पर आ जाते हैं।

फील्डिग की जमावट के विभिन्न चित्र हमने गेंदबाजी वाले अध्याय मे दिए हैं जिन्हें देखकर आप फील्डिग के नियत स्थानों और जमावट के विभिन्न तरीको को देख सकते हैं।

अध्याय-7

विकेट कीपिंग

क्षेत्ररक्षण मे बल्लेबाजों को आउट करने या रन ज्यादा न देने की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा विकेटकीपर पर होती है। फील्डिंग में सबसे कठिन मेहनत का जोखिम भरा काम विकेटकीपर का ही होता है। उसे अन्य फील्डरो से कैच लपकने, गेंद रोकने तथा फुर्ती से विकेट की ओर थ्रो करने मे ज्यादा माहिर होना चाहिए। डाइव लगाने मे उसे विशेष रूप से निपुण होना चाहिए।

बल्लेबाज से छूटी हुई गेंद सीधे विकेटकीपर के पास ही पहुचती है। गेंद कभी-कभी तो इतनी तेज आती है कि उसे बल्लेबाज से निकलकर विकेटकीपर के पास आने मे एक सेकिंड के सोवें भाग से भी कम समय लगता है। बहुत तेज आती गेंद मे तो यह समय एक सेकिंड के हजारवें भाग तक पहुच जाता है। इसी से आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि विकेटकीपर को कितना फुर्तीला और एकाग्रचित्त होकर रहना पड़ता होगा।

किसी बल्लेबाज का पैर गेंद रोकते समय जरा ही क्रीज से बाहर गया कि विकेटकीपर फुर्ती से विकटों की किल्लियां उड़ाकर उसे आउट कर देता है। रन आउट करने का भी जिम्मा अधिकतर विकेटकीपर पर होता है।

विकेटकीपर को बल्लेबाज के बल्ले पर बराबर पैनी दृष्टि रखनी पड़ती है कि गेंद बल्ले से लगकर आने किस दिशा मे जाए। विकेट कीपर को गेंदबाज के गेंद फेंकने के ढग और बल्लबाज की प्रत्येक हरकत पर नजर रखनी पड़ती है। समझदार विकेटकीपर बल्लेबाज की छोटी से छोटी भूल का भी फायदा उठा लेता है। बस उसमें चीते की सी फुर्ती हो।

अब पहले हम उन बातो पर विचार करेंगे जो विकेटकीपिंग का



विकेट के पीछे विकेट कीपर के बैठने का ढंग



विकेट के पीछे आने वाली गेंद को रोकने का ढंग

आधार है, जिनको जानना हर उस खिलाड़ी के लिए जरूरी है जो विकेटकीपर बनने की ख्वाहिश रखता है।

दमखम के लिए व्यायाम

सबसे पहले खिलाड़ी को अपना दमखम बढ़ाना चाहिए। जो विकेटकीपिंग के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है। विकेटकीपर को चूंकि सारे-सारे दिन पंजों के बल बैठे रहना पड़ता है। अत उसे ऐसी एक्सरसाइजें करनी चाहिएं जिससे उसे पंजों के बल बैठे रहने में थकावट महसूस न हो।

यहां हम कुछ व्यायाम बता रहे हैं जो विकेटकीपर को नियमित रूप से फिटनेस के लिए आवश्यक हैं।

1 पहला व्यायाम—खड़े होकर पैरों के बीच लगभग डेढ़ फुट की दूरी रखें। फिर धीरे-धीरे पंजों के बल घुटने मोड़कर बैठते जाएं। इसमें उठने-बैठने में जितना समय लगाएंगे, घुटनों और जांघों में उतना ही अधिक दमखम बढ़ेगा।



व्यायाम नं० 1

इसी व्यायाम मे पंजों के बल खडे होकर पहले थोडे घुटने मोडें और कुछ देर रुकें। फिर थोडा झुकें और उस स्थिति म थोडा रुकें। इस प्रकार जब भी थोडा घुटने मोडें थोडी देर इस स्थिति में रुकें। उठते बैठते दोनो समय इसी प्रकार करें। इस व्यायाम में शुरुआत में आपको थोडा कष्ट जरूर होगा। पिंडलियो और जांघों मे दर्द होगा पर दो-तीन दिन मे आदत पड जाने पर दर्द नहीं होगा। इस व्यायाम का समय धीरे धीरे बढ़ाए। ध्यान रहे उठते बैठते समय आपका शरीर पंजो के बल रहे।

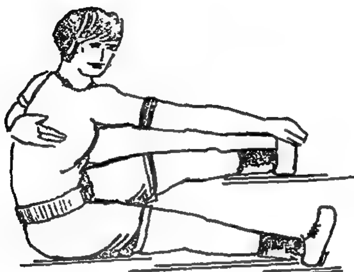
2 दूसरा व्यायाम—सीधे खडे होकर दोनों परों को आपस म

मिला लें। फिर बिना घुटने मोड़े कमर से झुककर हाथों से पैरों के अगूठों को छूने या पकड़ने की कोशिश करें। फिर हाथों को उसी अवस्था में उठाते हुए छाती के सामने लाते हुए सिर के ऊपर सीधे ले जाए। फिर दुबारा हाथों को इसी क्रम मे सामने लाते हुए नीचे ले आकर पैरो के अगूठे छुए। लगभग दस पंद्रह बार यह व्यायाम करें।



व्यायाम न० 2

3 तीसरा व्यायाम—जमीन पर बैठकर दोनों पैरों को सामने घुटने सीधे कर फैला लें। फिर पैरों को वी (V) की शक्ल में चौड़ा कर लें। उसके बाद कमर से शरीर को मोड़ते हुए हाथो से पैरों के अगूठे पकड़ने का प्रयत्न करें। शरीर को सामने झुकाते हुए सिर को जहां



व्यायाम नं० 3

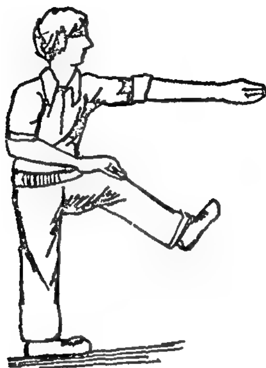
तक हो सके जमीन से छुआने की कोशिश करें। ध्यान रखें पैरों के घुटने मुड़ने न पाए।

यह व्यायाम भी थोड़ा कठिन है। हो सकता है पहले सिर जमीन पर न लग पाए या हाथ पैरों के अंगूठे न पकड़ पाए। पर धीरे धीरे कोशिश करिए।

4 चौथा व्यायाम—सीधे खड़े हो जाए। फिर जम्प लेकर पैरों को वी (V) की शक्ल में फैलाए। इसमें जम्प लेकर हाथ और पैरों को एक साथ फनाकर और फिर पहले जैसी स्थिति में लाए। इसे पी० टी० करना कहते हैं। इसे 20 25 बार करें।

5 पांचवां व्यायाम—जमीन पर एक ही स्थान पर पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए कमर तक एक के बाद दूसरा पैर जम्प लेते हुए लाए। जैसे दौड़ लगाते समय करते हैं। अर्थात् उछलते हुए एक ही स्थान पर दौड़ लगाने का अभ्यास लगभग पांच मिनट तक करें।





व्यायाम नं० ७

अंगुलियों को उस पैर की अंगुलियों से घुमाने की कोशिश करें। ध्यान रखें, पैर उछालते समय घुटने से मुड़ना नहीं चाहिए। इसी प्रकार बायां हाथ फैलाकर बायां पैर सामने उछालें और हाथ से छुआएं। ऐसा कई बार करें। इसमें शरीर के संतुलन का ध्यान रखें।

इसी व्यायाम को दूसरी तरफ से भी करें। यानी दायां हाथ सामने फैलाकर दायां पैर उछालकर छुआएं और बायां हाथ सामने फैलाकर दायां पैर उछालते हुए उससे छुआएं। श्वास प्रकृति में व्यायाम करें।

8 आठवां व्यायाम—सीधे खड़े होकर शरीर को पीछे की ओर कमर और घुटनो से मोड़ते हुए धनुषाकार मे झुकाए और ऊपर से हाथों को भी उसी दिशा मे लाते हुए पैर की ऐड़ियो को छूने की कोशिश करें। यह व्यायाम शरीर मे चुस्ती फुर्ती लाता है। इसे भी 10-15 बार करें।

इसके अलावा जम्प लेते हुए बैठक लगाना, दौड़ना, फुटबाल खेलना, तैरना, जम्प करना आदि व्यायाम हैं जिन्हें नियमित रूप से करने से खिलाड़ी विकेटकीपिंग के लिए फिट हो जाता है और उसमे स्टेमिना बढ़ जाता है तथा चुस्ती-फुर्ती के साथ मांस-पेशियो म लचक आती है।

डाइव लगाने का अभ्यास

विकेट कीपर के लिए डाइव लगाना जरूर आना चाहिए। डाइव दाए बाए या सामने की ओर लगायी जाती है। तेजी से आती गेंद को जब दौड़ लगाकर पकड़ना कठिन हो तो पजो के बल उछलकर डाइव लगाते हुए उस गेंद को रोका या कैच किया जाता है।

क्रिकेट में डाइव का बहुत महत्व है। केवल विकेटकीपर को ही नहीं सभी फील्डरों को डाइव लगाने का अच्छा खासा अभ्यास होना चाहिए। फील्डरों मे स्लिप पर खड़े फील्डरों को विशेष रूप से डाइव का इस्तेमाल करना पड़ता है।

तो आइये, डाइव सीखने के लिए कुछ प्रारम्भिक अभ्यास की बातें बताए ताकि बिना चोट खाये आसानी से डाइव लगा सकें। डाइव लगाने मे अक्सर सिर, कोहनियो या घुटनो पर चोट लग सकती है।

डाइव सीखने के लिए निम्न शारीरिक अभ्यास करें।

1 जमीन पर पजों के बल बैठें। फिर हाथों को आगे फैला लें। अब सिर को सामने झुकाते हुए आगे झुकें और हाथो को जमीन पर हथेली के बल टेक दें।

इसी प्रकार दाए बाए हाथ फैलाकर लुढ़कने का अभ्यास करें। पहले धीरे धीरे अभ्यास करें फिर तेजी से दाए बाए तथा सामने की ओर गिरकर हाथ सुरक्षित टेकने का अभ्यास करें।

अब बैठक से थोड़ा ऊपर उठकर इसी प्रकार तीनो ओर गिरते हुए हाथ जमीन पर टेकें। इस प्रकार धीरे धीरे ऊंचाई बढ़ाते हुए अभ्यास









डाइव लगाना सीखने का
पहला अभ्यास



डाइव लगाना सीखने
का दूसरा अभ्यास

पीछे लुढ़कना सीखने का प्रारंभिक अभ्यास। इसी तरह
करते करते लुढ़कने की ऊंचाई बढ़ाते जाएं।

अब इसी अभ्यास को कुछ इस प्रकार करें कि आप सामने या दाएं-बाएं डाइव तो लगाएं पर साथ ही उछलते वक्त शरीर को ऐसा मोड़ या झटका दें कि आप हमेशा पीठ की ओर से ही जमीन पर आएं। इस अभ्यास से आपके हाथ गेंद को पकड़ने के लिए खाली हो जाएंगे और जब हाथों को गेंद पकड़ने के लिए खाली रखना पड़ेगा तो जमीन पर सुरक्षापूर्वक गिरने के लिए किसका सहारा लेंगे। जाहिर है कुछ ऐसा परिवर्तन करना पड़ेगा जिससे सिर को तथा अंगों को चोट से बचाया जा सके।

उसके लिये सही तरीका है कि आप जिस ओर भी डाइव लगाएं

शरीर को कुछ ऐसा झटका अवश्य दें ताकि जमीन पर पीठ लगे तथा सिर ऊपर की ओर उठा रहे, पीठ के बल सुविधापूर्वक गिरा जा सकता है।

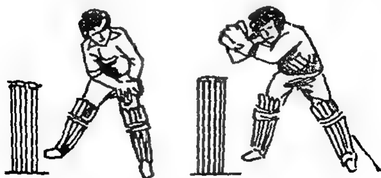
2. इसी प्रकार पंजों के बल बैठकर आगे की ओर झुककर पीछे (पीठ की ओर) की ओर लुढ़कें। ऐसे में आपकी पीठ गोलाई लिए हुए होगी, अत लुढ़कते समय चोट नहीं लगेगी। ऐसे मे हाथ ऊपर उठे रहने चाहिए और सिर छाती की ओर झुका हो ताकि जमीन पर गिरते समय वह जमीन से न टकरा सके। इस अभ्यास मे भी धीरे-धीरे लुढ़कने की गति बढ़ाते जाए।

इसी प्रकार दाए-बाए तरफ भी नितम्बों के बल लुढ़कने का अभ्यास करें।

3 अब अपने किसी साथी से गेंद आपकी ओर फेंकने को कहें। जैसे ही गेंद आपके पास से गुजरे, डाइव लगाकर उसे पकड़ने का अभ्यास कीजिये। गेंद अपने दाए-बाए पहले कुछ दूरी पर फिकवायें फिर थोड़ी-थोड़ी दूरी बढ़ाते जाए जिससे डाइव लगाने की हर स्थिति का अभ्यास आपको हो जाये।

इस प्रकार आप डाइव लगाने का अभ्यास कर विकेटकीपर के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुर सीख जाए तो समझ लीजिये, लगभग आधा काम हो गया।

अब आइए, विकेटकीपिंग की अन्य बुनियादी बातों पर विचार करें।



विकेट कीपर को गेंद को पकड़ने का ढंग

विकेटकीपर को विकेटों के पीछे ऐसे स्थान पर खड़ा होना चाहिए जहां से वह बल्लेबाज और गेंदबाज की हरकत को ध्यान से देख सके, साथ ही उसे दाएं-बाएं किसी भी ओर आने वाली गेंद को रोकने या पकड़ने में बाधा न हो।

उसे पैरों को घुटनों से मोड़कर, पंजों के बल खड़ा होना चाहिए और आगे की ओर झुके रहना चाहिए। दोनों हाथों को आगे कर गेंद को रोकने या पकड़ने के लिए झोली बनाकर सतर्कता से खड़े होना चाहिये। पंजों के बल खड़े होने से पैरों में स्प्रिंग जैसी लचक बनी रहती है और डाइव लगाने के लिए एकदम उछलने में दिक्कत नहीं होती। विकेटकीपर के खड़े होने की सही स्थिति को चित्र में देखिये। पैरों को उतना ही चौड़ा कर रखें जितने से खड़े होने में परेशानी न हो।

गेंदबाज की आरम्भिक हरकत, गेंद छूटने की स्थिति, गेंद की हवा में उड़ान, टप्पा खाने की स्थिति और गेंद के ब्रेक होने पर दिशा की स्थिति फिर बल्लेबाज की हरकत, उसके बल्ले का किस कोण में घुमाया जाना, शॉट लगने के बाद गेंद की दिशा और इसके बाद आपकी प्रतिक्रिया। इन सब पर विकेटकीपर की दृष्टि बराबर गड़ाये रहनी चाहिये तभी वह तेजी से उछलती हुई गेंद को नियन्त्रित कर सकता है।

तेज गेंदबाजी के समय विकेटकीपर को विकेटों से कुछ दूर खड़े होना चाहिये तथा धीमी गेंदबाजी के समय विकेटों के अपेक्षाकृत पास खड़ा होना चाहिये।

गेंद फिंकने से पहले ही विकेटकीपर को अपनी सतर्क मुद्रा में आ जाना चाहिये।

बल्लेबाज शॉट लगाते समय यदि पॉपिंग क्रीज से बाहर चला गया है तो विकेटकीपर को विशेष रूप से चौकन्ना हो जाना चाहिए। शॉट लगते ही यदि गेंद विकेटों के पीछे आये तो उसे तुरन्त नियन्त्रित कर *बल्लेबाज के पॉपिंग क्रीज में आने से पहले ही विकेटों पर मार देना चाहिये।*

बल्लेबाज के एल० बी० डब्ल्यू० आउट होने की स्थिति पर विकेट-कीपर की कड़ी नजर होनी चाहिये। यदि वह ऐसी स्थिति देखे तो तुरन्त अपील कर बल्लेबाज की स्थिति को एम्पायर को दर्शायें।

इस प्रकार फील्डिंग के क्षेत्र में विकेटकीपर का एक अपना विशेष महत्व होता है जिसे उसे जिम्मेदारी से निभाना चाहिये। विकेटकीपर

फील्डिंग की जान होता है । सब फील्डर उसी के एक्शन से धीरज पाते हैं । क्योंकि विरोधी टीम के रनों पर वही सबसे ज्यादा अंकुश लगा सकता है । बल्लेबाजों को आउट करने की अधिकतर आशा विकेटकीपर से ही होती है । या यों भी कह सकते हैं कि अधिकतर बल्लेबाजों को आउट करने में विकेटकीपर का किसी-न-किसी रूप में सहयोग होता ही है ।

पोशाक—विकेटकीपर को सिर पर हैट, हाथों में दस्ताने और पैरों पर लैग गार्ड पैड अवश्य पहनना चाहिये । जूते अच्छी क्वालिटी के लचकदार होने चाहिये । विकेटकीपर के पैड बल्लेबाज के पैडों से थोड़े हल्के और आरामदेह होने चाहिये । स्पंज की पट्टियों वाले पैड चलने और सुरक्षा की दृष्टि से भी उत्तम होते हैं । पेट के नीचे एब्डोमन गार्ड पहनना भी अत्यन्त आवश्यक है । कई विदेशी विकेटकीपर भी आजकल मुंह और सिर के बचाव के लिए हेलमेट का इस्तेमाल भी करते हैं जिसके सामने प्लास्टिक का पारदर्शी शीशा लगा होता है । यदि गेंद अचानक मुंह पर लग भी जाये तो यह प्लास्टिक की पट्टी बचाव कर देती है ।

अध्याय 8

अम्पायर का दायित्व

क्रिकेट के खेल में दो अम्पायर होते हैं जो खेल को नियमों के अनुसार चलाने का दायित्व लेते हैं। गेंदबाज के नियम उल्लंघन पर या बल्लेबाज को आउट देने का निर्णय अम्पायर ही लेते हैं।

खेल की उचित संचालन नीति का दायित्व अम्पायरों के जिम्मे होता है। उन्हें निष्पक्ष और सही निर्णय देने की घोषणा करने के लिए साहस और विवेक से काम लेना चाहिए।

अम्पायर को हमेशा ऐसे स्थानों पर खड़ा होना चाहिए जिससे वे खेल के हर क्षेत्र पर दृष्टि रख सकें। इसके लिए आदर्श स्थान होते हैं—पहला गेंदबाज के विकेट के पास खड़ा हो तथा दूसरा अम्पायर बल्लेबाज के लग साइड पर खड़ा हो तो ऐसी स्थिति में वे बल्लेबाज और गेंदबाज के प्रत्येक एक्शन और फील्ड के प्रत्येक क्षेत्र पर भी नजर रख सकते हैं।

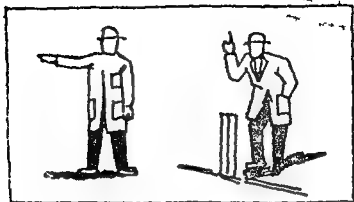
अम्पायर के कुछ विशेष संकेत होते हैं जिन्हें वह अपनी हाथों की विभिन्न मुद्रा से करता है ताकि उसकी इस मूक भाषा को दूर दूर बैठे दर्शक भी समझ सकें कि फील्ड में क्या हुआ।

यदि कोई खिलाड़ी अम्पायर के निर्णय का उल्लंघन कर आदेश नहीं मानता तो वह पहले टीम के कैप्टन से अनुरोध करता है कि वह उसे आदेश मानने के लिए कहे। यदि फिर भी प्रभाव न पड़े तो आयोजकों से कहकर खिलाड़ी को फील्ड से बाहर करवा सकता है।

अम्पायर को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि कोई खिलाड़ी पिच या मैदान को खराब तो नहीं कर रहा।

लगातार खतरनाक ढंग से फेंकी गई गेंदों के विरुद्ध अम्पायर गेंदबाज को चेतावनी दे सकता है। यदि वह उसके आदेश का पालन न करे तो वह उसके कप्तान से कहकर उसे आगे से गेंद न फेंकने देने का अनुरोध कर उसको गेंदबाजी से बेदखल कर सकता है।

नो बाल





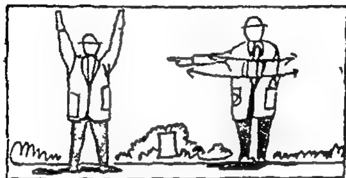
बाई लैगबाई

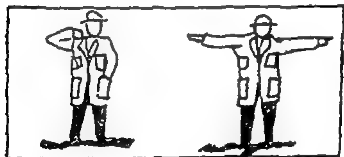
गेंद को चमकाने के लिए यदि कोई गेंद क्रीम या अन्य चिकना पदार्थ प्रयोग करता है तो अम्पायर उसके विरुद्ध कार्यवाहो कर उसे इस कृत्य से बॉलिंग करने से रोक सकता है।

नयी बॉल देने न देने का निणय भी अम्पायर पहली गेंद की स्थिति देखकर लेता है। गेंद बदलने के बारे मे दोनो अम्पायर आपस में सलाह करते हैं।

कोई बॉलर यदि बल्लेबाजी के लिए उतरता है तो नये नियम के अनुसार गेंदबाज उसे बाउंसर या बीमर क़िस्म की खतरनाक बॉल नहीं फेंक सकता, इसका निर्देश अम्पायर बॉलर को दे देता है।

छक्का चौका





शाट रन वाइड

बाउंसर या शाट पिच गेंदें यदि लगातार फेंकी जाती हैं तो अम्पायर पहले गेंदबाज को फिर कप्तान को इसे रोकने को कहता है। यदि तब भी प्रभाव न पड़े तो वह गेंद को डेड घोषित कर ओवर समाप्त कर देता है। अथवा गेंदबाज को गेंदबाजी न करने देने की सलाह कप्तान को देता है।

इस प्रकार से हटाया गया बॉलर फिर उस पारी मे दुबारा बॉलिंग नही कर सकता ।

इसी प्रकार अन्य सामान्य नियम भी अम्पायर के होते हैं जिन पर उसे विवेक से निर्णय देना चाहिए।

अम्पायर के सकेतो को चित्रो मे देखें और समझें ।

अम्पायर के इन सकेतों का ज्ञान प्रत्येक क्रिकेट खिलाडी तथा दर्शकों को होना चाहिए ताकि वे अम्पायर के निर्णय को समझ सकें और यह जान सकें कि फील्ड मे क्या हुआ ।

खिलाडी द्वारा की गई अपील पर अम्पायर को ध्यान देना चाहिए। यदि अपील उचित है तो अपील करने वाली टीम के पक्ष मे निर्णय देना चाहिए ।

क्रिकेट के नियम वाले भाग का सचालन भी अम्पायर द्वारा ही होता है । अन्तिम निर्णय वही देता है । अत वह अध्याय भी अम्पायर के दायित्व का भाग ही मानें ।

अध्याय 9

कप्तान की भूमिका

वैसे तो सभी खेलों में अपनी-अपनी टीम का एक कप्तान होता है और वह अपनी देख रेख में टीम को खिलाता है। परन्तु क्रिकेट खेल में कप्तान की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है, इस खेल में कप्तान को लगातार सक्रिय रहना पड़ता है। उसे हर पल का ध्यान रखना पड़ता है, पल पल पर उसे अपनी योजना को खेल के रुख के अनुसार बदलना पड़ता है। इसमें कहीं भी जरा सी चूक हुई की बाजी पलट गई समझिये।

विरोधी टीम के बल्लेबाजों को आउट करने या उन पर अंकुश लगाने के लिए किस प्रकार के गेंदबाज से किस तरह की गेंदें फिंकवाना, फील्डिंग की जमावट का हर ओवर पर ध्यान रखना, विरोधी बल्लेबाजों के मनोभावों और कमजोरियों का पता कर उसके अनुसार व्यूह रचना कर पैंतरा बदलना, अपने बल्लेबाजों को किस क्रम से भेजना, समय की नजाकत को देखते हुए उनसे टाइम पास करने के लिए सुरक्षात्मक ढंग से खिलाना या फिर धड़ल्ले से रन बनाने का आग्रह करना, यदि मैच में जीत के आसार खत्म हो गए हों तो मैच ड्रा करवाने के लिए उसी ढंग से बल्लेबाजी करवाना आदि महत्वपूर्ण मुद्दों को कप्तान ही जिम्मेदारी से निभाता है।

हार-जीत का फैसला जितना अच्छी बल्लेबाजी या गेंदबाजी पर निर्भर होता है, उतना ही कप्तान की कार्यकुशलता और रण-नीति पर भी निर्भर होता है। कहा जाता है कि 'क्रिकेट चांस का खेल' है पर फिर भी उत्कृष्ट खेल और रणनीति का आयोजन करते हुए कप्तान दल का

का रुख बदल सकता है। यहा गावस्कर का उदाहरण दिया जा सकता है अब तक 47 टेस्ट मैचो मे भारतीय टीम का नेतृत्व करते हुए अपनी कुशल खेल रणनीति से यह साबित कर दिया कि हार को ड्रा मे और ड्रा होते मैच को जीत मे कैसे बदला जा सकता है। उन्होने कुल 47 टेस्ट मैचों मे कप्तानी की जिसमे 9 टेस्ट जीते, 8 हारे और 30 टेस्ट बराबर रहे।

कप्तान की खूबिया

एक कुशल क्रिकेट कप्तान को विरोधी टीम के प्रत्येक खिलाडी की खूबियो और कमजोरियो से वाकिफ होना चाहिए ताकि वह उनकी कमजोरियो से फायदा उठा सके और खूबियो को दबा सकने की नीति अपना सके।

वैसे तो कप्तान का निर्णय करने का अधिकार होता है पर एक कुशल कप्तान को टीम के वरिष्ठ या हर उस खिलाडी से भी सलाह लेनी चाहिये जो उचित बात कर रहा हो। ऐसे सहृदय कप्तान टीम का लबे समय तक चहेता बना रहता है और अपने खिलाडियो से इज्जत और सम्मान पाता है।

संकट के समय कप्तान को अपना हौसला बुलद रखना चाहिए ताकि टीम के खिलाडियो का मनोबल न टूटने पाय और वे अंत तक अपने खेल का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहें।

कप्तान मे यदि अभिमान, अकड या सदैव अपनी ही नीति चलाने की प्रवृति रहती वह टीम का कुशल नेतृत्व नही कर सकता।

खिलाडी की प्रकृति के अनुसार कप्तान का क्षेत्रिण की जमावट का गहरा अनुभव होना चाहिए तभी वह कुशल नेतृत्व प्रदान कर सकता है।

विरोधी टीम का यदि कोई बल्लेबाज जमकर खेल रहा हो तो कप्तान को उसकी कमजोरियों पर पैनी दृष्टि रखनी चाहिए और उनसे कमजोरियों के पता लगते ही उनसे फायदा उठाने वाले बॉलर को बॉलिंग देकर उक्त कमजोरियों से अवगत करा देना चाहिए।

कप्तान को विशेषत क्षेत्र रक्षण की व्यूह रचना का पर्याप्त अनुभव होना चाहिए। उसकी असली परख इसी मौके पर होती है।

कप्तान को इतना दूरदर्शी अवश्य होना चाहिए कि वह पारी समाप्ति की घोषणा जैसे जोखिम को सफलतापूर्वक उठा सके और उसके मुताबिक खेल नीति अपना सके।

कप्तान का व्यवहार अपने सहयोगियों से मधुर और नम्र होना चाहिए ताकि टीम में एकता कायम रह सके। टीम की एकता ही उसे सुदृढ़ बनाती है।

ये कुछ उपयुक्त गुण क्रिकेट कप्तान में होने अति आवश्यक हैं तभी वह टीम का कुशल नेतृत्व कर अच्छे से अच्छा प्रदर्शन अपनी टीम से करवा सकता है। कप्तान टीम की रीढ़ होती है जिस पर पूरी टीम अवलम्बित होती है।

भारत के टेस्ट कप्तान

भारत ने सन् 1932 में अपना पहला टेस्ट मैच इंग्लैंड में लार्ड्स में खेला था। जिसमें भारत की हार हुई पर उसका खेल की दृष्टि से प्रदर्शन सराहनीय था। तब से लेकर अब तक भारत कुल 246 टेस्ट मैच अन्य देशों के विरुद्ध खेल चुका है, इन टेस्टों का नेतृत्व 21 कप्तानों द्वारा किया गया।

भारत के प्रथम क्रिकेट कप्तान सी० के० नायडू थे। इन 21 कप्तानों में सबसे सफल कप्तान सुनील गावस्कर को माना जाता है। भारतीय क्रिकेट टीम का सबसे अधिक नेतृत्व भी सुनील गावस्कर ने किया।

भारतीय टेस्ट कप्तानों का पूर्ण ब्यौरा अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका से ज्ञात हो जाएगा—

क्रम सं०	कप्तान	टेस्ट	जीते	हारे	बराबर
1	सी० के० नायडू	4	0	3	1
2	महाराजा विजयनगरम	3	0	2	1
3	इफ्तिखारअलीखां पटौदी	3	0	1	2
4	लाला अमरनाथ	15	2	6	7
5	विजय हजारे	14	1	5	8
6	वीनू माकड़	6	0	1	5
7	गुलाम अहमद	3	0	2	1
8	पॉली उम्रीगर	8	2	2	4
9	हेमू अधिकारी	1	0	0	1
10	दत्त गायकवाड़	4	0	4	0
11	पंकज राय	1	0	1	0
12	जी० एस० रामचंद्र	5	1	2	2
13	नरी कान्ट्रेक्टर	12	2	2	8
14	मंसूर अलीखां पटौदी	40	9	19	12
15	चंदू बोर्डे	1	0	1	0
16	अजीत वाडेकर	16	4	4	8
17	श्रीनिवास वेंकटराघवन	5	0	2	3
18	सुनील गावस्कर	47	9	8	30
19	बिशनसिंह बेदी	22	6	11	5
20	गुंडप्पा विश्वनाथ	2	0	1	1
21	कपिलदेव	34	4	7	23

अध्याय-10

क्रिकेट में महिलाएं भी पीछे नहीं

इस बात का इतिहास साक्षी है कि महिलाओं ने उन सब कार्यों को भी अछूता नहीं छोड़ा जिन्हें उनके लिए असंभव माना जाता था। युद्ध राजनीति, कुश्ती, पर्वतारोहण तैराकी, तलवारबाजी गोताखोरी, हवाई उड़ान, कार रेसिंग, कोई भी विधा ऐसी नहीं छोड़ी जिसे वे न कर सकने के लिए अक्षम हों।

तो फिर क्रिकेट तो उनके लिए कोई खास माने नहीं रखता। अन्य साहसी खेलों के साथ जिन्हें पुरुष के ही बूते का माना जाता था, क्रिकेट को भी महिलाओं ने अपनाकर यह साबित कर दिया कि वह अब पुरुषों से किसी भी रूप में पीछे नहीं हैं।

क्रिकेट जैसे मर्दाने खेल को संभवत पहले इंगलैंड की महिलाओं ने अपनाया। कटु आलोचनाओं और व्यंग्यों के बीच भी महिलाओं ने क्रिकेट खेल खेलने के अपने उत्साह को बनाए रखा।

सबसे पहला महिला क्रिकेट मैच 27 जुलाई 1945 को ब्रामले और हैवलीटन की महिला टीमों के बीच खेला गया। यह मैच हजारों दर्शकों ने देखा और सराहा। इस मैच में हैवलीटन ने 127 तथा ब्रामले की महिला टीम ने 119 रन बनाए।

इस प्रकार धीरे धीरे सारे इंग्लैंड में महिला क्रिकेट लोकप्रिय होता गया।

11 जुलाई 1788 को केले ग्रीन में सरे की दो महिला क्रिकेट टीमों में मच खेला गया जिसमे एस मारकास नामक खिलाड़िन ने सबसे पहला शतक ठोका। उसने 107 रन बनाए थे। उस समय प्राय: मैच विवाहित तथा अविवाहित महिला टीमों के बीच खेले जाते थे।

सन् 1887 में पहले महिला क्रिकेट क्लब की स्थापना हुई जिसका नाम था 'व्हाइट हैदर'। शुरुआत में इसमें केवल 8 सदस्याएं थीं। दो

तीन वर्षों मे ही यह सख्या बढ़कर 50 से ऊपर हो गई। इस क्लब की सबसे प्रसिद्ध खिलाड़िन थी—लूसी रिडसडेल।

सन् 1890 मे महिला क्रिकेट को पुणरूप से स्वीकृति और जन समर्थन प्राप्त हुआ तथा उसे व्यावसायिक रूप देने की योजना बनाई गई। इसके लिए 'दि ओरिजिनल इग्लिश लेडी क्रिकेटर्स' नामक एसोसिएशन का गठन किया गया।

इस बीच आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि मे भी महिलाओ ने क्रिकेट खेल मे रुचि लेना और मैच खेलना प्रारम्भ कर दिया।

सन 1934 35 मे इग्लैंड की एक महिला क्रिकेट टीम ने आस्ट्रेलिया की महिला टीम के निमत्रण पर आस्ट्रेलिया का दौरा किया। इस दौरे मे इग्लैंड की टीम ने तीन टेस्ट मैच तथा 11 गौ मैच खेले। आस्ट्रेलिया से यह टीम न्यूजीलैंड पहुची।

न्यूजीलैंड मे केवल एक टेस्ट मैच खेला गया जिसे इग्लैंड ने ही जीता। आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हुए इग्लड ने 2 टेस्ट मैच तथा 7 गौ मैच जीते।

1935 मे महिला क्रिकेट को ओवल मे खेलने की अनुमति भी मिल गई। 1937 मे आस्ट्रेलिया की महिला टीम ने भी इग्लैंड का दौरा किया और कई मैच खेले।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान महिला क्रिकेट की छवि कुछ धुधली पड गई। पर युद्ध के बाद फिर इसने जोर पकड़ा और 1948 मे इग्लैंड की महिला टीम आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे पर गई। आस्ट्रेलिया मे इसने 19 मे से 11 मैच जीते, एक में हार हुई तथा सात मैच बराबर रहे। न्यूजीलड मे आठ में से छह मैचो मे इग्लैंड की टीम विजयी रही।

1951 मे महिला क्रिकेट सघ ने रजत जयती मनाई। इस वर्ष न्यूजीलैंड की टीम ने इग्लैंड का दौरा किया। इस मौके पर आस्ट्रेलिया की टीम को भी निमत्रित किया गया।

1969 मे इग्लड के क्रिकेट सगठन ने एक पचवर्षीय विकास योजना की शुरुआत की। योजना के अन्तर्गत कई तरह के सुधार और मैचो के आयोजन किए गए।

तब से लेकर आज तक महिला क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ती ही गई। और आज इग्लड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलड, वेस्टइडीज तथा भारत आदि ने महिला क्रिकेट को बढावा देने के लिए निरन्तर टस्ट मैचो

का आयोजन करने का दृढ़ निश्चय कर अपना विशेष योगदान दिया है।

1973 मे विश्व प्रतियोगिता के आयोजन से महिला क्रिकेट की नीव पुख्ता हो गई। इस प्रतियोगिता मे आस्ट्रेलिया, जमैका, न्यूजीलैंड, ट्रिनीडाड, इग्लैंड तथा अन्तर्राष्ट्रीय एकादश आदि टीमों ने भाग लिया। फाइनल मे इग्लैंड और आस्ट्रेलिया का मुकाबला हुआ जिसमे इग्लैंड ने 92 रन से विजय प्राप्त की।

भारत मे महिला क्रिकेट

भारत मे सबसे पहले क्रिकेट की शुरुआत आस्ट्रेलिया की एक स्कूल अध्यापिका ने की जिसका नाम था—एम केलीव ने 1913 मे उन्होंने अपने स्कूल मे महिला क्रिकेट टीम बनाई। लेकिन उनके प्रयोग को उस समय प्रोत्साहन नही मिला। पर क्रिकेट खेल की लोकप्रियता को महिलाओं मे क्रिकेट के प्रति रुचि तो बढ़ ही रही थी और यदा-कदा छात्राए क्रिकेट स्कूल और कालेज स्तर पर खेलने लगी।

सन् 1973 मे 'राष्ट्रीय महिला क्रिकेट सगठन' की स्थापना हुई। इसी वर्ष पूना में पहली राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता मे पाच राज्यो की महिला क्रिकेट टीमो ने भाग लिया। महाराष्ट्र और बम्बई की टीमों [redacted] बीच फाइनल मुकाबला हुआ। इसमें बम्बई की टीम ने विजय प्राप्त की।

1975 में आस्ट्रेलिया की महिला टीम भारत आई। आस्ट्रेलिया ने भारत के साथ तीन टेस्ट मैच खेले। इन टेस्ट मैचों मे भारी भीड़ हुई। पहले टेस्ट के लिए उज्ज्वला निगम, दूसरे के लिए सुधा शाह और तीसरे टेस्ट के लिए श्रीरूपा बोस को कप्तान बनाया गया। इस श्रृंखला में शांता रगास्वामी भी आलराउण्डर के रूप में उभर कर आई। वह भारतीय महिला क्रिकेट की एक आधार स्तम्भ बन गई। भारत की ओर [redacted] उसने शतक जमाया।

1976 मे न्यूजीलैंड की महिला क्रिकेट टीम भारत आई। इसमें पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला म न्यूजीलैंड 1—0 से जीती। चार मच ड्रा रहे। इन दोनों मचो से महिला क्रिकेट को बडी लोकप्रियता मिली। सभी मचों का रेडियो से आखों देखा हाल प्रसारित किया गया। अभी

तक अन्य किसी देश ने आंखो देखा हाल प्रसारित नहीं किया था।

1976-77 में वेस्टइंडीज की टीम ने छह टेस्ट मैच भारत में खेले। वेस्टइंडीज और भारत 1—1 से बराबर रहे।

1977 मे भारत की महिला टीम पहली बार न्यूजीलैंड के दौरे पर गई। यहां केवल एक टेस्ट हुआ जो बराबर रहा। फिर आस्ट्रेलिया से एक टेस्ट मैच हुआ जिसमे आस्ट्रेलिया की टीम विजयी रही।

भारत की शांता रंगास्वामी एक अव्वल दर्जे की आलराउन्डर हैं। डायना ऐडलजी, शर्मिला चक्रवर्ती तथा राजेश्वरी ढोलकिया तीनो ही बाएं हाथ की गेंदबाज हैं। डायना मध्यम तेज तथा स्पिन दोनों प्रकार की बॉलिंग करने मे माहिर है। फोजिया खलीली श्रेष्ठ विकेटकीपर के साथ-साथ एक अच्छी बल्लेबाज भी है।

1977 मे आई वेस्टइंडीज टीम के साथ मैच खेलने के दौरान ही शांता रंगास्वामी ने अपने जीवन के एक हजार रन पूरे कर भारतीय महिला क्रिकेट इतिहास के स्वर्ण युग की शुरूआत की।

भारत में 'रानी झांसी ट्राफी तथा 'इंदिरा प्रियदर्शिनी ट्राफी' मैचों का प्रारम्भ हो गया। इन दोनो टूर्नामेंटो मे देश के विभिन्न क्षेत्रों से महिला क्रिकेट टीमे आकर भाग लेती हैं।

1977 78 मे भारत मे महिला क्रिकेट विश्व कप का भी आयोजन किया गया।

विश्व क्रिकेट मे भारत का प्रदर्शन सबसे ज्यादा निराशाजनक रहा। दस देशों से स्वीकृति मिलने के बावजूद इसमे केवल आस्ट्रेलिया, इग्लैंड, न्यूजीलैंड और भारत ने ही भाग लिया।

कलकत्ता मे इग्लैंड भारत के मध्य हुए मैच मे भारत कुल 63 रन बनाकर ही आउट हो गया जबकि इग्लैंड ने एक विकेट खोकर 65 रन बनाकर मैच 9 विकेट से जीता।

पटना मे हुए भारत न्यूजीलैंड के मध्य हुए मैच मे भी भारत को लगभग इसी अन्तर से पराजय का मुह देखना पड़ा। निराशाजनक प्रदर्शन कहने का कारण यह है कि पिछले मैचो में भारत ने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा वेस्टइंडीज की टीमों से लगभग बराबरी की टक्कर ली थी और उसका प्रदर्शन काफी आशाजनक रहा था।

इस निराशाजनक प्रदर्शन का एक मूल कारण यह बताया गया कि

भारतीय क्रिकेट खिलाड़िनें अपने व्यवस्थापकों से काफी नाखुश थीं। विमेंस क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ इंडिया की बागडोर केवल एक ही व्यक्ति के हाथ में थी जो अपनी सनक और हठवादिता के लिए मशहूर हैं। उनका रवैया खिलाड़िनों के साथ कभी सहयोगी भावना का नहीं रहा। सुविधाओं के नाम पर उन्हें हर जगह तकलीफें उठानी पड़ीं।

प्रसिद्ध आलराउण्डर शांता रंगास्वामी ने जब 'पैकर सकस' का स्वागत किया और उसे खिलाड़िनों का सबसे बड़ा हितचिंतक कहा तो व्यवस्थापक महोदय ने 1978 के विश्व कप की तयारी की पटियाला शिविर में उसे आमंत्रित नहीं किया। कुछ अन्य खिलाड़िनों के साथ भी वैसा ही सलूक किया गया। कुछ खिलाड़िनों को तो अपनी सनक के वशीभूत हो उन सज्जन ने शिविर से वापस चले जाने को कहा।

यदि खिलाड़ी कोई अपनी निजी राय जाहिर करता है तो उसके लिए उसे दंडित किया जाना कहां तक न्यायसंगत है। तभी से महिला क्रिकेट में एक बेचैनी और तनाव सा आ गया जिससे बहुत-सी अच्छी क्रिकेट खिलाड़िनों को समय से पहले ही अस्त हो जाना पड़ा जबकि वे देश के लिए एक उगता हुआ सूरज साबित हो रही थीं।

महिला क्रिकेट एसोसिएशन का कार्यभार किसी महिला को ही संभालते रहना चाहिए।

अध्याय-11

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की स्थापना बड़े अजीबोगरीब ढंग से हुई।

'बोर्ड की स्थापना मे महाराजा पटियाला, महाराजा विजयनगरम उर्फ 'विज्जी', नवाब भोपाल, महाराजा इंदौर, यातायात कम्पनी (इंग्लैंड) के मालिक आर० ई० ग्रांट गोवन और कम्पनी के महाप्रबंधक ऐंथनी डिमैलो का प्रमुख हाथ रहा है।

परन्तु इनमें भी सबसे प्रमुख भूमिका दो व्यक्तियों ने निभाई, जिनके अथक परिश्रम के बल पर ही आज बोर्ड इस सुदृढ़ स्थिति में विद्यमान है—वे हैं ऐंथनी डिमैलो तथा महाराजा पटियाला।

बोर्ड का लगभग पूरा ढांचा ऐंथनी डिमैलो ने तैयार किया था। भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट की पंक्ति मे बैठाने का कार्य भी ऐंथनी द्वारा ही हुआ था।

बोर्ड को स्वीकृति प्रदान तभी की जा सकती थी, जब विभिन्न प्रदेशों के कम-से कम दस क्रिकेट संगठन इसके सदस्य होते। यह महत्वपूर्ण और पेचीदा कार्य भी ऐंथनी ने प्रदेशों में घूम घूमकर किया, क्योंकि आपसी रंजिश, छोटे बड़े का भेदभाव, भाई भतीजावाद, ईर्ष्याभाव आदि के कारण संगठनों का गठन नहीं हो पा रहा था। डिमैलो ने इस क्षेत्र में भी अपना सराहनीय योगदान दिया और जगह-जगह संगठन कायम करवाए। महाराज विजयनगर उर्फ विज्जी ने भी इस दिशा में काफी सहयोग दिया। वे स्वयं एक अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी, कमेंटेटर और क्रिकेट संचालक थे। क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की स्थापना और गठन के सम्बन्ध में भारतीय राजघरानों की भी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड राजघरानों की छाया से निकलकर औद्योगिक घरानों के नियन्त्रण में आ गया। इसमें प्रमुख

नाम हैं एम० ए० चिदम्बरम, मफतलाल, ए० सी० पी० टाटा, निरलान का। कई बैंकों ने भी खिलाड़ियों के हित के लिए और बढ़िया प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहन के लिए अपना सहयोग दिया। इससे खिलाड़ियों का मनोबल काफी बढ़ा और वे आर्थिक दृष्टि से बेफिक्र होकर अच्छा प्रदर्शन करने के प्रयत्न करने लगे।

भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के सदस्यों की संख्या भी दिनों दिन बढ़ने लगी—और वह पूर्ण रूप से परिपक्व हो गया। अब बोर्ड का ध्यान खिलाड़ियों के हित के लिए, बढ़िया प्रदर्शन, उनके अभ्यास के नवीनतम साधन जुटाकर खिलाड़ियों की पूरी तरह से देख रेख करने लगा।

बोर्ड की कई त्रुटियों को दूर किया गया ताकि अपने तहत रहने वाले खिलाड़ियों को वह सुदृढ़ निर्देशन दे सके। भारतीय क्रिकेट में बोर्ड ने अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। उसने स्कूल व कालिज में भी क्रिकेट खेल को बढ़ावा देने में पूर्ण सहयोग दिया।

बोर्ड द्वारा संचालित 'सी० के० नायडू चैम्पियनशिप' में स्कूल के 22 वर्ष से कम उम्र के खिलाड़ियों को देखने का मौका मिलता है। इसी वर्ग में 'कूच बिहार ट्रॉफी' भी आती है।

इसी तरह 14 वर्ष से कम आयु के किशोर खिलाड़ियों को 'विजय मर्चेंट ट्रॉफी' में खेलने का मौका मिलता है। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन से देश को नये प्रतिभावान खिलाड़ियों को चुनने का मौका मिलता है।

गावस्कर, किरमानी, कपिलदेव, करजन घावरी आदि खिलाड़ियों पर बोर्ड की नजर स्कूली प्रतियोगिताओं में ही पड़ गई थी और उसने इन्हें अपनी देखरेख में प्रशिक्षित करना और प्रोत्साहित करना आरम्भ कर दिया।

इस समय बोर्ड के पांचों क्षेत्रों—मध्य, उत्तर दक्षिण और पूर्व, पश्चिम में एक-एक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रशिक्षक नियुक्त हैं। मुख्य राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी हेमू अधिकारी हैं। इन अनुभवी प्रशिक्षकों से नये प्रतिभावान खिलाड़ियों को उच्चकोटि का तकनीकी ज्ञान प्राप्त होता है।

क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड का हर साल गठन किया जाता है और मतदान प्रणाली से पदाधिकारियों का चुनाव होता है। रणजी ट्रॉफी खेलने वाले सभी राज्य, रेलवे क्रिकेट क्लब, सेना के क्रिकेट क्लब, कलकत्ता और

यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड आदि के प्रतिनिधि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पदाधिकारियों को चुनते हैं।

क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को अम्पायर समिति अम्पायरों को प्रशिक्षित कर प्रथम श्रेणी और टेस्ट मैचों में अम्पायरशिप करने के लिए तैयार करती है। इस प्रकार बोर्ड का गठन पूर्ण रूप से लोकतान्त्रिक प्रणाली से होता है।

भारतीय राष्ट्रीय टीम के खिलाड़ियों का चुनाव भी बोर्ड की चयन समिति द्वारा होता है।

चयन दो पहलुओं पर ध्यान रखकर किया जाता है। पहला खिलाड़ी के 'फॉर्म' को मद्दे नजर रखकर, दूसरा खिलाड़ी के 'क्लास' को दृष्टि रखते हुए। खिलाड़ी फार्म में है या नहीं, इसका पता तो उसके ताजे आंकड़ों से चल जाता है। खिलाड़ी की बल्लेबाजी का औसत 50 रन से ज्यादा होना चाहिए तभी वह दृढ़ बल्लेबाज माना जाता है। इसी प्रकार गेंदबाज एक पारी में तीन या चार से ज्यादा विकेट कम-से कम रन में प्राप्त करे वही अच्छे स्तर का गेंदबाज हो सकता है। दूसरे 'क्लास' खिलाड़ी चुनने के लिए चयन समिति की दृष्टि बड़ी पैनी होनी चाहिए।

अब हम आपको बोर्ड के वर्तमान सदस्यों तथा बोर्ड की वर्तमान समितियों के बारे में बताएंगे। साथ ही बोर्ड के पदाधिकारियों के वर्ग भी।

बोर्ड में एक अध्यक्ष, चार उपाध्यक्ष, मानद सचिव, संयुक्त सचिव कोषाध्यक्ष होते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में इस समय दस समितियां हैं जो निम्न प्रकार हैं—

1 कार्यकारिणी समिति—यह समिति बोर्ड के दैनिक कार्यों की देखभाल करती है तथा बोर्ड की व्यापक नीतियों पर निर्णय लेती है। बोर्ड के अध्यक्ष इस समिति के चेयरमैन होते हैं। बोर्ड के कोषाध्यक्ष तथा संयुक्त सचिव इसके सदस्य होते हैं। बम्बई क्रिकेट एसोसिएशन, क्रिकेट आफ बंगाल तथा तमिलनाडु एसोसिएशन कार्यकारिणी के स्थाई सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त पांच अन्य क्षेत्रों तथा छह टेस्ट सेन्टरों से एक एक प्रतिनिधि भी समिति का सदस्य होता है। कहने का तात्पर्य— कार्यकारिणी समिति में हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व होता है।

2 चयन समिति—बोर्ड द्वारा आयोजित विविध क्रिकेट मैचों के लिए टीम का चुनाव करती है। इस समिति में पांचों क्षेत्रों—मध्य,

पश्चिम तथा उत्तर, दक्षिण से एक-एक प्रतिनिधि चुना जाता है। उन्हीं में से एक को चेयरमैन चुन लिया जाता है।

3 सहायतार्थ कोष समिति—इस समिति का कार्य कोष जमा करना और उसके वितरण की नीति निर्धारित करना है। बोर्ड के अध्यक्ष ही इसके चेयरमैन होते हैं। इसके अतिरिक्त कोषाध्यक्ष तथा फतेहसिंह गायकवाड़ और ए० एन० घोष इस समिति के ट्रस्टी हैं। चार अन्य सदस्य भी हर साल चुने जाते हैं जो किसी भी अन्य एसोसिएशन के हो सकते हैं।

4 तकनीकि समिति—यह समिति क्रिकेट नियमों के बारे में स्पष्टीकरण देती है अथवा परिवर्तित नियमों को एम० सी० सी० से प्राप्त कर उन्हें लागू करती है। इसमें पाँचों क्षेत्रों—उत्तर, दक्षिण, मध्य और पूर्व, पश्चिम से एक एक प्रतिनिधि तथा एक अतिरिक्त चेयरमैन होता है।

इन नियमों को बोर्ड के सभी सदस्य प्रदेशों के क्लबों तक लागू करना और उसकी पूरी जानकारी देना इस समिति का मुख्य कार्य है।

5 रणजी ट्रॉफी समिति—रणजी ट्रॉफी के टूर्नामेंटों के सुचारु रूप से सचालन का कार्य इस समिति के जिम्मे होता है। बोर्ड के अध्यक्ष इस समिति के चेयरमैन तथा हर क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि इसका मेम्बर होता है।

6 विजी ट्राफी समिति—यह समिति 'विजी ट्रॉफी' मचों (महाराजा विजयनगरम) के आयोजन का सचालन करती है। इस समिति मे मे भी बोर्ड के अध्यक्ष चेयरमैन तथा प्रत्येक क्षेत्र का एक एक प्रतिनिधि सदस्य होता है।

7 प्रशिक्षण समिति—क्रिकेट के नये प्रतिभावान खिलाडियों को प्रशिक्षण देने का कार्य यह समिति करती है। इस समिति के अन्तर्गत प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, नये खिलाडियों की खोज तथा टीम को किसी टूर्नामेंट मे भेजने से पूर्व उसकी शारीरिक क्षमता का विकास करना भी इस समिति का कार्य है। इसमें भी पाँचों क्षेत्रों का एक एक प्रति निधि तथा एक अतिरिक्त चेयरमैन होता है।

8 कार्यक्रम निर्धारण समिति—इस समिति का कार्य टूर्नामेंट के आयोजन की तारीखें और स्थान चुनना है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय (टेस्ट मैच) मचों के आयोजन की तिथियों का ख्याल इस समिति को

रखना पड़ता है। इस समिति के चेयरमैन भी बोर्ड के अध्यक्ष होते हैं तथा बोर्ड के सदस्य एसोसिएशन से ही सात प्रतिनिधि चुन लिए जाते हैं।

9 अम्पायर समिति—इस समिति का कार्य विभिन्न मैचों के लिये अम्पायर नियुक्त करना, उनकी परिक्षाएं आयोजित करना तथा उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करना है। इस समिति में पांचों क्षेत्रों के एक एक सदस्य तथा एक अतिरिक्त चेयरमैन प्रतिनिधि होता है।

10 सांख्यिकी समिति—इस समिति का काम विभिन्न मैचों में खिलाड़ियों द्वारा बनाये या तोड़े गए कीर्तिमानों तथा आंकड़ों का संकलन करना होता है। इन आंकड़ों और कीर्तिमानों का रिकार्ड रखने का मुख्य काम इस समिति द्वारा होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त दस समितियां अपने-अपने कार्यों का कुशलता से निर्वाह कर क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के कार्य संचालन में सहयोग देती हैं। बोर्ड की सफलता का दारोमदार अधिकतर इन समितियों पर ही निर्भर होता है।

अध्याय-12

क्रिकेट के कुछ शब्दार्थ

क्रिकेट एक ऐसा खेल है जिसे जानने वाले या न जानने वाले दो ही प्रभावित रहते हैं। कमेंट्री के दौरान जब कमेंटेटर कुछ ऐसे श का उच्चारण करता है जो कमेंट्री सुनने वाले की समझ से बाहर हो उसका आधा मजा वहीं किरकिरा हो जाता है। बहुत से लोग ऐसे श के नाम से तो परिचित होते हैं पर उसके सही अर्थ का नहीं जानते।

पर सही बात तो यह है कि यदि आपको किसी खेल से प्यार और आप उसे खेलने या देखने का शौक रखते हैं तो आपको उस खेल एक एक बात से पूरी तरह परिचित होना चाहिए ताकि खेल का स आनन्द उठाया जा सके।

एक बार मेरे सामने ही ऐसा हास्यस्पद वाकया पेश हुआ। हुआ कि एक सज्जन क्रिकेट कमेंट्री सुन रहे थे। तभी कमेंटेटर की आवा सुनाई दी, 'और इस तरह बल्लेबाज को दो रन बाई के प्राप्त हुये बाई का नाम सुनते ही पास खड़े उनके लड़के ने पूछा— पिताजी, बाई क्या करता है ?'

पिताजी तपाक से बोले—'बाई वो होता है जिसमे बल्लेबाज व रन मिल जाते हैं।'

तो आप ऐसी हास्यास्पद स्थितियों का शिकार होने से बचिए औ क्रिकेट की हर बात, हर अदा से परिचित होकर उसका वास्तवि आनन्द लीजिए।

तो आइये, कुछ ऐसे प्रचलित शब्द जो क्रिकेट के नियमों, बल्लेबाजी गेंदबाजी या क्षेत्र रक्षण से सम्बन्धित हैं, उनका संक्षिप्त अर्थ आपक बताए।

आउट स्विंगर—हवा मे तैरती हुई वह गेंद जो बल्लेबाज के लै साइड की ओर से उसके आफ साइड की ओर कटती है, आउट स्विंग कहलाती है।

स्टोन वॉलिंग—रक्षात्मक ढग से खेलने वाला वह बल्लेबाज जिसका उद्देश्य रन बनाना नहीं बल्कि समय काटना होता है।

सन्ड्रीज—अतिरिक्त रनो के लिए जैसे 'एक्स्ट्रा' शब्द का प्रयोग किया जाता है उसी तरह आस्ट्रेलिया मे 'सन्ड्रीज' शब्द का प्रयोग किया जाता है, अर्थ दोनो का एक ही है।

पराग़र—उस बल्लेबाज के लिए व्यग्य रूप में इस्तेमाल होता है, जो बल्लेबाजी तो करता है पर रन बनाने का जोखिम नही उठाना चाहता।

लांग हॉप—खराब लैग्थ की गेंद जिसका टप्पा ऐसी कम दूरी पर आकर पडता है कि बल्लेबाज को आगे डग भर कर उस पर भरपूर प्रहार करने का मौका मिल जाता है।

नेल्सन—जब बल्लेबाज को गेंद फेंकने वाले गेंदबाज की केवल उठती बांह दिखाई देती है तो इसे नेल्सन कहा जाता है। नेल्सन दर-असल एक एडमिरल का नाम था जिसकी एक आख और एक बाह थी। उसी के आधार पर गेंदबाज की जब पीछे की बाह न दिखकर गेंदवाली उठी बाह दिखती है तो ऐसी स्थिति को नेल्सन कहा जाता है।

एंकर मैन—वह बेटसमैन जो रन बनाने की कोशिश मे नही रहता बल्कि किसी तरह वह मैदान मे टिका रहे जबकि उधर उसका साथी जोखिम उठाकर भी रन बनाने की कोशिश मे लगा रहता है।

चाइनीज कट—बल्लेबाज के बल्ले स गेंद छूती हुई उस दिशा की ओर नहीं जाती जिधर वह खिलाडी उसे पहुचाना चाहता था।

हैरो ड्राइव—ऐसा शॉट जिसके मारने से गेंद उस स्थान पर गिरे जहा उसकी कतई उम्मीद नहीं थी।

किंग पेयर—जब कोई बल्लेबाज किसी मैच की दोनो पारियो में पहली ही गेंद पर आउट हो जाता तो उसे 'किंग पेयर' नाम की सज्ञा दी जाती है।

जेक पेयर—टीम का वह ग्यारहवा खिलाडी जो किसी मैच की दोनो पारियों में बिना रन बनाये ही आउट हो गया हो 'जेक पेयर' कहलाता है।

साइट स्क्रीन—गेंदबाज के ठीक पीछे एक बडा सफेद पर्दा (स्क्रीन) लगा होता है जो सफेद होता है या सफेद रग से पोत दिया जाता है। इसी तरह का पर्दा बल्लेबाज के पीछे मैदान मे भी लगा

का उद्देश्य यही होता है कि लाल गेंद फेंकने की स्थिति मे साफ दिखाई दे सके। इस प्रकार स्क्रीन लगा देने से दर्शकों के रंग बिरंगे कपडो मे बल्लेबाज को गेंद के रंग का भ्रम पैदा नही होता और गेंद साफ दिखाई देती है।

बीमर—गेंदबाज द्वारा फेंकी गयी ऐसी गेंद जो बिना टप्पा खाए बल्लेबाज के सिर या चेहरे पर आ रही हो, 'बीमर' कहलाती है।

बैकिंग अप—जब गेंदबाज गेंद फेंकने की बिल्कुल स्थिति म आता है तो उसके छोर पर खडा बल्लेबाज रन लेने के उद्देश्य से तैयार होकर एक दो कदम आगे बढ आता है। ऐसी स्थिति को बैकिंग अप कहा जाता है। यानी रन लेने के लिए तैयार रहने की स्थिति।

ब्लाक होल—अम्पायर स आदेश या गार्ड लेकर बल्लेबाज जो अपनी व अपने बल्ले के लिए जो गहरा निशान बनाता है, उसे ब्लाक होल कहा जाता है।

बम बाल—जब गेंद बल्लेबाज द्वारा बल्ले से प्रहार द्वारा जमीन से लगकर उछलती है तो एसी बाल को बमबाल कहा जाता है। कभी कभी तेज गेंद जब बल्ले से टकराकर जमीन से उछलती हुई किसी दिशा म तेजी से जाती है तो यह भ्रम हो जाता है कि गेंद बल्ले से टकराकर सीधी उछली है। यदि ऐसे मे कोई क्षेत्र रक्षक गेंद को लपक ले तो निणय देना कठिन हो जाता है। गेद जमीन से लगकर उछली है या नही। सही निणय अम्पायर की सतकता और तीव्र दृष्टि पर निभर होता है।

गुगली, बोसी—दाए हाथ से लेग ब्रेक गेंदबाज द्वारा पूरी कलाई घुमाकर फेंकी गई ऐसी गेंद जो पूरी कलाई के घूम जाने से आफ ब्रेक हो जाए, गुगली या बोसी कहलाती है।

बाई—जब गेंद गेदबाज द्वारा फेंकी जाय और वह बल्ले या बल्लेबाज को कही न लगी हो तथा विकेटकीपर भी उस गेंद को न रोक पाए तो ऐसे मे दिए गए रन 'बाई' कहलाते हैं।

और गेंदबाज द्वारा फेंकी गयी गेंद बल्ले या बल्लेबाज के हाथो पर न लगकर पैर या अन्य जगह लगकर जाए तो ऐसे मे बने रन 'लग बाई' कहलाते हैं।

स्टांस—जब बल्लेबाज विकेट के सामने अपना बल्ला रखकर अपने खडे होने की पोजिशन लेकर खडा होता है तो इस स्थिति को स्टांस

चहते हैं। अर्थात् बल्लेबाज की विकेट के सामने बल्ला रखकर खड़े होने की स्थिति।

आब्स्ट्रक्टिंग द फील्ड—बल्लेबाज द्वारा फील्डिंग मे व्यवधान डालना या किसी फील्डर को अपशब्द कहना। इस नियम के उल्लंघन मे बल्लेबाज को आउट घोषित किया जा सकता है।

मेडन ओवर—यदि किसी गेंदबाज के पूरे ओवर मे बल्लेबाज एक भी रन न बना पाए तो ऐसे ओवर को मेडन कहा जाता है।

क्रीज—क्रिकेट की 22 गज लम्बी और 10 फुट चौड़ी पिच के दोनो छोरो पर लगे विकेटो के चारो ओर एक निश्चित दूरी पर आयताकार क्षेत्र लाइनो से रचा होता है जिसे क्रीज कहते हैं। बल्लेबाज इसी क्रीज म रहकर बल्लेबाजी करते हैं। यदि क्रीज से बाहर भी हो गए तो उन्हें तुरंत क्रीज मे आना पडता है वरना गेंद से स्टम्प उडाकर उन्हें आउट किया जा सकता है। इसी प्रकार गेंदबाद भी क्रीज के अन्दर से ही बोलिंग कर सकता है। यदि वह इसका उल्लघन करे तो नो बॉल' का शिकार हो सकता है।

क्रीज बोलिंग क्रीज, पॉपिंग क्रीज तथा रिटन क्रीज आदि नामो से रेखांकित होती हैं।

टास—दोनो टीमो के कप्तानो के बीच अम्पायर की उपस्थिति मे सिक्का उछालकर टॉस किया जाता है। जो कप्तान टास जीतता है वही निर्णय करने का अधिकारी होता है कि पहले बल्लेबाजी करे या गेंदबाजी।

डक—जब कोई बल्लेबाज बिना रन बनाए ही आउट हो जाता है तो उस 'डक' आउट होना कहा जाता है।

हाफ वॉली—गेंदबाज द्वारा फेंकी गयी गेंद बल्लेबाज के इतने निकट टप्पा खाए कि गेंद के उछलते ही झट एक पैर बढ़ाकर उसके अधिक उठने से पहले ही शाट मार दे।

यल फलाइटेड बॉल—यदि गेंदबाज गेंद को हाथ काफी ऊचा उठाकर घुमाकर फेंकता है तो गेंद हवा मे देर तक उडती है।

हाई ट्रेजेक्टरी—अच्छी उड़ान वाली गेंद का हवा मे पथ धनुषाकार होता है। इसमे गेंद ऊंचाई तक उठती हुई धीरे धीरे नीचे गिरती है।

लो ट्रेजेक्टरी—जब गेंद को अपेक्षाकृत कम ऊंचा हाथ करके फेंका जाता है तो इसका हवा में उड़ान पथ सीधा सपाट रहता है। ऐसी गेंद हवा में देर तक उड़ान नहीं लेती। इसे लो ट्रेजेक्टरी बॉल कहा जाता है।

डेलिबरेट पैडिंग—जब गेंदबाज द्वारा फेंकी गयी गेंद को बल्लेबाज बल्ले से खेलने का प्रयत्न न करके उसे जानबूझकर पैड से मार कर—'लैग बाइ' का लाभ उठाने की नीयत से रन लेने की कोशिश करता है तो अम्पायर रन नहीं मानते। ऐसी स्थिति को 'डेलिबरेट पैडिंग' कहा जाता है।

विश्व के कुछ प्रमुख नये-पुराने क्रिकेट खिलाड़ी

भारत

कपिल देव

जन्म—6 जनवरी 1959

कपिल देव ने जिस तेजी के साथ विश्व क्रिकेट में अपने कदम बढ़ाये हैं वे किसी भी दूसरे खिलाड़ी के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकते हैं। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में जिन कीर्तिमानों को भंग किया है वे उनकी अद्भुत आलराउण्डर क्षमता को प्रकट करते हैं। कपिल ने अपना पहला टेस्ट पाकिस्तान के विरुद्ध फैसलाबाद में 16 अक्टूबर 1978 को खेला था। तब से लेकर अब तक कपिल ने बल्ले व गेंद से कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वह भारत के एकमात्र ऐसे आलराउंडर हैं जो अब तक 3000 से अधिक रन और 300 से अधिक विकेट ले चुके हैं। सबसे कम समय में डबल 100 विकट और 1000 रन केवल 25 टेस्टों में बनाया जो कि एक रिकार्ड है। उन्हें विस्डन में सम्मान सन् 1983 में, अर्जुन पुरस्कार 1980, पद्मश्री 1981 में मिला।

सुनील गावस्कर

जन्म 10 जुलाई 1949

लिटिल मास्टर नाम से विख्यात सुनील गावस्कर आज विश्व के चोटी के बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने अपने टेस्ट कैरियर में इतने रिकार्ड बना डाले हैं कि अगर उनके रिकार्डों पर एक पुस्तक भी छाप दी जाए तो वह भी छोटी रहेगी। अब तक विश्व के 110 वर्षों के लम्बे इतिहास पर एक निगाह डाली जाए तो अब तक का सर्वोत्तम खिलाड़ी या बल्लेबाजी के बादशाह का खिताब गावस्कर के पास है। शायद रिकार्डों का दूसरा नाम ही गावस्कर है। तो आइए लगे हाथों गावस्कर के कुछ रिकार्डों पर एक नजर डाल ली जाए। गावस्कर अब तक

10,000 से अधिक रन बना चुके हैं, उन्होंने 34 शतक और 45 अर्द्ध शतक बनाए हैं। भारत की ओर से अधिकतम टेस्टों में कप्तानी करने का गौरव उन्हें प्राप्त है। वह अब तक अधिकतम शतकीय साझेदारियाँ 58 कर चुके हैं।

रविशंकर शास्त्री

जन्म 27 मई 1962

कपिल देव के बाद रवि शास्त्री भारत का सबसे बेहतरीन आलराउण्डर है। टेस्ट क्रिकेट में शास्त्री मुख्यतः एक स्पिनर के रूप में आया था पर आज वह एक ऐसा बल्लेबाज बन गया है जो उपयोगी गेंदबाजी भी कर लेता है। उन्हें भारत के भावी कप्तान के रूप में देखा जा रहा है। आस्ट्रेलिया के विश्व चैम्पियनशिप आफ क्रिकेट में शास्त्री को चैम्पियन आफ चैम्पियन्स के खिताब से सम्मानित किया गया था। अपने पहले ही टेस्ट में शास्त्री ने एक ओवर में 4 गेंद में 3 विकेट लिए। सन् 1984 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। 54 टेस्ट, 79 पारी 2463 रन।

मोहिन्दर अमरनाथ

जन्म 24 सितम्बर 1950

मोहिन्दर अमरनाथ टेस्ट टीम में एक तेज गेंदबाज के रूप में आया था और आज वह भारतीय टीम का सबसे अधिक भरोसे का बल्लेबाज बन गया है। 1982 83 के बाद से मोहिन्दर अमरनाथ भारतीय बल्लेबाजों का मुख्य आधार बने हुए हैं। वह लाला अमरनाथ (भूतपूर्व टेस्ट खिलाड़ी) के पुत्र हैं। इनके भाई सुरेन्द्र अमरनाथ को भी टेस्ट क्रिकेट खेलने का गौरव प्राप्त है।

मोहिन्दर अमरनाथ का सबसे बड़ा गुण उनका संयम और हिम्मत भरी बल्लेबाजी है इसी कारण उन्हें सन् 1984 में विस्डन में सम्मान दिया गया था, इसके अतिरिक्त सन 1982 में भारतीय सरकार उन्हें अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित कर चुकी है। 66 टेस्ट, 108 पारी कुल रन 4321, औसत 44 75।

दिलीप वेंगसरकर

जन्म 6 अप्रैल 1956

भारत द्वारा प्रस्तुत किए गए सबसे बेहतरीन और आकर्षक बल्लेबाजों में से एक वेंगसरकर है। वेंगसरकर ने टेस्ट क्रिकेट में कई बेहतरीन पारियां खेली हैं पर गावस्कर और विश्वनाथ जैसे खिलाड़ियों के साथ खेलने के कारण उसे कभी उतनी तारीफ नहीं मिली—जितनी कि मिलनी चाहिए थी। वेंगसरकर जब अपने रंग में हो तो बहुत आकर्षक स्ट्रोक लगाते हैं। खराब पिचों पर भी उन्होंने कई बढ़िया पारियां खेली हैं। वह भारतीय क्रिकेट से जुड़े किसी भी विवाद में नहीं फंसे—इसलिए शास्त्री को जब उसका हक मारकर बम्बई का कप्तान बनाया गया तब भी वेंगसरकर ने कोई नाराजगी जाहिर नहीं की। लार्डस के मैदान पर वह तीन शतक बनाने वाला एकमात्र भारतीय बल्लेबाज है। 95 टेस्ट, 153 पारियां, 5951 रन, औसत 44 74।

मोहम्मद अजहरुद्दीन

जन्म 8 फरवरी 1963

1984 85 सत्र में अजहरुद्दीन सनसनी के रूप में भारतीय क्रिकेट पर छा गया था। इंग्लैण्ड के विरुद्ध शृंखला में अजहरुद्दीन 3 टेस्ट खेला और उसके स्कोर थे—110,48 एवं 105, 122 एवं 54 नाट आउट। इन शानदार स्कोर से अजहरुद्दीन ने अपने पहले तीन टेस्टों में लगातार 3 शतक बनाने का अद्भुत रिकार्ड बनाया। श्रीलंका की यात्रा के दौरान अजहरुद्दीन बुरी तरह से असफल रहा। लेकिन उसके बाद फिर उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में कई शानदार पारियां खेली। उनका अब तक का उच्चतम स्कोर 199 रन है। भारत को अब भी भविष्य में उनसे कई अच्छी पारियों की उम्मीद है। 21 टेस्ट, 31 पारियां, 1461 रन, औसत 52 13।

सैयद किरमानी

जन्म 29 दिसम्बर 1949

100 शिकार तथा 1000 रन बनाने वाला एकमात्र भारतीय विकटकीपर। देश में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ विकटकीपर है। भारत अभी तक उनके मुकाबले का कोई विकटकीपर नहीं ढूंढ पाया है। बाल कट

वाने के बाद आस्ट्रेलिया की यात्रा करना किरमानी की सबसे बड़ी इच्छा थी और सम्भवत उनकी यह इच्छा पूरी भी हुई। अब तक वह आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एक शतक 101 नाट आउट भी बना चुके हैं। उन्हें 1980 मे अर्जुन पुरस्कार से तथा 1982 मे पद्मश्री से भी सम्मानित किया जा चुका है। टेस्ट 85, 122 पारिया, 2717 रन, औसत 27 17, 157 कैच, 36 स्टम्प।

कृष्णमाचारी श्रीकांत

जन्म 12 दिसम्बर 1959

दाए हाथ से तेज खेलने वाला आक्रामक खिलाडी जो विश्व के किसी भी गेंदबाज के छक्के छुडा सकते हैं। श्रीकांत की नीति है कि गेंद सिर्फ हिट करने के लिए होती है। इस नीति के बल पर ही श्रीकांत की आतिशी पारी भारत को बेहतरीन शुरूआत दे पाती है। किसी गेंद को रोकने या छोडने मे उन्हें विश्वास नही है वे बस गेंद को ठोकने मे ही उन्हें आनन्द आता है। श्रीकांत जैसे आक्रमक खिलाडी के कारण ही आज भारत एकदिवसीय क्रिकेट मे अपनी धाक जमाए हुए हैं। टेस्ट 28, पारियां 44, 1386 रन, औसत 32 23।

करसन घावरी

जन्म 28 फरवरी 1951

करसन घावरी एक ऐसे गेंदबाज हैं जो तेज गेंदबाजी स्पिन गेंदबाजी और बल्लेबाजी सभी कर लेते थे। बम्बई का यह खब्बू गेंदबाज सोराष्ट्र की ओर से खेलता था। उन्होंने इंग्लैंड के विरुद्ध अपने जीवन का सवश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए केवल 33 रन पर 5 खिलाडियो को आउट किया था। आमतौर पर वह तेज गेंदबाजी करते थे। लेकिन इस टेस्ट मैच मे उन्होने स्पिन गेंदबाजी द्वारा अपने जीवन का सवश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। टेस्ट 35, पारिया 50, औसत 23 08, रन 847, विकेट 98।

सुभाष गुप्ते

जन्म 11 दिसम्बर 1929

सुभाष गुप्ते विश्व के सवश्रेष्ठ लेग ब्रेक गुगली गेंदबाजो मे से एक हैं। उन्होंने वेस्ट इंडीज के विरुद्ध एक पारी मे अपने जीवन का सवश्रेष्ठ

प्रदर्शन करते हुए 102 रन पर 9 विकटें ली थी। इसके अलावा उन्होंने बम्बई टीम की ओर खेलते हुए पाकिस्तान के टेस्ट खिलाड़ियों से भरी टीम के एक पारी के सभी 10 विकट केवल 78 रन देकर लिए। इसके अतिरिक्त न्यूजीलैण्ड के विरुद्ध एक शृंखला में उन्होंने 34 विकट लिए। *36 टेस्ट, 42 पारियां, 183 रन, 149 विकट।*

सलीम दुर्रानी

जन्म 11 दिसम्बर 1934

सलीम दुर्रानी अपने समय के असराउन्डर रहे हैं। वह एक आकर्षक बल्लेबाज तो थे ही लेकिन साथ मे घातक खब्बू स्पिनर भी थे। काफी तेजी से रन बनाने के कारण वह उस समय काफी लोकप्रिय थे। उन्होंने केवल 29 मिनट में सबसे तेज अधशतक बनाने का गौरव प्राप्त किया। इसके अलावा स्पिन गेंदबाजी मे उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध कलकत्ता के मैदान पर केवल 73 रन पर 6 विकट लेकर अपने जीवन का सवश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। बल्लेबाजी में उनका उच्चतम स्कोर 104 रन था। 29 टेस्ट, 50 पारियां, 1202 रन, 75 विकेट।

गुडप्पा विश्वनाथ

जन्म 12 फरवरी 1949

एक ऐसे भारतीय खिलाड़ी जो 5000 से अधिक रन बना चुके हैं। विश्वनाथ विश्व स्तर के कलात्मक बल्लेबाज थे, उन्होंने अपने पहले ही टेस्ट मे शतक बनाने का गौरव प्राप्त किया था। विश्वनाथ ने दो टेस्ट मैचो मे भारत की ओर से कप्तानी भी की जिसमें एक टेस्ट मे भारत हार गया था तथा दूसरा टेस्ट बराबर रहा था। उन्होंने कुल 14 शतक बनाए। *उनका उच्चतम स्कोर 222 रन था। 61 टेस्ट, 155 पारियां,* 6080 रन, औसत 41 93।

नारी कान्ट्रेक्टर

जन्म 7 मार्च 1934

1960 61 मे फजल महमूद के नेतृत्व में पाक दल के भारत भ्रमण पर इन्हें कप्तान बनाया गया था। उसके बाद इन्होंने 12 टेस्ट मैचों में भारतीय टीम की कप्तानी की जिनमे भारत 2 जीता 2 हारा और 8

बराबर रहे। भारत का यह धाकड़ बल्लेबाज आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, न्यूजीलैण्ड और इंग्लैण्ड के विरुद्ध 31 टेस्ट मैचों में खेला। सन् 1962 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध एक मैत्री मैच में चार्ली ग्रिफिथ की गेंद पर गम्भीर रूप से घायल हो गए और इसके साथ ही उनका क्रिकेट जीवन भी समाप्त हो गया। 31 पारियां, 1611 रन, औसत 30 07।

भगवत चन्द्रशेखर

जन्म 18 मई, 1945

कर्नाटक का यह खिलाड़ी अपने समय का सर्वश्रेष्ठ लैग ब्रेक गुगली गेंदबाज था। भारत की ओर से एक टेस्ट श्रृंखला में सबसे अधिक 35 विकेट लेने का गौरव प्राप्त है। उन्हें अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री से सम्मानित भी किया जा चुका है। इन्होंने इंग्लैण्ड के विरुद्ध केवल 79 रन देकर 8 विकेट लिए जो कि इनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। बल्लेबाजी में भी इन्होंने एक अनोखा रिकार्ड बनाया है, केवल 58 पारियों में सर्वाधिक शून्य 23 बार बनाकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। 58 टेस्ट, 80 पारियां, 242 विकेट, 167 रन।

बिशनसिंह बेदी

जन्म 25 सितम्बर 1946

बिशन सिंह बेदी को विश्व का सर्वश्रेष्ठ धब्बू स्पिनर माना जाता है। बेदी ने कुल 22 टेस्ट मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया जिनमें से भारत 6 जीता, 11 हारा और 5 बराबर रहे। बेदी पहले ऐसे भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने 200 से अधिक विकेट लिए। उन्होंने कुल 266 विकेट लिए। जिसे बाद में कपिल देव ने तोड़ा। बेदी उन गिने चुने गेंदबाजों में से हैं जिन्होंने रणजी ट्राफी में 300 से अधिक विकेट लिए। 67 टेस्ट, 101 पारियां, 656 रन, 266 विकेट।

हेमू अधिकारी

जन्म [redacted] अगस्त 1919

हेमू अधिकारी में अच्छे नेतृत्व के गुण होते हुए भी केवल एक टेस्ट

में उन्हें कप्तान बनाया गया और वह टेस्ट दिल्ली में बराबर रहा। दाएं हाथ के बल्लेबाज और ब्रेक गेंदबाज हेमू अधिकारी ने टेस्ट क्रिकेट में कुल 872 रन बनाए और 3 विकेट भी लिए। रणजी ट्राफी में उन्होंने 4500 से अधिक रन बनाए। कवर पोइंट क्षेत्र पर उनकी फील्डिंग लाजवाब थी। वह आजकल राष्ट्रीय क्रिकेट प्रशिक्षक हैं। 21 टेस्ट, 872 रन, 3 विकेट, 8 कैच।

सी० के० नायडू

जन्म 31 अक्तूबर 1895 मृत्यु 14 नवम्बर 1967

'भारत के प्रथम कप्तान सी० के० नायडू ने 1932 में इंग्लैण्ड के विरुद्ध भारतीय दल का नेतृत्व किया। यद्यपि भारत 5 में से 3 टेस्ट हार गया फिर भी नायडू के कुशल नेतृत्व की सर्वत्र प्रशंसा की गई और आज भी यह माना जाता है कि नायडू जैसा कुशल कप्तान भारत को आज तक नहीं मिला। वह एक अत्यन्त आकर्षक और आक्रामक बल्लेबाज थे जिन्हें भारतीय क्रिकेट का भीष्म पितामह कहा जा सकता है। प्रथम श्रेणी के मैचों में उन्होंने 8000 से अधिक रन बनाये और लगभग 300 विकेट लिए। 7 टेस्ट, 350 रन, औसत 25-00, 9 विकेट, 4 कैच।

लाला अमरनाथ

जन्म 11 सितम्बर 1911

1933 में प्रथम टेस्ट शतक से अभ्युदय होने वाले लाला अमरनाथ भारत के चुस्त, चालाक व दूरदृष्टि रखने वाले कप्तान माने जाते हैं। उन्होंने कुल 15 टेस्टों में भारत का नेतृत्व किया, जिनमें से भारत 2 जीता, 6 हारा व 7 बराबर रहे। दायें हाथ के बल्लेबाज और दाए हाथ के मीडियम पेस गेंदबाज भारत के महानतम खिलाड़ियों में से थे। रेडियो व दूरदर्शन पर एक विशेषज्ञ के रूप में उनकी टिप्पणियां क्रिकेट क्षेत्रों में विशेष लोकप्रिय हैं। 24 टेस्ट, 878 रन, 45 विकेट, 13 कैच।

आबिद अली

जन्म 9 सितम्बर 1941

दाएं हाथ का बल्लेबाज और दाएं हाथ का मीडियम पेस गेंदबाज आबिद अली एक शानदार आलराउन्डर थे। क्षेत्र रक्षण में भी उन्होंने कई

शानदार कैच पकड़े हैं। रणजी ट्राफी में वह हैदराबाद की ओर से खेलते थे। टेस्ट मैचों में उनका सर्वाधिक स्कोर 81 रन था। इसके अतिरिक्त आस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने शानदार गेंदबाजी करते हुए केवल 55 रन देकर 6 खिलाड़ी आउट किए जोकि उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। 29 टेस्ट, 1018 रन, 47 विकेट, 32 कैच।

एकनाथ सोलकर

जन्म 18 मार्च 1948

टेस्ट क्रिकेट का एकमात्र ऐसा खिलाड़ी जो केवल क्षेत्ररक्षण के बलबूते पर टीम में चुन लिए जाते थे। विकेट के नजदीक खड़े होकर क्षेत्ररक्षण करते हुए इन्होंने कई अद्भुत कैच पकड़े हैं। केवल 27 टेस्ट मैचों में 53 कैच पकड़ने का अनोखा रिकार्ड उन्होंने बनाया है। इसके अतिरिक्त टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने बल्लेबाजी में एक शतक और गेंदबाजी में 18 विकेट भी ली हैं। अनेक अवसर पर भारतीय टीम के लिए गजब का प्रदर्शन कर श्रीमान विश्वसनीय कहलाया। 27 टेस्ट, 1068 रन, 18 विकेट और 53 कैच।

विजय मांजरेकर

जन्म 26 सितम्बर 1931

विजय मांजरेकर भारत का महान बल्लेबाज रहा है। तेज गेंदबाजी को बड़े विश्वसनीय ढंग से खेलते थे। उन्होंने वेस्टइंडीज पाकिस्तान, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड के विरुद्ध कुल 55 टेस्ट मैच खेले जिसमें उन्होंने 3000 से अधिक रन बनाए। टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने सात शतक भी बनाए। रणजी ट्राफी में 3686 रन और 12 शतक। 55 टेस्ट, 3209 रन, 1 विकेट, 2 स्टम्प और 19 कैच।

वीनू मांकड

जन्म 12 अप्रैल 1917

केवल 24 टेस्ट मैचों में हजार रन व सौ विकेट प्राप्त करने का अनूठा गौरव प्राप्त करने वाले मांकड ने कुल 6 टेस्टों में भारत का नेतृत्व किया जिनमें से 5 टेस्ट पाकिस्तान के विरुद्ध बराबर रहे तथा

एक टेस्ट वेस्टइण्डीज के विरुद्ध भारत हार गया। वीनू मांकड उच्च कोटी के खब्बू स्पिनर और दाएं हाथ के शानदार बल्लेबाज थे। गेंदबाजो मे उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पाकिस्तान के विरुद्ध रहा जिसमे उन्होने केवल 52 रन देकर 8 खिलाड़ियों को आउट किया। टेस्ट क्रिकेट मे बल्लेबाजों में उनका उच्चतम स्कोर 231 रन था। उन्होने 5 शतक भी बनाए। उन्होंने रणजी ट्राफी मे तीन हजार से अधिक रन बनाए। इन्हें पद्मभूषण से अलंकृत भी किया जा चुका है। 44 टेस्ट, 72 पारियां, 2109 रन, औसत 31 47, 162 विकेट, 33 कैच।

बापू नाडकर्णी

जन्म 4 अप्रल 1932

बापू नाडकर्णी सधा हुआ खब्बू स्पिनर और अत्यन्त ठोस बल्लेबाज था। वह उच्च श्रेणी के आलराउण्डर थे। उन्होने इंग्लैण्ड, वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलण्ड की यात्रा की। टेस्ट क्रिकेट में लगातार 21 मेडन ओवर फेंकने का आश्चर्यजनक रिकार्ड स्थापित किया। यह रिकार्ड 1964 मे इंग्लैण्ड के विरुद्ध मद्रास टेस्ट में था। रणजी ट्राफी म 3993 रन बनाए और 181 विकेट भी लिए। 41 टेस्ट, 1414 रन, 88 विकेट, 24 कैच।

अजीत वाडेकर

जन्म 1 अप्रैल 1941

मूर्खदिवस अर्थात पहली अप्रैल 1941 को जन्मे अजीत वाडेकर ने वेस्टइंडीज व इंग्लैण्ड मे श्रृंखला जीतकर जो प्रतिष्ठा पाई वह दल के अन्दर फूट के फलस्वरूप पली ॥ 2 की पराजय से मिट्टी मे मिल गई। भारत क्रिकेट के लिए यह निश्चय ही दुर्भाग्य की बात रही कि केवल एक श्रृंखला हारने पर वाडेकर ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया। वाडेकर के नेतृत्व में भारत ने 4 टेस्ट जीते, 4 हारे व 8 बराबर रहे।

बायें हाथ का यह बल्लेबाज निहायत अच्छा फील्डर भी था। रणजी ट्राफी मैचो मे 12 शतको की सहायता से 4388 रन बनाए। 37 टेस्ट, 2113 रन, 44 कैच।

दिलीप सर देसाई

जन्म 8 अगस्त 1940

बम्बई का यह टेस्ट खिलाड़ी भारत के उन गिने चुने बल्लेबाजों मे से है। जिन्होने 2000 से अधिक रन बनाए हैं। सर देसाई पाकिस्तान के अतिरिक्त सभी देशों की यात्राएं कर चुके हैं। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 5 शतक भी बनाए हैं। उनका अब तक का उच्चतम स्कोर 212 रन है। रणजी ट्राफी मैचो मे 3599 रन बनाए हैं। उनका टेस्ट रिकार्ड इस प्रकार है—30 टेस्ट, 55 पारियां, 2001 रन, औसत, 39 23, 5 शतक।

पाली उमरीगर

जन्म 28 मार्च 1926

पाली उमरीगर एक ठोस बल्लेबाज के साथ साथ दाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज भी थे। भारत की ओर से इन्हे 59 टेस्ट मैच खेलने का गौरव प्राप्त हुआ जिसमे इन्होंने 12 टेस्ट शतक भी बनाए। इनका उच्चतम स्कोर 223 रन है। न्यूजीलण्ड को छोड़कर सभी देशों की यात्राएं कर चुके हैं। प्रथम श्रेणी के मैचो मे 49 शतक। रणजी ट्राफी मे 13 शतको की सहायता से 4000 से अधिक रन और 138 विकेट। बम्बई का यह कप्तान 8 मैचो मे भारत का कप्तान भी रहा। पद्मश्री से अलकृत।

विजय हजारे

जन्म 11 मार्च 1915

महाराष्ट्र मे जन्मे विजय हजारे ने 14 टेस्ट मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया जिसमें से भारत 1 जीता 5 हारा व 8 बराबर रहे। पहली टेस्ट विजय का श्रेय भी विजय हजारे को ही है। भारतीय क्रिकेट के इस सब कालीन महान बल्लेबाज ने अपना जीवन एक गेंदबाज के रूप में शुरू किया था। दाएं हाथ का यह बल्लेबाज टेस्ट क्रिकेट में 2000 से अधिक रन बना चुका है। हजारे ने रणजी ट्राफी में 22 शतकों की सहायता से 6312 रन बनाए और 291 विकेट लिए। गुल मोहम्मद के साथ चौथे विकेट की साझेदारी में 577 रन के विश्व रिकार्ड को स्थापित

किया। हजारे मीडियम पेस गेंद भी फेंकते थे और स्पिन भी। हजारे ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 57 शतक बनाए। 1960 में हजारे को पद्मश्री से अलंकृत किया गया। 30 टेस्ट, 2192 रन, 20 विकेट, 11 कैच।

पंकज राय

जन्म 31 मई 1928

1959 में इंग्लैण्ड के विरुद्ध द्वितीय टेस्ट से पूर्व कप्तान दत्तु गायकवाड़ के जख्मी हो जाने के कारण लार्ड्स के मैदान पर भारत का नेतृत्व पंकज राय को सौंपा गया परन्तु भारत यह टेस्ट 8 विकेट से हार गया। इन्होंने वीनू मांकड़ के साथ मिलकर पहले विकेट की साझेदारी में 413 रन बनाकर विश्व रिकार्ड बनाया जो आज भी कायम है। इनकी सबसे खराब श्रृंखला इंग्लैण्ड के विरुद्ध रही जिसमें वह 5 बार शून्य पर आउट हुए। रणजी ट्राफी में 5 शतकों की सहायता से 5149 रन बनाए। बंगाल का यह कप्तान फुटबाल का भी अच्छा खिलाड़ी था। 43 टेस्ट, 2441 रन, 1 विकेट, 16 कैच।

इरापल्ली प्रसन्ना

जन्म 22 मई 1940

कर्नाटक का यह कप्तान विश्व के महानतम आफ ब्रेक गेंदबाजों में से है। गेंद की दिशा उछाल और लेंथ पर अद्भुत नियन्त्रण। पाकिस्तान के अलावा सभी देशों की यात्राएं कर चुके हैं। इन्होंने न्यूजीलेण्ड के विरुद्ध अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए केवल 76 रन देकर 8 विकेट लिए। आपका टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक स्कोर 37 रन है। अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री से अलंकृत किए जा चुके हैं। 49 टेस्ट, 84 पारियां, 735 रन, 189 विकेट, 18 कैच।

डब्ल्यू० जी० ग्रेस

क्रिकेट के भीष्म पितामह के रूप मे विख्यात रहे डॉ० विलियम गिलबर्ट ने 27 वर्ष की आयु मे प्रथम श्रेणी के मैच मे प्रवेश की शतक बनाकर सभी को चौंका दिया। 10 जून, 1848 को वह पैदा हुए और 40 वर्षों तक क्रिकेट के मैदानो पर छाए रहे। प्रथम श्रेणी मे उन्होंने 54896 रन बनाए और 2876 विकेट लिए। 126 शतक उनके खाते में जमा थे—871 मैच उनके हाथो मे आकर थम गए थे।

22 टेस्ट मैचो मे 1089 रनो मे उनके दो शतक और 5 अर्धशतक शामिल हैं। वे इग्लण्ड के पहले खिलाडी थे, जिन्होंने एक ही मौसम में दो हजार रन बनाए।

उन दिनो क्रिकेट अपने पूर्ण विकसित रूप मे नहीं था, लेकिन गीले और खराब विकेटो पर उस जमाने म यह दाढ़ी वाले खिलाडी शतक बनाने के लिए प्रसिद्ध थे।

भारी शरीर, लम्बे चौडे हाथ, ऊपर से लम्बी भरी हुई दाढी, इन सारी बातो से उनका व्यक्तित्व काफी रोबीला दिखता था।

उनके बारे मे यह किस्सा काफी मशहूर है कि एक बार पहली ही गेंद पर अम्पायर ने उन्हें आउट करार दे दिया—बस फिर क्या था—ग्रेस आखिर क्यो विकेट से हटते ? उन्होंने अम्पायर स कहा—यहा लोग तुम्हारी अगुली उठती देखन नही मेरा खेल देखने आए हैं। फिर क्या था खेल आगे जारी रहा।

कॉलिन काउड्री

अधिक उम्र होने के बाद भी टेस्ट खेलते रहना कोई आसान बात नहीं, लेकिन कालिन काउड्री के लिए यह बिलकुल आसान बात रही—जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, उनके खेल मे दिन ब दिन निखार आता गया। 114 टेस्ट मैचो मे खेलकर उन्होंने एक कीर्तिमान बना दिया। सोबस के बाद सर्वाधिक रन बनाने का भी उनका अपना रिकाड है।

22 टेस्ट शतको की सहायता से 7700 रन उन्होंने एकत्र किए। उनकी सर्वाधिक रन सख्या 182 है।

टस्ट मैचों की 63 पारियों मे 50 या 50 से अधिक रन उन्होंने बनाए। 42 बार उन्होंने शतकीय भागीदारी की। 1957 मे पीटर मे के साथ वेस्टइण्डीज के विरुद्ध चौथे विकेट की भागीदारी मे उन्होने 411 रनों का कीर्तिमान बना डाला।

गेंद को मैदान की किसी भी दिशा मे पहुचाना और वह भी शुद्ध और सही टेक्नीक के आधार पर इसमे काउड्री सिद्धहस्त रहे। स्लिप मे क्या मजाल जो काउड्री के होते हुए गेंद निकल जाए।

अंडरवुड (डेरेक)

इंग्लैंड के बाए हाथ के धीमी मध्यम गति के गेंदबाज। क्रिकेट-जीवन के आरम्भ के वर्ष मे ही पूरे सत्र मे 100 विकिट लेने वाले वे न्यूनतम आयु के खिलाडी थे। उन्होंने अब तक खेले 85 टेस्ट मैचों मे 289 विकिट लिये हैं। 995 रन भी उन्होने बनाए हैं।

पीटर मे

1929 के अन्तिम दिन जन्मे पीटर एक सफल और विश्वसनीय तथा सवश्रेष्ठ बल्लेबाजों मे से एक हैं। उन्होंने सरे से खेलते हुए प्रथम श्रेणी मैंचो मे प्रवेश किया। अपने टेस्ट जीवन के प्रथम टेस्ट मे ही आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने अपने टस्ट इतिहास की पहली शतक जमाई। उन्होंने 66 बार इंग्लैंड टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए 106 पारियों म 13 शतकों व नायाब 285 रनो के व्यक्तिगत सवश्रेष्ठ प्रदशन क साथ 4537 रन बनाए। प्रथम श्रेणी के मैचो मे 618 पारियो म 85 शतकों की सहायता से 27592 रन बनाए।

'पीटर मे' दायें हाथ के सवश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। 41 बार इंग्लैण्ड टीम का नेतृत्व करने का इनका कीतिमान है। वे मैंच मे पूरी तरह छा जाते हैं। उनके आने पर लगाए गए स्ट्रोक्स विश्व स्तर के होते थे। जहां उनका आक्रमण आकर्षक ढंग का था, वहीं उनकी सुरक्षा पद्धति भी अडिग थी।

लेन हटन

लेन हटन की गिनती विश्व के सवकालीन महान बल्लेबाजों में की जाती है। जैक होब्ज को छोड़कर हटन से बेहतर ओपनिंग बल्लेबाज

इग्लैण्ड मे नही हुआ । क ा आता है हटन तकनीकी दृष्टि से पूर्ण बल्लेबाज था और उसने शायद ही कभी गलत शाट लगाया हो । यह बात अजीब सी लगती है, किंतु हटन के बारे मे प्राय कही जाती है कि जब वह आउट हुआ, अपनी गलती के कारण नहीं, गेंद के अप्रत्याशित व्यवहार के कारण ।

याकशायर और इग्लैण्ड के महान बल्लेबाज हरबट सटक्लिफ के शिष्य हटन का ज म 23 जून, 1916 को हुआ । 18 वर्ष की उम्र म हटन ने याकशायर की ओर से वारसेस्टरशायर के विरुद्ध पहला प्रथम श्रेणी का मैच खेला और उसमे 196 रन बनाए, कि तु 3 वर्ष बाद 1937 मे लार्ड स में न्यूजीलैण्ड के विरुद्ध अपना पहला टेस्ट खेला तो वह पहली पारी मे शू य और दूसरी पारी मे एक रन बना सका । लेकिन अगले वर्ष आस्ट्रेलिया के विरुद्ध उसने 3 टेस्ट मैचो की 4 पारियो मे 118 25 रनो के औसत से कुल 473 रन बनाए, जिसमे ओवल टेस्ट के 364 रन भी शामिल हैं । अगर द्वितीय महायुद्ध के कारण 7 वर्ष तक टेस्ट क्रिकेट ब द न हुई होती, तो हटन न जाने कितने रिकार्ड कायम करता । फिर भी हटन ने 79 टेस्टों मे 56 67 रन प्रतिपारी की औसत से कुल 6,971 रन बनाए जिनमे 19 शतक शामिल हैं ।

गोवर (डेविड)

इग्लण्ड के बाए हाथ के ओपनिंग बल्लेबाज । यह बडी तेजी से रन बनाते हैं और गेंद हिट करने का उनका टाईमिंग बहुत ही उत्तम है । वह आक्रामक बल्लेबाज हैं और पिच पर उतरते ही प्रहार शुरू कर देते हैं। उन्होंने 90 टेस्ट मचों में 5653 रन बनाए हैं । इनमे 11 शतक व 200 अविजित का उच्चतम स्कोर है ।

ग्राहम गूच

इग्लण्ड के उदीयमान बल्लेबाज, जो अब तक खेले 42 टेस्ट मैचों में 2540 रन बना चुके हैं, 153 उच्चतम स्कोर ।

ट्रूमैन

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यार्कशायर और इग्लैण्ड म तज गेंदबाज फ्रेड ट्रूमैन से अधिक रंगीनमिजाज और शक्ति से भरपूर शायद ही

कोई दूसरा क्रिकेटर हुआ हो। अगर उन्होंने अपने तेज तर्रार स्वभाव और जुबान को काबू मे रखा होता तो वे अपने टेस्ट क्रिकेट के आरम्भिक दिनों मे इग्लैण्ड के लिए और अधिक सहायक होते। भारत के विरुद्ध 1952 में फ्रेड ट्रूमैन ने इग्लैण्ड की टीम मे नाटकीय ढग से प्रवेश किया और उस श्रृंखला में 49 भारतीय खिलाडियो को अपनी गेंद का शिकार बनाकर इग्लैण्ड टीम मे उन्होने अपने को स्थापित कर लिया।

फ्रेड ट्रूमैन हमेशा दर्शकों के चहेते रहे। 1952 मे भारतीय खिलाडियों की लेग साइड मे पीछा करती हुई शॉट पिच गेंदो से उन्होने आतंकित कर दिया। ट्रूमैन स्वय इस बात को अच्छे से जानते थे। वे दर्शकों में बेहद लोकप्रिय रहे। 1964 में ट्रूमैन बाढ पीडितो की सहायतार्थ एक मैच खेलने भारत आये। एक शाम होटल मे बैठकर वे अपने मित्रों से गपशप कर रहे थे। उनसे कुछ ही दूर पर दो भारतीय क्रिकेट खिलाडी बातचीत कर रहे थे। आस्ट्रेलिया के ख्याति प्राप्त खिलाडी नामन ओनील ने ट्रूमैन के पास आकर कहा— 'ट्रूमैन, ये तुम्हारे बारे मे बात कर रहे हैं। ट्रूमैन का जवाब था— नामन, मेरे बारे मे सारी दुनिया मे बातें हो रही हैं।'

ट्रूमैन की योग्यता का नमूना यह है कि वे स्टैथम टॉयसन और बेडमर जैसे महान गेंदबाजो के समय मे खेले और फिर भी उनका अपना एक अलग स्थान बना रहा। 67 टेस्ट मैचों मे 307 विकेट लेकर उन्होंने अपना नाम इग्लैण्ड के महान खिलाडियों की सूची मे दर्ज करवा लिया। वे 'आउट स्विंग' गेंद के माहिर थे—यार्कर उनका विशेष अस्त्र था, जो अच्छे-से अच्छे बल्लेबाज को भयभीत कर देता था। 1952 से 1964 तक वे टेस्ट क्रिकेट खेले किन्तु उनका सर्वश्रेष्ठ समय 1958 से 1962 तक रहा। ट्रूमैन और स्टैथम की जोडी विश्व के सफलतम गेंदबाजो की जोडी थी। लेकिन दोनो गेंदबाजो की शारीरिक बनावट, स्वभाव और स्टाईल मे जमीन आसमान का अन्तर था।

सटक्लिफ हरबर्ट

जन्म 24 नवम्बर 1894 मृत्यु 22 जनवरी 1978

यार्कशायर एव इग्लैण्ड के महानतम बल्लेबाजों मे से एक। 1919 के अपने पहले सत्र से विश्व युद्ध की शुरुआत तक प्रत्येक सत्र मे 1000 रन को पार किया। 1932 मे 74 13 औसत से 3336 रन तथा

1931 मे 96 96 औसत से 3006 रन। सर होब्स के साथ टेस्टों में 15 शतकीय साझेदारियां, इनमे से सर्वोच्च 1924-25 में—283 रन (आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मेलबोन मे) यार्कशायर के लिए स्टक्लिफ और पर्सी होम्स ने रिकार्ड साझेदारी विरुद्ध एसेक्स पहले विकेट के लिए 69 शतकीय साझेदारिया—जिसमे 555 रन की रिकार्ड साझेदारी (विरुद्ध एसेक्स 1932) भी शामिल। क्रिकेट-जीवन में 149 शतको की सहायता से 52 00 औसत से 50135 रन, जबकि 54 टेस्टो मे 60 73 औसत से 4555 रन।

काम्पटन डेनिस चार्ल्स स्काट

जन्म 23 मई 1918

1936 मे पहला प्रथम श्रेणी मैच। 18 वर्ष की आयु मे अपने पहले ही सत्र म 1004 रन। 1938 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलने वाला इंग्लण्ड का सबसे युवा खिलाडी बना और पहले ही टेस्ट मे 102 रन। काम्पटन ने उसके बाद लगातार सफलता प्राप्त की हालांकि विश्व युद्ध के कारण वह लम्बे समय तक क्रिकेट न खेल सका। 1939 से 1945 तक काम्पटन भारत मे भी खेला। 1944 45 के रणजी ट्राफी-फाइनल (होलकर-बम्बई) म 249 अविजित रन। 1947 के सत्र मे इंग्लण्ड मे 18 शतको के साथ 3816 रन बनाकर तहलका मचाया। टेस्टो मे सर्वोच्च स्कोर 278, जो पाकिस्तान के विरुद्ध नाटिंघम टेस्ट (1954) म मात्र 290 मिनट मे। यह खिलाडी आर्सेनल और इंग्लैण्ड के लिए फुटबाल भी खेला, पर घुटने मे चोट के कारण उसका खेल जीवन बहुत ही जल्दी समाप्त। क्रिकेट जीवन म कुल 51 85 औसत से 38942 रन बनाए।

जैसप, गिलबर्ट लेयर्ड

जन्म 19 मई 1874 मृत्यु 11 मई, 1955

धुआधार बल्लेबाजी के लिए विख्यात। 1902 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध ओवल टस्ट जीतने के लिए इंग्लण्ड को 263 रन बनाने थे और जिस समय जेसप बल्लेबाजी करने गया स्कोर 5 विकेट पर 48 रन था, लेकिन अगले 75 मिनट म उसने खुद 104 रन ठोक कर इंग्लैण्ड को जीत की राह पर डाल दिया। एक ओवर मे 28 रन बनाने का श्रेय दो बार।

1903 में ससेक्स के विरुद्ध मात्र 120 मिनट में दोहरा शतक (विश्व-रिकार्ड)। इस पारी में जैसप ने कुल 175 मिनट में 286 रन। कुल 18 टेस्टों में 21.88 औसत से 569 रन।

हैमण्ड, वाल्टर रिनाल्ड

जन्म 19 जून 1903 मृत्यु 2 जुलाई 1965

क्रिकेट की महानतम हस्तियों में से एक हैमण्ड को बल्लेबाज होने के बावजूद गेंदबाज और क्षेत्ररक्षक के रूप में भी आश्चर्यजनक सफलता। 1977 तक हैमण्ड को टेस्टों में सर्वाधिक रन बनाने का श्रेय। उन्होंने कुल 85 टेस्ट मैचों में 7249 रन, 83 विकेट, उच्चतम स्कोर 336 (नाट आउट)।

डैक्सटर एडवर्ड रैल्फ

जन्म 15 मई 1935

इंग्लैण्ड के आकर्षक बल्लेबाजों एवं चर्चित कप्तानों में से एक। एक बल्लेबाज के रूप में डैक्सटर ने हमेशा ख्याति पाई। 1963 में वेस्ट इण्डीज के विरुद्ध लार्ड्स में डैक्सटर ने 80 मिनट में 70 रन बनाए थे—इस पारी को क्रिकेट की स्मरणीय पारियों में गिना जाता है, जबकि 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध डैक्सटर ने 480 मिनट में 174 रन ठोंके। क्रिकेट के अलावा गोल्फ का उच्च स्तरीय खिलाड़ी भी। कुल 62 टेस्टों में 40.89 औसत से 4502 रन। 25 टेस्टों में इंग्लैण्ड का नेतृत्व भी।

एड्रिच जान ह्यू

जन्म 21 मई 1937

उन गिने चुने बल्लेबाजों में से एक जिन्हें टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक बनाने का श्रेय। 1965 में न्यूजीलैण्ड के विरुद्ध लीड्स टेस्ट में एड्रिच ने अविजित 310 रन—52 चौकों और 5 छक्कों के साथ। इस पारी के दौरान दूसरे विकेट के लिए बैरिंगटन के साथ उसने 369 रन की साझेदारी। कुल 77 टेस्टों में 12 शतकों के साथ 43.54 औसत से 5138 रन।

एड्रिच, विलियम जान

जन्म 26 मार्च 1916

विलियम एड्रिच के क्रिकेट-जीवन के स्वर्णिम वर्ष भी विश्व-युद्ध के कारण बेकार गए। 1947 का सत्र उसके लिए सर्वश्रेष्ठ, जब काउन्टी-सत्र में उसने 12 शतकों की सहायता से 80.43 औसत से 3539 रन। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में एड्रिच ने कुल 36,965 रन 86 शतकों की सहायता से बनाए और कभी कभी प्रयोग के लिए जाने वाले मध्यम तेज गति के गेंदबाज के रूप में 350 से अधिक विकेट भी लिए। कुल 39 टेस्टों में 40.00 औसत से 2440 रन।

फ्राई, चार्ल्स बर्जेस

जन्म 25 अप्रैल 1872 मृत्यु 7 सितम्बर 1956

फ्राई केवल क्रिकेट में ही नहीं, वरन अपनी प्रतिभा के कारण फुटबाल, रग्बी और एथलेटिक्स में भी प्रसिद्ध। वैसे फ्राई ने कुल 26 टेस्ट ही खेले। टेस्टों की संख्या इसलिए कम रही, क्योंकि फ्राई ने हमेशा ही आस्ट्रेलिया जाने से इन्कार किया।। 1901 के सत्र में फ्राई ने लगातार 6 पारियों में शतक बनाए थे और इस सत्र में 78.67 की औसत से कुल 3147 रन। फ्राई ने अपने क्रिकेट जीवन में 16 दोहरे शतक और पांच बार एक ही मैच की दोनों पारियों में शतक बनाने का श्रेय भी। कुल 26 टेस्टों में 32.18 औसत से 1223 रन।

ग्रेवनी, थामस विलियम

जन्म 16 जून 1927

23 सत्र के क्रिकेट जीवन में इस बल्लेबाज ने अपनी प्रतिभा से सभी को आकर्षित किया और 122 शतकों सहित 47793 रन। सर्वश्रेष्ठ सत्र 1956, जब 49.93 औसत से 2397 रन बनाए।

1957 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध पांच पारियों में 118.00 की औसत।

क्रिकेट पितामह रणजीतसिंह

'विस्डन' पहली बार सन 1896 मे एक भारतीय को वर्ष के पांच सर्वश्रेष्ठ खिलाडियो की श्रेणी में रखा था और वह प्रतिष्ठा मिली थी महाराजा रणजीतसिंह जी को, जो उन दिनो रांजी नाम से प्रसिद्ध थे। आज से करीब बहत्तर साल पहले की इस ऐतिहासिक घटना के बाद केवल छह अन्य भारतीयो को ही यह सम्मान मिला है, पर यह उल्लेखनीय है कि इनमे से पहले तीन खिलाडी केवल इसीलिए सम्मानित किए गए थे कि वे इग्लैण्ड मे उस देश की तरफ से खेले थे। बाकी चार विशुद्ध रूप से 'भारतीय' खिलाडी थे। जिन्होने अपने देश की ओर से खेलकर यह कीर्ति अर्जित की थी।

रांजी का नाम आज भी एक जादू का सा असर करता है और निस्सन्देह वह क्रिकेट जगत के एक उज्ज्वल सितारे थे। 'विस्डन' की सूची मे स्थान पाने वाले अपने देशवासियो मे रांजी न केवल सबसे पहले और उम्र मे सबसे छोटे खिलाडी थे, बल्कि सबसे महान भी थे। क्रिकेट के आकाश मे वह धूमकेतु की भाति अपनी छटा बिखेरते निकल गए। जितना यश रांजी को मिला, उतना शायद बहुत कम लोगों को मिलता है। यहा तक कि क्रिकेट के उस 'स्वर्ण युग' मे और वह भी उस खेल में जो कि निश्चय ही एक अग्रेजी खेल है, रांजी ने दोनो हाथों से यश लूटा। यह भी सच है कि ऐसे खिलाडियो की कमी नहीं, जिन्होने कि रांजी से भी अधिक रन बनाए हैं और भविष्य मे भी बनाएगे, पर क्रिकेट खेलने मे रांजी का कोई जवाब नही था। कितने ही अवसरों पर उन्होंने बल्लेबाजी के जौहर दिखाए। उन सबका यहां वर्णन करना सम्भव नहीं है, एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। इग्लैंड मे सन 1899 के सीजन मे रांजी ने 3159 रन बनाए (औसत 63 18), तो लोगों ने दांतों तले उगली दबा ली। वह पहले खिलाडी थे, जिन्होने इग्लिश क्रिकेट मे 3000 रन बनाने का लक्ष्य पूरा किया था। अगले वर्ष भी उन्होंने 3095 रन पीटे (औसत 87 57)

रांजी 892 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे प्रविष्ट हुए और अगले ही वर्ष विश्वविद्यालय की टीम के लिए चुन लिए गए और आक्सफोर्ड के विरुद्ध खेले। रांजी ने 1895 में ससेक्स की टीम मे खेलना शुरू किया और 1920 मे इग्लैण्ड के लिए वह अतिम बार खेले। उन्होंने कुल 24692 रन बनाए (औसत 57 37) और 1896, 1900 तथा 1904 मे भी उनकी औसत रन सख्या सर्वाधिक थी।

दिलीपसिंह जी

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में दो ऐसे महान खिलाडी हुए हैं, जो भारत की ओर से कभी नहीं खेले, लेकिन इस पर भी क्रिकेट के इतिहास में 'अमर खिलाडियो' की संज्ञा प्राप्त कर गए। इनमें से एक क्रिकेट के राजा थे और दूसरे क्रिकेट के राजकुमार। एक चाचा थे और दूसरे भतीजा, एक रणजीत सिंह जी थे और दूसरे दिलीपसिंह जी। ये दोनों खिलाडी उस युग में इग्लैण्ड की ओर से खेला करते थे, जिस युग को क्रिकेट का स्वर्णिम-युग कहा जाता है। इन दोनों खिलाडियो के बारे में भारतीय क्रिकेट आलोचको ने कम लिखा और इग्लैण्ड के आलोचकों ने ज्यादा। इन दोनों खिलाडियो की खेल पद्धति मे इतनी समानता थी कि भतीजे (दिलीपसिंह जी) को अपने चाचा (रणजीतसिंह जी) का लघु संस्करण कहा जाता था। फिर किसी भारतीय खिलाडी का इग्लैण्ड में होने वाला काउण्टी मचो मे ससेक्स टीम का कप्तान होने का गौरव प्राप्त करना अपने-आप मे कोई छोटी बात नहीं कही जा सकती थी। जब भी इग्लैण्ड में कोई मैच होता तो दर्शकों को इग्लैण्ड के खिलाडियों का खेल देखने मे उतना आनन्द प्राप्त नहीं होता, जितना कि इन दोनों खिलाडियों का।

कहा जाता है कि ओवल के मैदान में इग्लैण्ड और आस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट मैच हो रहा था। एक सज्जन मैदान में थोडी देर से पहुचे। जिस समय वह खिडकी पर खडे होकर टिकट खरीद रहे थे, उस समय एक उत्साही लडके ने उनसे कहा कि क्यों बेकार में पैसे खराब कर रहे हो, दिलीप तो आउट हो गए हैं। अब किसका खेल देखने जा रहे हो?

दिलीप सिंह का जन्म 13 जून, 1905 को हुआ। वह नवानगर के महाराज जुवान सिंह जी के सुपुत्र और रणजीत सिंह जी के सबसे छोटे भतीजे थे और अपने चाचा रणजीत सिंह की ख्याति से प्रभावित होकर दिलीप सिंह ने भी क्रिकेट का खिलाडी बनने की ठानी। चेल्टेन होम में अपनी स्कूली शिक्षा समाप्त कर दिलीप ने कैम्ब्रिज में प्रवेश लिया और काउंटी ससेक्स की ओर से खेलना शुरू कर दिया। उन्होंने खेल के हर अग में अपने चाचा का अनुकरण किया और 1931 में तो उन्हें ससेक्स काउंटी का कप्तान होने का गौरव प्राप्त हुआ।

हॉब्स (सर जॉनबेरी)

1882 से 1963—प्रेस और ग्रेडमैन के बीच की अवधि में इंग्लैण्ड के यह खिलाड़ी विश्व के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज थे। उनको 'मास्टर' के नाम से पुकारा जाता था। उन्होंने अपने खेल-जीवन में 61237 रन और 197 शतक बनाए। इतने रन और कोई नहीं बना सका। इनमें से 98 शतक तो उन्होंने चालीसवें वर्ष के बाद बनाए। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध इंग्लैंड की ओर से अधिकतम (12) शतक तथा प्रथम विकिट की रोड्स के साथ साझेदारी (323) उनके रिकॉर्ड हैं। बैकफुट व गीली विकिटों पर उनका आत्मविश्वास भरा खेल होता था। 61 टेस्ट मैचों में उन्होंने 5410 रन बनाए। वह कवर-प्वाइंट पर अत्यन्त अच्छा क्षेत्ररक्षण भी करते थे। वह धीमी मध्यम गति के अच्छे गेंदबाज भी थे।

लॉक (ग्राहम)

जन्म 1929 इंग्लैंड के वामू गेंदबाज। उन्होंने 174 टैस्ट विकिट लिए। वह अनोखे शॉर्टलेग फील्डर भी थे। बाद में वह आस्ट्रेलिया में पथ में जाकर बस गये।

उनको क्रिकेट इतिहास का सर्वोत्तम क्षेत्ररक्षक माना जा सकता है। डब्लू० जी० ग्रेस और एफ० ई० वूली को छोड़कर अन्य किसी की तुलना में उन्होंने अधिक खिलाड़ी कैच किए हैं। 1957 में लॉक का सर्वश्रेष्ठ सीजन था और उसने 64 खिलाड़ियों को कैच-आउट किया। वारविकशर के विरुद्ध मैच में आठ खिलाड़ियों को कैच आउट करना भी इसमें शामिल है। 1957 में 212 विकिट 12 02 रन की औसत पर लीं। इंग्लैंड के क्रिकेट इतिहास में सन् 1888 से इतना अच्छा प्रदर्शन और किसी का नहीं रहा था। अपने खेल जीवन में 2844 रन 19 23 की औसत पर बनाये और कुल 308 कैच लिये। टेस्ट क्रिकेट में 49 टेस्ट मैचों में 174 विकेट लिए।

ज्योफ बायकाट

जन्म 21 अक्तूबर 1940, विश्व के सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाजों में से एक। धीमी गति से स्कोर करने और जबरदस्त एकाग्रता के कारण मशहूर। 1971 में वह इंग्लैंड की क्रिकेट का एक ऐसा बल्लेबाज बना

जिसे एक सत्र में 100 से अधिक औसत से रन बनाने का श्रेय मिला। *1967 में भारत के विरुद्ध लीड्स टेस्ट में अविजित 246 रन।* टेस्ट क्रिकेट में इंग्लैंड की ओर से अब तक सर्वाधिक रन बना चुके हैं। उन्होंने कुल 108 मैचों में 8114 रन बनाए जिसमें 22 शतक भी शामिल हैं।

इयान बॉथम

विश्व का एकमात्र ऐसा हरफनमौला खिलाड़ी जो बल्लेबाजी करने के लिए आता है तो अच्छे से-अच्छे गेंदबाजों की धुनाई कर देता है और जब वापस गेंदबाजी करते हैं उनकी तेज और स्विंग लेते गेंदबाजी बल्लेबाजों के लिए परेशानी खड़ी कर देती है। टेस्ट क्रिकेट में 4000 से अधिक रन, इसके साथ-साथ गेंदबाजी में भी 350 से अधिक विकेट लेने वाले विश्व के एकमात्र हरफनमौला खिलाड़ी हैं। बल्लेबाजी में इन्होंने सर्वाधिक 208 रन बनाए हैं।

पाकिस्तान

आसिफ इकबाल *1943*

पाकिस्तानी टीम के कप्तान, दायें हाथ के बल्लेबाज और मध्यम-तेज गेंदबाज हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी का क्रिकेट भारत में हैदराबाद की ओर से 1959 60 में खेलना शुरू किया। वह लगातार 45 टेस्ट मैच पाकिस्तान के लिए खेले। ओवल में 1976 में नवें विकेट पर इंग्लैंड के विरुद्ध 146 रन का स्कोर विश्व रिकार्ड है, उसी विकेट पर इन्तखाब *आलम के साथ 109 रन की साझेदारी भी विश्व रिकार्ड है।* उन्होंने 68 टेस्ट मैचों में 3575 रन बनाये और इनमें 11 शतक हैं।

इन्तखाब आलम 1941

पाकिस्तान के खिलाड़ी और विश्व-स्तर के लेगब्रेक *व गुगली* गेंदबाज। टेस्ट क्रिकेट में अपनी पहली गेंद से 1959 60 में उन्होंने

विकिट लिए और चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। डेविस घंटों ही नेट पर अभ्यास करता है। जिमनेजियम में जाकर कसरत भी करता है। वह वेस्टइण्डीज का स्थायी गेंदबाज बनना चाहता है। वह शराब, सिगरेट और अन्य व्यसनों से दूर है।

क्लाइड वालकट

क्लाइड वालकट की बल्लेबाजी उनके भारीपन की तरह थी—यानी प्रभावशाली और शक्तिशाली। वह न तो वीक्स की तरह सम्पूर्ण बल्लेबाज थे और न ही वारेल की तरह कलात्मक। वालकट की एक अलग ही शैली थी। उनका आक्रामक खेल एक मजबूत लौह स्तम्भ था।

वालकट का जन्म 17 जनवरी 1926 को हुआ। उन्होंने अपनी टेस्ट जिंदगी विकेट कीपिंग से शुरू की लेकिन केवल 15 टेस्टों के बाद 1951 52 में इस भार से मुक्त होकर अपना सारा ध्यान बल्लेबाजी पर लगा दिया। उन्होंने अपने टेस्ट क्रिकेट की शुरुआत इंग्लैण्ड के विरुद्ध वेस्ट इण्डीज में 1947 48 में की लेकिन सही मायने में 'डब्ल्यू' तिकड़ी में भारत और इंग्लैण्ड के दौरों के बाद शामिल हो सके। भारत के दौरे में 1948 49 में उन्होंने लगातार 152, 68, 54, 108, 43, 11 और 16 रन (औसत 64 57) बनाए। 1954-55 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध वेस्ट इण्डीज में उन्होंने पांच टेस्ट शतक बनाए जो किसी एक शृंखला में सबसे अधिक शतक लगाने का विश्व रिकार्ड है।

छः फुट और दो इंच लम्बे वालकट ने 44 टेस्ट मैच खेले और 56 68 की औसत से 3,798 रन बनाये जिसमें 15 शतक शामिल हैं। 15 टेस्टों की विकेट कीपिंग से उन्होंने 27 कैच और 11 खिलाड़ियों को स्टम्प आउट किया था। उसके बाद के टेस्टों में उन्होंने 26 कैच लिए। वह कभी कभी मध्यम गति की गेंदबाजी भी करते थे। दो बार टेस्टों में उन्होंने वेस्ट-इण्डीज के लिए आक्रमण की शुरुआत भी की थी।

विवियन रिचर्ड्स

जन्मस्थान (लीवर्ड आइसलैंड्स और समरसेट) 1952। दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के ऑफ ब्रेक गेंदबाज। पहला प्रथम श्रेणी मैच 1971 72 के विरुद्ध। पहला टेस्ट 1974 में भारत के विरुद्ध

जिसे एक सत्र में 100 से अधिक औसत
1967 मे भारत के विरुद्ध लीड्स टेस्ट
क्रिकेट मे इंग्लैंड की ओर से अब तक
उन्होंने कुल 108 मैचों मे 8114 रन
शामिल हैं।

इयान बॉथम

विश्व का एकमात्र ऐसा हरफनमौला
के लिए आता है तो अच्छे से-अच्छे गेंदबाजा
जब बॉथम गेंदबाजी करते हैं उनकी तेज औ
धाणो के लिए परेशानी खड़ी कर देती है
अधिक रन, इसके साथ-साथ गेंदबाजी मे भी
वाले विश्व के एकमात्र हरफनमौला खिलाड़ी
सर्वाधिक 208 रन बनाए हैं।

पाकिस्तान

आसिफ इकबाल 1

पाकिस्तानी टीम के कप्तान, दायें हाथ
तेज गेंदबाज हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी का क्रि
की ओर से 1959 60 मे खेलना शुरू किया।
पाकिस्तान के लिए खेने। ओवल मे 1976 मे
के विरुद्ध 146 रन का स्कोर विश्व रिकॉर्ड है
आलम के साथ 109 रन की साझेदारी भी
[illegible] टेस्ट मैचों मे 3575 रन बनाये और इनमें

इन्तखाब आलम 194

पाकिस्तान के खिलाड़ी और विश्व-स्ता
गेंदबाज। टेस्ट क्रिकेट में अपनी पहली गेंद से

विकिट ली। बल्लेबाजी की अनुकूल पिचो पर बड़ी लम्बी यद्यपि सदा बिल्कुल परिशुद्ध गेंदबाजी करते हैं। 43 टेस्ट मैचों मे खेलने के बाद उनके 108 विकिट 37 63 रन की औसत पर थे। फजल महमूद के बाद सफलतम गेंदबाजो मे दूसरा स्थान उनका ही है। 1969 से 75 तक 17 टेस्ट मैचो मे पाकिस्तान की कप्तानी की।

इकबाल कासिम 1953

बाए हाथ के पाकिस्तानी स्पिन गेंदबाज और बाए हाथ के बल्लेबाज। यह 44 टेस्ट मैचो मे खेल चुके हैं और 149 विकिट ले चुके हैं।

इम्तियाज अहमद 1929

पाकिस्तान के बल्लेबाज तथा विकिट- कीपर। उन्होंने 1954 में पहली बार इगलैड का दौरा किया। यह 42 टेस्ट मैचों मे खेले, 2079 रन बनाये और 93 बल्लेबाज आउट किये। 1960-61 मे इगलैंड के विरुद्ध पाकिस्तान टीम की कप्तानी भी उन्होंने की। उनका अधिकतम स्कोर न्यूजीलैंड के विरुद्ध लाहौर टेस्ट मे 209 रन था।

फजल महमूद 1927

पाकिस्तान के तेज मध्यम गति के गेंदबाज, मैटिंग विकिटो पर तो उनको खेलना लगभग असम्भव ही हो जाता था। यह दस टेस्ट मैचो मे पाकिस्तान टीम के कप्तान भी रहे। उस दौरे मे उन्होंने 77 विकिट केवल 17 35 रन की औसत पर लिए। 1956-57 मे उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मैच मे 13 विकिट लिये। खेल जीवन में उन्होंने 139 विकिट लिये।

माजिद खान 1946

पाकिस्तान के यह सलामी बल्लेबाज प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाडी जहांगीर खान के पुत्र हैं। यह पाकिस्तान के पहले ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने भोजन पूर्व 1976 मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध शतक (112) पूरा किया। उन्होंने 120 मिनट मे 18 चौको और 2 छक्को की सहायता से यह सफलता पायी। माजिद अच्छे आफ स्पिनर और [illegible] । यह 62 टस्ट-मैचो मे 3931 रन बना चुके हैं। [illegible] ने आउट किये हैं।

जिसे एक सत्र में 100 से अधिक औसत से रन बनाने का श्रेय मिला। 1967 मे भारत के विरुद्ध लीड्स टैस्ट मे अविजित 246 रन। टेस्ट क्रिकेट मे इग्लैंड की ओर से अब तक सर्वाधिक रन बना चुके हैं। उन्होंने कुल 108 मैचो मे 8114 रन बनाए जिसमे 22 शतक भी शामिल हैं।

इयान बॉथम

विश्व का एकमात्र ऐसा हरफनमौला खिलाडी जो बल्लेबाजी करने के लिए आता है तो अच्छे से-अच्छे गेंदबाजों की धुनाई कर देता है और जब बॉथम गेंदबाजी करते हैं उनकी तेज और स्विंग लेते गेंदबाजी बल्लेबाजों के लिए परेशानी खडी कर देती है। टेस्ट क्रिकेट में 4000 से अधिक रन, इसके साथ-साथ गेंदबाजी मे भी 350 से अधिक विकेट लेने वाले विश्व के एकमात्र हरफनमौला खिलाडी हैं। बल्लेबाजी म इन्होंने सर्वाधिक 208 रन बनाए हैं।

पाकिस्तान

आसिफ इकबाल 1943

पाकिस्तानी टीम के कप्तान दायें हाथ के बल्लेबाज और मध्यम-तेज गेंदबाज हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी का क्रिकेट भारत मे हैदराबाद की ओर से 1959 60 म खेलना शुरू किया। वह लगातार 45 टैस्ट मच पाकिस्तान के लिए खेले। ओवल म 1976 मे नवीं विकिट पर इग्लड के विरुद्ध 146 रन का स्कोर विश्व रिकॉड है, उसी विकिट पर इन्तखाब आलम के साथ 109 रन की साझेदारी भी विश्व रिकाड है। उन्होंने 68 टेस्ट मैचो म 3575 रन बनाये और इनमे 11 शतक हैं।

इन्तखाब आलम 1941

पाकिस्तान के खिलाडी और विश्व स्तर के लेगब्रेक व गुगली गेंदबाज। टेस्ट क्रिकेट में अपनी पहली गेंद से 1959 60 मे उन्होंने

विकिट ली। बल्लेबाजो की अनुकूल पिचों पर बडी लम्बी अवधि तक बिल्कुल परिशुद्ध गेंदबाजी करते हैं। 43 टेस्ट मैचों में खेलने के बाद उनके 108 विकिट 37 63 रन की औसत पर थे। फजल महमूद के बाद सफलतम गेंदबाजो में दूसरा स्थान उनका ही है। 1969 से 75 तक 17 टेस्ट मैचो मे पाकिस्तान की कप्तानी की।

इकबाल कासिम 1953

बाए हाथ के पाकिस्तानी स्पिन गेंदबाज और बाए हाथ के बल्लेबाज। यह 44 टेस्ट मैचों मे खेल चुके हैं और 149 विकिट ले चुके हैं।

इम्तियाज अहमद 1929

पाकिस्तान के बल्लेबाज तथा विकिट- कीपर। उन्होंने 1954 में पहली बार इंग्लैंड का दौरा किया। यह 42 टेस्ट मैचों मे खेले, 2079 रन बनाये और 93 बल्लेबाज आउट किये। 1960-61 मे इंग्लैंड के विरुद्ध पाकिस्तान टीम की कप्तानी भी उन्होंने की। उनका अधिकतम स्कोर न्यूजीलैंड के विरुद्ध लाहौर टेस्ट मे 209 रन था।

फजल महमूद 1927

पाकिस्तान के तेज मध्यम गति के गेंदबाज, मटिंग विकिटो पर तो उनको खेलना लगभग असम्भव ही हो जाता था। वह दस टेस्ट मैचों में पाकिस्तान टीम के कप्तान भी रहे। उस दौरे मे उन्होंने 77 विकिट केवल 17 35 रन की औसत पर लिए। 1956 57 में उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मैच मे 13 विकिट लिये। खेल जीवन मे उन्होंने 139 विकिट लिये।

माजिद खान 1946

पाकिस्तान के यह नामी बल्लेबाज प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाडी जहांगीर खान के पुत्र हैं। यह पाकिस्तान के पहले ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने भोजन पूर्व 1976 म न्यूजीलैंड के विरुद्ध शतक (112) पूरा किया। उन्होंने 120 मिनट मे 18 चौकों और 2 छक्कों की सहायता से यह सफलता पायी। माजिद अच्छे ऑफ स्पिनर और क्षेत्ररक्षक भी हैं। वह 62 टेस्ट-मैचो में 3931 रन बना चुके हैं। 34 खिलाडी उन्होंने आउट किये हैं।

वासिम बारी 1948

दायें हाथ के बल्लेबाज और विकिट कीपर, पाकिस्तान में विकिट रक्षण के सारे रिकार्ड उसी के हैं। मेलबर्न-टेस्ट में 1976-77 में दोनों पारियों में शून्य पर आउट होने के साथ, कुल मिलाकर 11 बार वह जीरो पर आउट हुए हैं। पाकिस्तान के 6 टेस्ट मैचों में उन्होंने कप्तानी भी की है। उन्होंने 75 टेस्ट मैचों में भाग लिया है और 228 विकिट ले चुके हैं, इसमें 201 कैच और 27 स्टम्प किये।

हनीफ मुहम्मद, 1934

पाकिस्तान के प्रसिद्ध सलामी बल्लेबाज। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 499 रन का अधिकतम स्कोर, उन्होंने कराची व बहावलपुर के मध्य मैच में बनाया था। 1958 में इंग्लैंड के विरुद्ध उन्होंने सोलह घंटे 10 मिनट की सर्वाधिक लम्बी पारी भी खेली व 337 रन उन्होंने बनायें।

अमीर इलाही, 1908

यह खिलाड़ी भारत और पाकिस्तान दोनों ही ओर से खेले। यह पहले विकिट कीपर और तेज गेंदबाज तथा फिर लेगब्रेक गुगली गेंदबाज बने। पाकिस्तान की ओर से पांच और भारत की ओर से आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एक टेस्ट खेले। इसमें 17 रन बनाये। रणजी ट्रॉफी मैचों में उन्होंने 193 विकिट लिये व 4771 रन बनाये। क्वाड्रेंगुलर तथा पेंटेंगुलर में उनके विकिट 91 सर्वाधिक हैं।

मुदस्सर नजर, 1956

भूतपूर्व पाक खिलाड़ी नजर मुहम्मद के बेटे, दायें हाथ के बल्लेबाज और तेज मध्यम गति के गेंदबाज। उन्होंने लाहौर में इंग्लैंड के विरुद्ध 1977-78 में 114 रन 557 मिनट में बनाये जो विश्व का सर्वाधिक धीमा शतक है। वह 49 टेस्ट मैचों में 3037 रन बना चुके हैं और उन्होंने 41 विकिट लिए हैं।

जावेद मियांदाद

पहला प्रथम श्रेणी मैच केवल 16 वर्ष 5 माह की आयु में खेला। 1976 77 मे अपने पहले ही टेस्ट में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 163 रन। इसी शृंखला के आखिरी टेस्ट मे 206 रन। जावेद मियांदाद इस समय पाकिस्तान के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। वह विश्व के उन गिन-चुने बल्लेबाजो मे से हैं जिन्होंने अपना औसत 50 से ऊपर रखा है। अब तक 81 टेस्ट मैचो मे 5891 रन बना चुके हैं। उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ स्कोर 280 रन (नाट आउट) रहा है।

जहीर अब्बास

विस्डन द्वारा 1971 मे सम्मानित उसके बाद 1971 म ही अपनी पहली टेस्ट यात्रा मे इंग्लैंड के विरुद्ध बर्मिंघम टेस्ट मे 274 रन। जहीर अब्बास का नाम विश्व के उन महान बल्लेबाजो मे से हैं जो 5000 से अधिक रन बना चुके हैं। अपने 74 टेस्ट मैचो मे उन्होंने 12 शतक भी बनाए हैं।

मुश्ताक मोहम्मद

दाए हाथ के बल्लेबाज तथा लैग ब्रेक गुगली गेंदबाज। पाकिस्तान के सफलतम कप्तानो मे से एक। पहला टेस्ट 15 वर्ष 124 दिन की आयु मे खेला—विश्व रिकार्ड पैकर के मजम मे पाक टीम का कप्तान। अपने 57 टेस्ट मैचों मे 3643 रन, उच्चतम स्कोर 201, 79 विकेट।

इमरान खान

इमरान की गिनती आज श्रेष्ठ हरफनमौला खिलाड़ियो के साथ विश्व के दूसरे नम्बर के तेज गेंदबाज के रूप म की जाती है। 130 किलोमीटर की रफ्तार से गेंद फेंककर उसे स्विंग कराने की कला का बेहतरीन फनकार इमरान ही है। इमरान की गेंदबाजी म स्पीड और मूवमेंट का अद्‌भुत सामंजस्य पाया जाता है। इमरान ने अपने 65 टेस्ट मैचो मे 2579 रन बनाए हैं और 290 विकिट ले चुके हैं। पाकिस्तानी गेंदबाजी के लिए इस स्तर तक पहुंचना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

25 नवम्बर 1952 को जन्मे इमरान खान माजिद खान के रिश्ते मे भाई हैं। पाक क्रिकेट के लिए खान परिवार आदर्श रहेगा।

वेस्टइंडीज

सर गारफील्ड सोबर्स

सर गारफील्ड सैंट अबने सोबस का जन्म 18 जुलाई, 1936 को हुआ। सम्पूर्ण क्रिकेट इतिहास का महानतम तथा सर्वश्रेष्ठ आलराउण्डर सोबस क्रिकेट के प्रत्येक क्षेत्र पर अपने उत्कृष्ट खेल के कारण 'हरफन मौला' के नाम से अधिक लोकप्रिय हो गया था। इग्लैंड की काउटी मे एम० नाश के ओवर की प्रत्येक गेंद को सोबस ने सीमा पार पहुचाकर 6 छक्के लगातार लगाने का श्रेय प्राप्त किया। सोबस ने 1957 58 मे किंग्स्टन मे पाकिस्तान के विरुद्ध टेस्ट मे 365 रन (अविजित) बनाए, जो अब तक किसी खिलाडी द्वारा व्यक्तिगत रूप से टेस्ट मे बनाया गया अधिकतम स्कोर है। टेस्ट क्रिकेट मे 8 हजार से अधिक रन तथा 200 से अधिक विकेट लेने वाला सोबर्स एकमात्र खिलाडी है। 1954 से 1971 तक टेस्ट क्रिकेट पर लगातार छाया रहने वाला सोबर्स 39 टेस्टो मे वेस्ट इडीज का कप्तान भी रह चुका है। गारफील्ड सोबस ने 93 टेस्टो मे 8032 रन बनाए। उसने 160 पारी खेली तथा 21 बार नाबाद रहा। 26 शतको की सहायता से उसका औसत 57 78 रन प्रति पारी था। यह देखते हुए, क्रिकेट का हर कोना सोबर्स के अद्वितीय खेल से प्रकाशित है। सोबस को सर तथा नाइट की उपाधि से विभूषित किया गया है।

सोबस ने एक टेस्ट मे शतक और 5 विकेट लेने का कठिन काय दो बार किया। सोबस ने 93 टेस्ट मैचो मे 110 कैच एव 235 विकेट लेने का गौरव भी प्राप्त कर रखा है। सोबस का 160 पारी मे 21 बार अविजित रहकर 57 78 रनो की औसत से 26 शतको की मदद से 8 032 रन बनाए। सोबस न 39 टेस्ट मैचो म वेस्ट इण्डीज के कप्तानी प‌द को सम्भाला और बडे ही शानदार ढग से उसका निर्वाह किया।

गिब्स (लेंस) 1934

वेस्टइण्डीज के यह ऑफ स्पिनर गेंद को बहुत नियंत्रित तरीके से ठीक उडान देकर लैंथ पर फेंकते हैं। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1960-61 में उन्होंने एडिलेड मे हैट ट्रिक प्राप्त की और इसके बाद अगले वर्ष भारत के विरुद्ध 8 विकिट 38 रन पर लिए। यह उनके टेस्ट जीवन का सर्वोत्तम गेंद विश्लेषण है। 309 टेस्ट विकिट(औसत 29 09)।

गोर्डन ग्रीनिज

वेस्टइण्डीज क सलामी बल्लेबाज; अत्यन्त कुशल प्रहारक। गेंद को बडी कुशलता से हुक करते हैं और ऑफ साइड पर अच्छी हिट लगाते हैं। उन्होने 77 टेस्ट मैचो मे 5509 रन बनाए हैं और उनके 13 शतक रहे, 233 अधिकतम स्कोर।

ग्रिफिथ (चार्ल्स) 1938

वेस्टइण्डीज के इस तेज गेंदबाज ने 28 टेस्ट मैचों म 28 54 की औसत पर 98 विकिट लिये। इण्डीज टीम मे 1963 के इग्लैंड के दौरे मे उन्होने 32 टेस्ट विकिट लिए और 16 20 रन प्रति विकिट की औसत रही।

सर फ्रैंक वारेल

आप ससार के प्रसिद्ध कप्तान बल्लेबाज, गेंदबाज या हरफनमौला पर लिखी कोई भी पुस्तक उठा लें, उसमे आपको एक नाम अवश्य देखने को मिलेगा और यह है सर फ्रैंक वारेल। शास्त्रीय पद्धति के इस बल्लेबाज और कलात्मक गेन्दबाज के नामोल्लेख के बिना हर पुस्तक अधूरी-सी जान पडती है। वह दायें हाथ के महान बल्लेबाज, बायें हाथ से गेंद फैंकने वाले आदश गेंदबाज, अनाडी क्षत्ररक्षक और दूरदर्शी कप्तान थ।

बहुत से लोग भले इस बात पर यकीन न करें, लेकिन वस्तुस्थिति यही है कि इस अकेले खिलाडी ने वेस्टइण्डीज क्रिकेट को गरिमा प्रदान की। उनकी उपस्थिति मात्र से नीरस मचो मे भी जान पड जाती। इतना ही नही वह खिलाडी होने के साथ साथ एक अच्छे शिक्षा शास्त्री और सीनेट के सदस्य भी थे। उन्होने मानचेस्टर विश्वविद्यालय

से स्नातक की परीक्षा पास की थी और लगभग 15 वर्ष तक क्रिकेट जगत में उनके खेल का दबदबा रहा।

जब 1947 में एलन के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम ने वेस्टइंडीज का दौरा किया तब वह पहली बार प्रकाश में आए और 1963 में जब उन्होंने क्रिकेट से संन्यास लिया तब उनकी अवस्था 39 वर्ष की थी। उसके चार साल बाद उनका असामयिक निधन हो गया।

यों तो उनका हर स्ट्रोक लाजवाब होता था, लेकिन लेटकट उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। जिन लोगों ने उनकी अन्तिम टेस्ट (1963 ओल्ड ट्रैफोर्ड) देखा है, उनका कहना है कि उन जैसा शानदार लेटकट लगाने वाला खिलाड़ी पिछले 50 वर्षों में दिखाई नहीं दिया। जिस समय उन्हें विस्डन के सम्मान से सम्मानित किया गया उस समय विस्डन में ये शब्द लिखे गए— जहां तक बल्लेबाजी के सौंदर्य का सवाल है, यदि कोई व्यक्ति अपने आपको उनसे बेहतर साबित करने का दावा करता है तो यह उसका दम्भ ही माना जाएगा।'

1950 में ट्रेंट ब्रिज में खेले गए टेस्ट में उन्होंने 300 मिनटों में 261 रन बनाए, जिसमें उन्होंने 35 चौके और 2 छक्के लगाए थे। कुछ लोग उनकी इस पारी को उनके जीवन की सर्वश्रेष्ठ पारी मानते हैं तो कुछ 1957 में ट्रेंट ब्रिज में खेली गयी पारी को, क्योंकि इसमें उन्होंने प्रारम्भिक बल्लेबाज की भूमिका निभाई थी। आस्ट्रेलिया में जब उन्होंने शतक (108 रन) बनाया था, उस समय वह चोटग्रस्त थे और लिंडवाल और मिलर जैसे गेंदबाज उन पर तेज गेंदबाजी का हमला किए जा रहे थे।

लेकिन जहां तक स्वयं वारेल का सवाल है वह कानपुर में खेले गए टेस्ट में अपने दोहरे शतक को अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन मानते हैं।

यह तो हुआ उनका बल्लेबाजी का पक्ष, अब जरा उनके गेंदबाजी के रूप की भी एक झलक प्राप्त कर ली जाए। बायें हाथ से गेंदबाजी करने वाले वारेल ने स्पिनर के रूप में काफी ख्याति अर्जित की। नये गेंद से वह सीमित और पुरानी गेंद से लेग स्पिनर फेंकते। कई बार वह वेस्टइण्डीज की ओर से आक्रमण शुरू कर देते और एक के बाद एक विकेटों की गिल्लियां उड़ानी शुरू कर देते और स्कोर बोर्ड पर लिखा रहता, इंग्लैंड 7 पर 59 रन या कि 'आस्ट्रेलिया 6 पर 38 रन'। एक अच्छे शिकारी की तरह वह हाथों की उंगलियों से ज्यादा अपने मस्तिष्क से काम लेते।

कॉन्स्टेंटाइन

वेस्ट इण्डीज के भूतपूर्व क्रिकेट कप्तान और त्रिनिदाद तथा टोबागो के लन्दन स्थित भूतपूर्व उच्चायुक्त 69 वर्षीय लॉर्ड (लेरी) कान्स्टेंटाइन का पहली जुलाई, 1975 को देहान्त हो गया। उन्हें 9 जुलाई 1975 को पोर्ट ऑफ स्पेन मे पूरी रस्मों के साथ दफनाया गया। कान्स्टेंटाइन अपने आपमें एक संस्था थे। वह केवल बढ़िया क्रिकेट खिलाड़ी ही नहीं बल्कि एक असैनिक अधिकारी, ब्रॉडकास्टर, वकील और राजनीतिक भी थे। हैमण्ड, वूली, ब्रैडमैन, लारवुड, ग्रिमेट, फ्रीमैन और थौरिसि जैसे विख्यात और उच्च दर्जे के क्रिकेट खिलाड़ियों में केवल कान्स्टेंटाइन एक खिलाड़ी थे, जिनकी बल्लेबाजी गेंदबाजी और फील्डिंग गजब की थी। भारत के कुछ क्रिकेट प्रेमियों को फरवरी 1953 की वह बात याद है, जब मद्रास के चेपक मैदान मे कान्स्टेंटाइन ने मद्रास क्रिकेट क्लब के लिए दो दिवसीय मैच मे श्रीलंका के विरुद्ध भाग लिया था। बेशक तब उनकी आयु 50 वर्ष से ऊपर थी, लेकिन खेल पर उनका वैसा ही अधिकार था जैसा कि अपनी जवानी के दिनों में था। कान्स्टेंटाइन में एक कुशल और उत्साही कप्तान की खूबियां थी, जो हर ओवर की गेंदबाजी और हर बाल के हिट किए जाने की बारीकियों को बड़े गौर से देखते और बाद में अपनी टीम के हर खिलाड़ियों को उनकी खूबियों और खामियों से अवगत कराते। उनके जीवन की एक दिलचस्प घटना याद आती है—1928 में वेस्ट इण्डीज की टीम के इंग्लैंड के दौरे के दौरान कान्स्टेंटाइन जख्मी हो गए।

लेकिन बावजूद डॉक्टर की सलाह और साथियों के अनुरोध के वह मैदान में आ गए। मिडिलसैक्स ने छः विकिटों पर 352 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। वेस्ट इण्डीज ने खेलना शुरू किया, लेकिन उसके पांच खिलाड़ी केवल 79 रनों पर ही लुढ़क गए। तब कान्स्टेंटाइन ने मोर्चा सम्भाला और 55 मिनट में 86 रन बनाकर अपनी टीम के गिरते हुए मनोबल को सम्भाला। उसके बाद उन्होंने गेंदबाजी में कमाल दिखाया और केवल 11 रन देकर इंग्लैंड की 6 विकिटें लीं। इस पर तुर्रा यह कि दूसरी पारी में कान्स्टेंटाइन ने एक घण्टे में एक शतक मारा और हारी हुई बाजी को तीन विकिटों से जीत लिया। यह रण पृष्ठ कान्स्टेंटाइन की सूझ-बूझ, आत्मविश्वास, गतिशीलता तथा साहस का परिचायक है।

कार्स्टेंटाइन अपने समय का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों में से एक था। बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण तीनों में वह निपुण था। खेलते समय वह कभी किसी कैच को छोड़ने वाला न था।

लायड (क्लाइव) 1944

वेस्टइण्डीज टीम के कप्तान और बाएं हाथ के प्रहारक बल्लेबाज। भारत के विरुद्ध 1966 67 में उन्होंने खेल जीवन का श्रीगणेश किया। 1976 में उनके नेतृत्व में वेस्टइण्डीज ने इंग्लैंड पर विजय पाई। उन्होंने ही इस टीम को 'विश्वकप क्रिकेट प्रतियोगिता में सन 1975 और फिर 1979 में विजय दिलवाई। उन्होंने सन 1976 में लंकाशर की ओर से खेलते हुए 120 मिनट में ही 201 रन बनाकर जेसप का तेज युगल शतक बनाने का रिकार्ड ध्वस्त कर दिया। वह बाएं हाथ से मध्यम तेज गति पर गेंद भी फेंकते हैं। इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध उन्होंने अपने पहले टेस्ट मैचों में ही शतक बनाए थे। वह बड़ी चुस्ती से तनाव विहीन रहकर क्षेत्ररक्षण करते हैं। उनका थ्रो उल्लेखनीय है, गिरते पड़ते वह सीधे निशाने पर गेंद फेंकते हैं। वे चश्मा पहनकर खेलते हैं। उन्होंने 110 टेस्ट मैच खेले हैं और इनमें 7513 रन 46 41 की औसत पर बनाए हैं। इनमें 19 शतक भी हैं।

अलविन इसाक कालीचरण (कप्तान)

गयाना, जन्म—मार्च 21, 19 9। 1972 में टेस्ट पदार्पण—अब तक 66 टेस्ट खेलकर 4399 रन बना चुके हैं—औसत 44 43। सर्वाधिक स्कोर—158 इंग्लैंड के विरुद्ध पोर्ट आफ स्पेन में 1974। 12 शतक टेस्ट मैचों में। स्लिप में दक्ष क्षेत्र रक्षक। बाएं हाथ के बल्लेबाज। भारतीय मूल के खिलाड़ी।

थेनवन अलोंजो होल्डर

बारबाडोस, जन्म—अक्टूबर 8 1945। टेस्ट पदार्पण 1969। वरिष्ठ व अनुभवी खिलाड़ी। नपी तुली मध्यम गति की गेंदबाजी में निपुण। दूसरी बार भारत भ्रमण पर। 40 टेस्ट 740 रन (औसत 14 35), सर्वाधिक स्कोर 42 न्यूजीलैंड के विरुद्ध पोर्ट ऑफ स्पेन

1972 । 109 टेस्ट विकेट ले चुके हैं । (औसत 30 46) । सर्वोत्तम गेंदबाजी 6/28 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पोट ऑफ स्पेन 1978 । दाएं हाथ के बल्लेबाज व गेंदबाज । पुरानी गेंद को 'कट' करने म निपुण ।

शेख फौउद अहमुल ववफस

गयाना, जन्म—जनवरी 31, 1954 । दाए हाथ के धुआधार बल्लेबाज । प्रारम्भिक व मध्य क्रम के बल्लेबाज टीम के सर्वोत्तम क्षेत्र रक्षक । भारतीय मूल के खिलाडी ।

स्मिथ (ओ नील) 1933 से 1959

वेस्टइण्डीज के इस बल्लेबाज और आफ स्पिन गेंदबाज की प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे पाच वष खेलने के बाद ही कार दुर्घटना मे मृत्यु हो गयी । उन्होने एक बार 79 रन म छह छक्के और चार चौके लगाए । उन्होंने इगलैड के विरुद्ध अपने पहले टेस्ट मे 1956 मे लाग ऑन म इतनी ओर से हिट लगाई कि गेंद ने लेडीज बालकनी की छत की टाइल को तोड दिया और छह रन दिलवाये । यह छक्का, लेकर की गद पर लगाया था । बनले क्लब मे सन् 1958 से खेलने लगे । उनके शाट से गेंद दीवारें पार करती पडोस के फुटबॉल मदान के मध्य जा गिरी । केवल 78 मिनट मे उन्होंने शतक पूरा किया ।

हॉल (वेज्ले) 1937

वेस्टइडीज के यह तेज गेंदबाज बडी लम्बी दौड लगाकर गद फेंकते थे । उन्होंने 48 टेस्ट मैचो मे 26 38 रन की औसत पर 192 विकिट लिये । अपने 20वें टेस्ट मे ही उन्होने 100वाँ विकिट ले ली थी । 1958 59 के भारत पाक दौरे मे उन्होंने 16 विकिट लिये । टेस्ट मैचो मे इडीज की ओर से तिकडी जमानेवाले वह पहले खिलाडी थे । लाड स म उन्होंने सन् 63 मे लगातार 40 ओवर गेंदबाजी की ओर तेजी म कमी नही आने दी । उन्होंने 93 रन पर 4 विकिट लिये । कम-से कम नौ बार उन्होंने विरोधी टीम की पारी मे आधे से अधिक विकिट लिये हैं ।

विंस्टन डेविस

वेस्टइंडीज द्वीप समूह मे गन्ने और नारियल की ही नही तेज गेंद-बाजों की भी खेती होती है। यही कारण है कि वेस्टइंडीज का गेंदबाजी आक्रमण मुख्यत तेज गेंदबाजो पर ही निर्भर रहता है। पहले पैकर सर्कस और फिर दक्षिण अफ्रीका को अपने उम्दा खिलाडियो को खो देने के बावजूद भी वेस्टइंडीज का खजाना खाली नहीं हुआ।

वेस्टइंडीज के नये तेज गेंदबाजो में सबसे नया नाम विंस्टन डेविस का है। डेविस ने अपने देश के लिए खेलते हुए विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता मे आस्ट्रेलिया जैसी टीम के विरुद्ध 51 रन पर सात विकेट लेकर नया रिकार्ड स्थापित किया।

विश्व कप में मैल्कम मार्शल के अस्वस्थ होने से डेविस को आस्ट्रेलिया के विरुद्ध उतारा गया था। जब किम ह्यूज को 18 रनो पर डेविस ने कप्तान लायड के ही हाथों कैच आउट कराया तब कहीं जाकर लायड का विश्वास डेविस के प्रति जगा।

ह्यूज के बाद डेविस ने यलप, एलन बार्डर, मैकसी, लासन और हॉग का आउट किया। डेविस का विश्लेषण 10 3 0 51-7 रहा जिससे वेस्टइंडीज को 101 रनों की विशाल विजय मिली।

29 वर्षीय विंस्टन वाल्टर डेविस का क्रिकेट से सम्पर्क एक विचित्र सयोग है। डेविस जो विंडवर्ड द्वीप का रहने वाला है जब 17 वर्ष का ही था तो किसी अपराध के कारण उसे स्कूल से *निकाल दिया गया।*

इसके बाद वह सेंटविंसेंट के एक तकनीकी केन्द्र मे कोर्स करने के लिए गया, यहा उसकी क्रिकेट पनपी। स्टायन हिल क्लब के मैनेजर ने जब डेविस में अपार प्रतिभा देखी तो उसे अपने क्लब से खेलने के लिए अनुबंधित कर लिया।

लायड लेविस डेविस के मसीहा हैं। स्टोयन हिल क्लब को जब से डेविस की सेवाएं मिलीं उसके ऊपर चांद लग गए और दो वर्षों बाद में ही वह लीग चैंपियन हो गई।

उसे जब किसी ने सलाह दी कि क्रिकेट की दीक्षा इंग्लैंड में पूरी होती है तो वह गर्मियों मे इंग्लैंड चला गया और यार्कशायर में एक क्लब हडरसफील्ड से खेलने लगा।

भारतीय टीम जब वेस्टइण्डीज की यात्रा पर गयी तो डेविस ने आठ-

विकिट लिए और चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। डेविस घंटों ही नेट पर अभ्यास करता है। जिमनेजियम में जाकर कसरत भी करता है। वह वेस्टइण्डीज का स्थायी गेंदबाज बनना चाहता है। वह शराब, सिगरेट और अन्य व्यसनों से दूर है।

क्लाइड वालकट

क्लाइड वालकट की बल्लेबाजी उनके भारीपन की तरह थी—यानी प्रभावशाली और शक्तिशाली। वह न तो वीक्स की तरह सम्पूर्ण बल्लेबाज थे और न ही वारेल की तरह कलात्मक। वालकट की एक अलग ही शैली थी। उनका ऽशात्मक खेल एक मजबूत लौह स्तम्भ था।

वालकट का जन्म 17 जनवरी 1926 को हुआ। उन्होंने अपनी टेस्ट जिंदगी विकेट कीपिंग से शुरू की लेकिन केवल 15 टेस्टों के बाद 1951 52 में इस भार से मुक्त होकर अपना सारा ध्यान बल्लेबाजी पर लगा दिया। उन्होंने अपने टेस्ट क्रिकेट की शुरुआत इंग्लैण्ड के विरुद्ध वेस्ट इण्डीज में 1947 48 में की लेकिन सही मायने में 'डब्ल्यू' तिकड़ी में भारत और इंग्लैण्ड के दौरों के बाद शामिल हो सके। भारत के दौरे में 1948 49 में उन्होंने लगातार 152, 68, 54, 108, 43, 11 और 16 रन (औसत 64 57) बनाए। 1954-55 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध वेस्ट इण्डीज में उन्होंने पांच टेस्ट शतक बनाए जो किसी एक शृंखला में सबसे अधिक शतक लगाने का विश्व रिकार्ड है।

छः फुट और दो इंच लम्बे वालकट ने 44 टेस्ट मैच खेले और 56 68 की औसत से 3,798 रन बनाये जिसमें 15 शतक शामिल हैं। 15 टेस्टों की विकेट कीपिंग से उन्होंने 27 कैच और 11 खिलाड़ियों को स्टम्प आउट किया था। उनके बाद के टेस्टों में उन्होंने 26 कैच लिए। वह कभी कभी मध्यम गति की गेंदबाजी भी करते थे। दो बार टेस्टों में उन्होंने वेस्ट इण्डीज के लिए आक्रमण की शुरुआत भी की थी।

विवियन रिचर्ड्स

उपकप्तान (लीवर्ड आइसलैंड्स और समरसेट)। जन्म 7 मार्च, 1952। दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के आफ ब्रेक एवं मध्यम गति के गेंदबाज। पहला प्रथम श्रेणी मैच 1971 72 में विंडवर्ड आइसलैण्ड्स के विरुद्ध। पहला टेस्ट 1974 में भारत के विरुद्ध बंगलौर में। 1976

के वर्ष में 11 टेस्ट मैचों में 1710 रन बनाये—एक वर्ष में सबसे अधिक रन का रिकार्ड। 1976 में विस्डन द्वारा सवश्रेष्ठ खिलाड़ी। टेस्ट रिकार्ड 88 टेस्ट, 131 पारियां, 6472 रन, (औसत 52 61), सर्वाधिक 291, 20 शतक, 28 अर्धशतक, 85 कैच, 22 विकेट (औसत 56.57)।

अगर आपसे यह पूछा जाए कि आज विश्व का नम्बर एक बल्लेबाज कौन है, तो आप न तो गावस्कर का नाम लेंगे, न ग्रेग चैपल का, न जहीर अब्बास का और न ही डेविड गोवर का। बल्कि आप निश्चित रूप से वह वेस्ट इण्डीज के विवियन रिचर्ड्स को देंगे। गावस्कर, चैपल, जहीर या गोवर के समक्ष गेंदबाजी करते समय कोई भी गेंदबाज अपनी आक्रामक क्षमता को नहीं भूलता लेकिन जब वह विवियन रिचर्ड्स के सामने आता तो उसकी एक ही कामना होती है कि विकेट चाहे मिले या न मिले, लेकिन कम से कम रिचर्ड्स उसकी गेंदों की धुनाई न करे, उसका गेंदबाजी विश्लेषण मटियामेट न कर दे।

इतना होने पर भी आप रिचर्ड्स को केवल एक आक्रामक बल्लेबाज या ऐसा बल्लेबाज नहीं कह सकते जिसकी मंशा हर एक गेंद को पीटने की ही हो। उसके शाटस में असीम शक्ति ही नहीं होती बल्कि उसमें कलात्मकता के भी दर्शन होते हैं। रिचर्ड्स का कोई भी शाट ऐसा नहीं होता जिसका उल्लेख क्रिकेट की किताबों में न मिलता हो। इन्हीं सब बातों के कारण रिचर्ड्स को गावस्कर, चैपल, जहीर और गोवर से इक्कीस माना जाता है।

क्रिकेट में रिचर्ड्स ने न केवल एक बल्लेबाज की हैसियत से बल्कि एक आफ स्पिनर और एक कुशल क्षेत्ररक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया। विवियन रिचर्ड्स की पहले-पहल चर्चा 1973 में हुई थी। उस समय समरसेट काउंटी की एक टीम वेस्ट इण्डीज के दौरे पर गई थी। रिचर्ड्स द्वारा गेंद को खेलने के लिए अपनायी गई तकनीक को देखते हुए उसी दौरे के दौरान ही उसे काउंटी क्रिकेट में खेलने का आमन्त्रण प्राप्त हो गया था। इस चुनौती भरे आमन्त्रण को स्वीकार करते हुए रिचर्ड्स ने पहले ही सीजन में 2000 रन बनाकर दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया था।

इस सफलता के बाद तो रिचर्ड्स का जादू सर चढ़कर बोलने लगा। वेस्ट इण्डीज के चयनकर्ता इस नवोदित प्रतिभा को कहां तक नजरअन्दाज कर सकते थे। इसलिए जब 1974 में भारत के दौरे के

लिए क्लाइव लायड को वेस्ट इण्डीज का कप्तान मनोनीत किया गया तो रिचर्ड्स भी टीम में एक सदस्य के रूप में चुन लिया गया।

मैल्कम मार्शल

जन्म 18 अप्रैल, 1958 दायें हाथ के तेज गेंदबाज और दायें हाथ के आक्रामक बल्लेबाज, पहला प्रथम श्रेणी मैच 1977-78 मे जमैका के विरुद्ध। पहला टेस्ट 1978 79 में भारत के विरुद्ध बंगलौर में। इस समय विश्व के सबसे खतरनाक तेज गेंदबाज जो किसी भी बल्लेबाज के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकते हैं। टेस्ट रिकार्ड—51 टेस्ट 1068 रन, 240 विकेट।

डेसमण्ड हेन्स

जन्म 15 फरवरी 1956, दायें हाथ के बल्लेबाज। पहला प्रथम श्रेणी मैच 1977 मे जमैका के विरुद्ध। पहला टेस्ट 1977-78 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पोर्ट आफ स्पेन मे खेला जिसमें इन्होंने 61 रन बनाए। टेस्ट रिकार्ड—65 टेस्ट, 4012 रन, 9 शतक। आजकल गोर्डन ग्रिनिज के साथ वेस्ट इण्डीज के लिए ओपनिंग करते हैं।

लैरी गोम्स

जन्म 13 जुलाई, 1953, बायें हाथ के बल्लेबाज और दायें हाथ के आफ स्पिनर। पहला टेस्ट 1976 में इंग्लैण्ड के विरुद्ध नाटिंघम में खेला। टेस्ट क्रिकेट और एक दिवसीय क्रिकेट में इन्होंने कई अच्छी पारियां खेली हैं। टेस्ट क्रिकेट में इनका उच्चतम स्कोर 143 रन है। टैस्ट रिकार्ड 60 टेस्टो में 3172 रन, 9 शतक और 13 अर्धशतक।

माइकल होल्डिंग

जन्म 16 फरवरी, 1954, दायें हाथ के तेज गेंदबाज, पहला प्रथम श्रेणी मैच 1973 में बारबाडोस के विरुद्ध खेला। पहला टेस्ट 1975-76 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध ब्रिस्बेन में खेला। तेज गेंदबाजी के साथ-साथ समय पड़ने पर अच्छी बल्लेबाजी भी कर लेते हैं। गेंदबाजी में इनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 8 विकेट केवल 92 रन देकर है। कुल 60 टैस्ट मचो में 910 रन, 249 विकेट।

आस्ट्रेलिया

डान ब्रेडमेन

आस्ट्रेलिया के डान ब्रेडमेन विश्व के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं, इसमें दो राय नहीं हो सकती। आप चाहें तो उन्हें क्रिकेट का बादशाह भी मान सकते हैं। यह ठीक है कि टेस्ट मैचों में अधिक रन बनाने के मामले में ब्रेडमेन को सोबर्स, काउड्रे, हैमड आदि ने काफी पीछे छोड़ रखा है और प्रथम श्रेणी की क्रिकेट में उनके 18069 रनों के मुकाबले कई बल्लेबाज 30 000 से अधिक रन बना चुके हैं, जिसमें कि हाब्स, सोबर्स आदि के साथ क्लिव लॉयड जैसा खिलाड़ी भी शामिल है परन्तु इससे उनकी श्रेष्ठता और महानता पर कोई आंच नहीं आती। यह नहीं भूलना चाहिए कि इन सभी ने ब्रेडमेन से अधिक टेस्ट व प्रथम श्रेणी के मैच खेले हैं और औसत में सबके सब उससे कोसों पीछे हैं। ब्रेडमेन का टेस्टों का 99 94 व प्रथम श्रेणी का 95 14 औसत अभी तक अद्वितीय है और वर्षों अद्वितीय रहने की आशा है। आशा क्या है रहेगा ही क्योंकि ऐसी जन्मजात प्रतिभा वाले खिलाड़ी कम ही होते हैं।

ब्रेडमेन का वह युग था, जिसमें हेराल्ड लारवुड तथा बिल बौस के अलावा बिल वोवस तथा गबी एलेन सरीखे तेज गेंदबाज क्रिकेट के मैदान में मौजूद थे। अद्भुत विलक्षण शक्ति वाले ब्रेडमेन का औसत भी उसके समान ही अद्भुत तथा आश्चर्यजनक है। 5 टेस्टों की 80 पारियों में 10 बार नाबाद रहकर 29 शतकों की सहायता से ब्रेडमेन ने 6996 रन बनाए। उसका उच्चतम स्कोर था—334 रन तथा औसत था 99 94 रन प्रति पारी। अपने पूरे क्रिकेट जीवन में ब्रेडमैन ने 37 दोहरे शतक तथा छः तिहरे अर्द्ध शतक बनाए थे। वह सिर्फ चार रनों की कमी से 100 00 का औसत प्राप्त करने से वंचित रह गया। सर्वकालीन बल्लेबाज ब्रेडमन क्रिकेट की परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने में सक्षम था। ऐसे महान खिलाड़ी के नेतृत्व में आस्ट्रेलिया की टीम एक बार भी टेस्ट शृंखला नहीं हारी। ब्रेडमैन के बारे में जो कुछ लिखा जाए, वह थोड़ा ही है। सर लियरी कास्टटाइन ने अपनी पुस्तक 'क्रिकेट इन दि सन में दिए गये विश्व एकादश 1945 में, इंग्लैंड के कप्तान के डो ब्राउन ने 1945 में अपनी पुस्तक 'क्रिकेट मास्टेरियर' में तथा 1956 में प्रकाशित लेन हटन की पुस्तक 'जस्ट माई स्टोरी' में

चुनी गई विश्व एकादशो मे सर डान ब्रेडमैन टीम के आधार स्तम्भ थे।

प्रथम श्रेणी की क्रिकेट में भी ब्रेडमैन ने असंदिग्ध क्षमता का परिचय दिया और 338 पारियों में 195 14 की औसत से 28067 रन बनाए, जिसमे 117 शतक शामिल हैं।

कप्तान के रूप मे भी ब्रेडमैन की प्रतिभा निर्विवाद है। उसकी कप्तानी का काल आस्ट्रेलियाई क्रिकेट का स्वर्ण युग कहलाता है। ब्रेडमैन नेतृत्व मे आस्ट्रेलिया एक शृंखला नही हारा। ब्रेडमैन अत्यन्त चतुर और योग्य कप्तान था। उसने 24 टेस्ट मैचों में आस्ट्रेलिया की टीम की कप्तानी की, जिसमे 15 मे उसे विजय मिली और केवल 3 में पराजय।

आर्मस्ट्राग (वारविक) 1879 से 1947

आस्ट्रेलिया के इस विशालकाय क्रिकेट खिलाडी को 'बिग शिप' के नाम पुकारा जाता था। वह उत्तम बल्लेबाज थे और धीमी लेगब्रेक गेंद फेंकने थे। 50 टेस्ट मैचो म उन्होने 2863 रन बनाए और 87 विकेट लिए। जोहानीजबग म दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध 159 रन (अविजित) का उनका स्कोर उनके टेस्ट जीवन का सवश्रेष्ठ स्कोर था। सिडनी म 1920 म उन्होने इगलड के विरुद्ध 158 रन बनाए। नाटिघम मे 1902 म इगलड क विरुद्ध मच मे 47 रन पर आठ विकिट लिए, यह उनका सवश्रेष्ठ गेंदबाजी रिकाड है।

नील हार्वे

नील हार्वे की गिनती आस्ट्रेलिया के ही नही विश्व के समकालीन महान सव्य बल्लेबाजो मे की जाती है। 1947 48 की शृंखला मे भारत के विरुद्ध अपना टेस्ट जीवन प्रारम्भ करने वाला नील हार्वे एक अत्यन्त आकर्षक बल्लेबाज और कवर-प्वाइण्ट पर असाधारण फील्डिंग करने वाला खिलाडी था।

राबर्ट नील हार्वे का जन्म 8 अक्तूबर, 1928 को आस्ट्रेलिया के एक खिलाडी परिवार मे हुआ। शेफील्ड शील्ड म पहले विक्टोरिया और फिर न्यू साउथ वेल्स की ओर से खेलने वाला नील हार्वे लगभग 15 वर्ष तक आस्ट्रेलिया टीम का स्तम्भ रहा। हार्वे को आस्ट्रेलिया की ओर

से सबसे अधिक 79 टेस्ट खेलने का श्रेय प्राप्त है। वह विश्व के उन गिने-चुने बल्लेबाजों में है, जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 6 हजार से अधिक रन और 20 से अधिक शतक बनाए हैं।

हार्वे ने 79 टेस्ट मैचों की 137 पारियों में 10 बार अविजित रहकर 6149 रन बनाए, जिसमें 21 शतक और 24 अर्द्ध शतक शामिल थे। हार्वे का उच्चतम स्कोर 205 रन था, जो उसने दक्षिण अफ्रीका [illegible] विरुद्ध 1952 53 की शृंखला के मेलबोर्न टेस्ट में बनाया था। हार्वे की प्रति पारी टेस्ट औसत 48 41 रन है। हार्वे ने अपने यशस्वी टेस्ट जीवन में 64 कैच भी लपकें और 3 विकेट भी लिए।

हार्वे ने अपने 21 टेस्ट शतकों में 8 दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध, 6 इंग्लैंड के विरुद्ध, 4 भारत के विरुद्ध और तीन शतक वेस्टइण्डीज के विरुद्ध बनाए। अपने 6149 रनों में से 2416 रन हार्वे ने इंग्लैंड के विरुद्ध बनाए। डान ब्रेडमैन और क्लेम हिल के अतिरिक्त अन्य किसी आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ने इंग्लैंड के विरुद्ध इतने रन नहीं बनाए।

हार्वे ने अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध किया। *1949 50 की दक्षिण अफ्रीका यात्रा में हार्वे ने 1526 रन बनाए।* 1952-53 की दक्षिण अफ्रीका की यात्रा में हार्वे ने 5 टेस्ट मैचों की शृंखला में 3 शतकों और एक द्विशतक की सहायता से 834 रन बनाए, जो दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध एक रिकार्ड है। एक शृंखला में इससे अधिक रन बनाने का श्रेय सिर्फ ब्रेडमैन (इंग्लैंड के विरुद्ध 1930 की शृंखला में 970 रन) और हैमण्ड (आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1928-29 की शृंखला में 905 रन) को है।

हार्वे ने इंग्लैंड के विरुद्ध 1962 63 की शृंखला के सिडनी टेस्ट में 6 कैच भी लपके जो उसका फील्डिंग का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। 1953 की इंग्लैंड यात्रा में हार्वे ने 2 हजार से अधिक रन बनाने का सम्मान प्राप्त किया।

चैपल (इयान) 1943

आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज जो अपने तेज पैंतरे के कारण अत्यन्त मशहूर हैं। उन्होंने 75 टेस्ट मैचों में 42 86 रन की औसत पर 5345 रन बनाए। इनमें 14 शतक भी हैं। उन्होंने सन् 1971 में लारी से टीम

की कप्तानी सम्हाली और 30 टेस्ट मैचों मे से अपनी टीम को 15 में विजय दिलवाई । इससे पहले मॉरी के नेतृत्व मे आस्ट्रेलिया की टीम लगातार पिछले नौ टेस्ट-मैचो मे से एक मे भी विजय नहीं पा सकी थी ।

चैपल ग्रेगरी स्टीफन

जन्म 7 अगस्त, 1948

इयान चैपल का छोटा भाई तथा आस्ट्रेलिया के वर्तमान कप्तान । फुटवर्क के मामले में इस समय विश्व में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज । अपने पहले ही टेस्ट मे इंग्लैण्ड के विरुद्ध (वर्ष 1870 71) शतक । इयान द्वारा कप्तान-पद छोड़ने [redacted] बाद से आस्ट्रेलिया का नेतृत्व—(केवल पैकर सर्कस के अरसे को छोड़कर) ।

ग्रेगरी सिडनी एडवर्ड

जन्म 14 अप्रैल 1870 मृत्यु 31 जुलाई 1929

कितावी स्ट्रोक खेल सकने वाला आस्ट्रेलिया का एकमात्र बल्लेबाज । कवर के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षकों में से एक । कुल 58 टेस्ट जिनमे से 52 इंग्लैण्ड के विरुद्ध । 1909 मे ओवल मे डब्ल्यू बार्डस्ले के साथ ग्रेगरी ने पहले विकेट के लिए 135 मिनट मे 180 रन जोड़े । कुल 58 टेस्टों मे 24 53 क औसत से ब 2282 रन ।

हिल क्लेमेंट 'क्लेम'

जन्म 18 मार्च 1877 मृत्यु 5 सितम्बर 1945

कुछ समीक्षकों की राय मे आस्ट्रेलिया का सर्वश्रेष्ठ खब्बू बल्लेबाज । शुरू मे विकेटकीपिंग भी, पर बाद मे सारा ध्यान बल्लेबाजी में । 1901 02 मे इंग्लैण्ड के विरुद्ध लगातार तीन पारियों म 99, 98 व 97 के स्कोर । टेस्टो मे सर्वोच्च स्कोर 191 (विरुद्ध दक्षिणी अफ्रीका 1910 11) तथा प्रथम श्रेणी क्रिकेट मे अविजित 365 रन । कुल 49 टेस्टों में 39 55 औसत से 3402 रन (7 शतक) ।

किपेक्स, एलन एफ

जन्म 25 मई 1897 मृत्यु 5 सितम्बर 1972

कोई महान बल्लेबाज नही, पर एक रिकार्ड के कारण क्रिकेट इतिहास में विशेष स्थान। किपेक्स और जे ई हूकर ने 1928 29 म मेलबोर्न मे न्यू साउथवेल्स के लिए विक्टोरिया के विरुद्ध दसवें विकेट के लिए 307 रन जोड़े। इन 307 रनो म किपेक्स का योगदान था—अविजित 260 रन। प्रथम श्रेणी क्रिकेट म औसत 57 69। कुल 22 टेस्टों मे 1192 रन।

बर्ज (पीटर) 1932

आस्ट्रेलिया के इस बल्लेबाज ने 42 टेस्ट मैचो मे 2290 रन बनाए। ओवल मैदान मे 1961 मे इंग्लैण्ड के विरुद्ध 181 रन ट्रूमैन तथा स्टैथम की गेंदो पर उन्होने बनाए। 1964 मे उन्होंने हेडिंग्ले मे 160 रन की अविस्मरणीय पारी खेली और टीम को विजय की ओर अग्रसर किया।

मार्श (रोडनी) 1947

आस्ट्रेलिया के विश्वविख्यात विकेटकीपर हैं। मार्श ने अपने क्रिकेट जीवन मे 1000 रन और 100 कैच 25वें टेस्ट म लेने मे सफलता पाई थी। उन्होने 1674 75 मे आस्ट्रेलियाई क्रिकेट वर्ष मे 64 खिलाडी आउट करके रिकॉर्ड स्थापित किया। 96 टस्ट मैचो म 3633 रन 56 51 रन की औसत पर बनाए हैं। उसने 356 खिलाडियो को आउट किया है—इनमे 344 का कैच और 12 स्टम्प। उसने तीन शतक भी जमाए हैं।

ओल्डफील्ड (विलियम) 1897 1976

आस्ट्रेलिया के श्रेष्ठतम विकिटकीपरो मे गिने जाते थे। वे दो महायुद्धो के बीच की अवधि मे 54 टेस्ट मैच खेले। 130 बल्लेबाजों को उन्होने आउट किया। इनमे से 54 को स्टम्प किया। वह अच्छे बल्लेबाज भी थे। मैलबन मे उन्होंने 1925 म एक पारी मे इंग्लैण्ड के पाच खिलाडियो को आउट किया, इनमे से 1 लपका

और चार स्टम्प किये थे। ब्रिस्बेन मे 1928-29 में इग्लैण्ड ने 521 रन बनाए तो आल्डफील्ड ने एक भी बाई नहीं दी। अगले टेस्ट मे इग्लैण्ड के 636 के स्कोर मे केवल दो बाई थी और इसके बाद चार पारियों मे इग्लैण्ड ने शृ खला के 1923 रन पूरे किए तो कुल 3 बाई थी।

एलन राबर्ट बोर्डर (कप्तान)

27 जुलाई 1955 को ज मे इस समय एलन बोडर को विश्व के सबसे बेहतरीन बल्लेबाजों मे से एक गिना जाता है और आस्ट्रेलिया की टीम इस भारत यात्रा के दौरान बोर्डर की बल्लेबाजी पर बहुत अधिक निर्भर करेगी। 1985 86 मे जब भारत ने आस्ट्रेलिया की थी तो बोर्डर ने 3 टेस्ट मैच मे 59 60 औसत से 298 रन बनाये थे। 1979 80 मे जब बोडर ने किम ह्यूज की टीम के साथ भारत की यात्रा की थी तो उसने 6 टस्ट मैच में 13 11 की औसत स 521 रन बनाए थे। इससे स्पष्ट है कि भारतीय गेंदबाजो के लिए बोडर हमेशा ही एक मुश्किल बल्लेबाज सिद्ध हुआ है।

बोडर ने अपना प्रथम श्रेणी मैच 1976 77 म न्यू साउथ वेल्स के लिए 21 वर्ष की उम्र मे खेला था। उसके बाद कभी उसन पीछे मुडकर नही देखा। प्रथम श्रेणी क्रिकेट मे उसका सर्वाधिक स्कोर 200 है जो उसने 1979 80 मे न्यू साउथ वल्स के लिए क्वीसलैंड क विरुद्ध बनाया था। टेस्ट क्रिकेट मे उसका सर्वाधिक स्कोर 196 रन है जो 1985 म इग्लण्ड के विरुद्ध लाडस टेस्ट मे बनाया था। 1980 मे पाकिस्तान के विरुद्ध लाहौर टेस्ट मे एलन बोडर ने दोनो पारियो मे शतक बनाया था—150 एव 153 रन—एक टेस्ट की दोनों पारियो मे 150 या इससे अधिक रन बनाने वाला वह अकेला बल्लेबाज है।

इस समय बोडर 84 टेस्ट मैच खेल चुका है और आस्ट्रेलियाई टीम का सबसे अनुभवी खिलाडी है।

ग्रगरी रिचर्ड जॉन मैथ्यूज

मजाकिया व्यक्तित्व के न्यू साउथ वेल्स से आये इस आलराउडर का जन्म 15 दिसम्बर 1959 को हुआ था। एक खिलाडी क रूप मे मैथ्यूज का कोई मुकाबला नही है पर क्रिकट प्रेमियों और दशकों ने

बीच मय्यूज अपनी हल्की फुल्की हरकतों के कारण भी बहुत लोकप्रिय है। वह बायें हाथ का आक्रामक बल्लेबाज है, दायें हाथ से ऑफ ब्रेक गेंदबाजी करता है और कवर पर बेहद फुर्ती के साथ क्षेत्ररक्षण करता है। 1985 86 मे अपनी आस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान भारतीय टीम को इस खिलाडी के साथ बहुत कडा मुकाबला करना पड़ा था। मय्यूज ने 3 टेस्ट मे 47 75 औसत से 1 शतक के साथ 191 रन बनाये थे।

डेविड राबर्ट गिल्बर्ट

न्यू साउथ वेल्स के दायें हाथ के इस तेज गेंदबाज का जन्म 19 दिसम्बर 1960 को हुआ था। इस समय आस्ट्रेलिया की टीम तेज गेंदबाजी मे गिल्बट पर बहुत अधिक निर्भर है। गिल्बट जरूरत पड़ने पर उपयोगी बल्लेबाजी भी कर लेता है। 1985 86मे जब भारत ने आस्ट्रेलिया की यात्रा की तो गिल्बट ने 2 टेस्ट मैच में 15 रन बनाये थे और 4 विकेट लिए थे।

डेव गिल्बट कभी कभी बहुत तेज गेंद फेंकता है और उसका सबसे प्रमुख हथियार दायें हाथ के बल्लेबाज के लिए इनस्विंगर गेंद फेंकना है। ये गेंद फेंकना उसे इमरान खान ने सिखाया है जो 1984 85 के वर्ष में न्यू साउथ वेल्स के लिए खेला था।

क्रेग जॉन मेकडरमॉट

आस्ट्रेलियाई क्रिकेट मे पिछले कुछ वर्षों मे बडी तेजी से चमकने वाले दायें हाथ के क्वींसलैंड राज्य के इस तेज गेंदबाज का जन्म 14 अप्रैल 1965 को हुआ था। मेकडरमॉट सही मायने में एक तेज गेंदबाज है और उसमे बल्लेबाजों को भयभीत करने का दम है। यार्कर गेंदें उसका प्रमुख हथियार हैं और अपनी गेंदो की तेजी मे परिवतन करने की कला उसने आस्ट्रेलिया के महान तेज गेंदबाज डेनिस लिली से सीखी है। 1985 86 में जब भारत ने आस्ट्रेलिया की यात्रा की तो मेकडरमॉट अधिक सफल नही रहा था। उसने दो टेस्ट मैचो में 66 66 औसत से सिर्फ तीन विकेट लिए।

ज्योफरी राबर्ट मार्श

पश्चिम आस्ट्रेलिया टीम के भरोसे के बल्लेबाज मार्श ने आस्ट्रे-

लियाई टीम मे एक सलामी बल्लेबाज के रूप में अपने लिए सुरक्षित स्थान बना लिया है। मार्श का जन्म 31 दिसम्बर 1958 को हुआ था और वह दायें हाथ का बल्लेबाज है। 1985 86 का वर्ष तो उसके लिए विशेष रूप से भाग्यशाली सिद्ध हुआ है और उसने कई शानदार पारियां खेलने के साथ कई अवसरो पर डेविड बून के साथ मिलकर आस्ट्रेलिया को शानदार शुरुआत दी है, वह विकेट पर टिककर रन बनाने की कला जानता है इसलिए उसका विकेट लेने के लिए गेंदबाजो को अच्छी मेहनत करनी पडती है।

ब्रूस रीड

पश्चिम आस्ट्रेलिया के इस बायें हाथ के तेज गेंदबाज का नाम 1985-86 के वर्ष के दौरान बडी तेजी से चमका। वह 5 फुट 8 इंच लम्बा है। और इस तरह से अपनी लम्बाई मे वह वेस्टइंडीज के गारनर को भी पीछे छोड देता है। वैसे गारनर के मुकाबले मे वह बहुत हल्का फुल्का है लेकिन गेदो की तेजी मे वह गारनर का मुकाबला कर सकता है। 1985 86 मे भारत के विरुद्ध 3 टेस्ट मैचो मे उसने 29 54 औसत से 11 विकेट लिए और वह आस्ट्रेलिया का सबसे सफल गेंद-बाज था। विश्व श्रृंखला कप मे उसने 25 17 औसत से 17 विकेट लिए जिसमे एक हैट ट्रिक शामिल है।

साइमन पीटर डेविस

विक्टोरिया टीम के इस दायें हाथ के मध्यम तेज गति के गेंदबाज का जन्म 8 नवम्बर 1959 को हुआ था। अभी डेविस ने सिर्फ एक टेस्ट मैच खेला है लेकिन एकदिवसीय क्रिकेट में वह आस्ट्रेलिया के लिए बहुत अच्छा प्रदर्शन कर चुका है। 1985 86 के विश्व श्रृंखला कप मे उसने 16 61 औसत से 18 विकेट लिए थे और वह आस्ट्रेलिया का सबसे सफल गेंदबाज था। 1985 86 मे उसे भारत के विरुद्ध टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका नहीं मिला। वह आस्ट्रेलिया की युवा टीम के साथ इंग्लैण्ड की यात्रा कर चुका है।

न्यूज़ीलैण्ड

कांगडन (बेवन अर्नेस्ट 1938)

न्यूज़ीलैंड के ऑलराउंडर। उन्होंने जी० टी० डाउलिंग के बाद 1971 72 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी की और 17 टेस्ट मैचों के बाद 1976 में एम० टर्नर को कप्तानी की बागडोर सौंप दी। वह दाएं हाथ से मध्यम-तेज गति की गेंद फेंकते हैं। वह 100 से अधिक विकिटें प्रथम श्रेणी के मच में ले चुके हैं। टेस्ट जीवन में इंग्लैंड के विरुद्ध ट्रेंटब्रिज में उन्होंने 1973 में 176 रन बनाए थे और न्यूज़ीलैंड को विजय की स्थिति तक पहुंचा दिया था, यद्यपि अन्तत उनकी टीम हार ही गई थी।

टर्नर (ग्लेन) 1947

न्यूज़ीलैंड के इस बल्लेबाज ने 39 टेस्ट मैचों में 2920 रन बनाए और इनमें 7 शतक प्राप्त किए। उनका अधिकतम स्कोर 259 रन रहा है। 40 कैच लिए हैं।

टेलर (ब्रूस) 1943

न्यूज़ीलैंड के इस क्रिकेट खिलाड़ी ने 1973 तक अवकाश लेने के समय तक 111 विकिट लिए थे। इतने विकिट और किसी न्यूज़ीलैंड के खिलाड़ी ने नहीं लिए। उन्होंने 1971-72 की टेस्ट शृंखला में वेस्ट-इण्डीज के विरुद्ध 74 रन पर 7 विकिट लिए थे। उन्होंने अपने खेल-जीवन के पहले दोनों शतक टेस्ट-मैचों में ही बनाये—भारत के विरुद्ध कलकत्ता में 1965 में 105 तथा वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 124। इनमें से 50 रन तीस मिनट में ही उन्होंने बना लिए थे जो कि अनोखा रिकार्ड है। उन्होंने कलकत्ता टेस्ट मच में पारी में 86 रन पर पांच विकिट भी लिये। ऐसा शानदार टेस्ट श्रीगणेश शायद और किसी खिलाड़ी का नहीं हुआ होगा। वह बाएं हाथ के बल्लेबाज थे और मध्यम तेज गति से दाएं हाथ से गेंदबाजी करते थे।

रीड (जॉन रिचर्ड) 1928

न्यूज़ीलैंड व ओटैगो तथा विलिंगटन के खिलाड़ी, विलिंगटन की ओर से 1962-63 में उन्होंने 296 रन बनाते हुए 15 छक्के लगाए और विश्व-रिकॉर्ड तोड़ दिखाया। 1955-56 मे उन्होने न्यूज़ीलैंड टीम की कप्तानी की और उनको वेस्टइंडीज के विरुद्ध प्रथम टेस्ट-विजय दिलाई। वह लगातार 58 टेस्ट-मैचों में खेले। इनमें से 34 मे कप्तानी की। वह ऑलराउण्डर थे और 1954 55 मे उन्होंने रेडपथ-कप और विंडसर-कप क्रमश सवश्रेष्ठ बल्लेबाजी और गेंदबाजी पर जीत लिए।

सटक्लिफ (बर्ट) 1923

न्यूज़ीलैंड खिलाड़ी जो क्रिकेट-इतिहास के खब्बू खिलाड़ियो मे श्रेष्ठतम माने जाते हैं। टर्नर को छोड़ अन्य किसी न्यूज़ीलैंड खिलाड़ी की तुलना मे उन्होने अधिक रन (172 3) और अधिक शतक (42) बनाए। दो बार 300 से अधिक रन बनाए। उन्होंने ओटैगो मे 1952-53 मे 385 रन का जो स्कोर किया, वह किसी खब्बू बल्लेबाज का अधिकतम स्कोर है। 1949 मे सटक्लिफ न इग्लैंड के दौरे म 2627 रन 59 70 की औसत पर बनाये। इग्लैंड भ्रमण करने वाली टीमो मे ब्रेडमन ने ही इससे बेहतर रन बनाय हैं। सटक्लिफ ने अपने खेल-जीवन मे चार बार दोनों पारियो मे शतक बनाए।

बर्जेस (मार्क)

न्यूज़ीलैंड के इस बल्लेबाज ने अपने जीवन मे अब तक 50 टेस्ट खेले हैं, इनमे पाच शतकों सहित उन्होंने 2684 रन बनाए हैं। उनका अधिकतम स्कोर 119 (अविजित) है।

वारन लीज

न्यूज़ीलैंड के बल्लेबाज विकिटकीपर, जो अत्यन्त उत्कृष्ट क्षेत्र रक्षक हैं। उन्होंने 12 टैस्ट मैचों मे 557 रन बनाये और 22 खिलाड़ियो को लपका तथा 7 को स्टप किया।

हॉवर्थ (ज्योफ)

न्यूजीलैंड के इस बल्लेबाज ने अपने खेल-जीवन के 37 टेस्ट मैचों मे 2107 रन बनाये। इनका अधिकतम स्कोर 123 रन रहा।

इन्होंने कुल 6 शतक बनाए जिसमे इनका उच्चतम स्कोर 147 रन था।

मार्टिन क्रो

मार्टिन क्रो न्यूजीलैंड के अब तक के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों मे से एक हैं, इन्होंने न्यूजीलैंड के लिए टेस्ट मचो मे तो कई बेहतरीन पारियां खेली ही हैं इसके साथ साथ एक दिवसीय मैचो मे भी वह एक आक्रामक खिलाडी के रूप मे उभरकर आए हैं। मार्टिन क्रो का टेस्ट मचों में अब तक का सर्वश्रेष्ठ स्कोर 188 रन रहा है। अब तक इन्होंने केवल 35 टेस्ट मैच ही खेले हैं जिसमें वह 41 05 की औसत से 2135 रन बना चुके हैं। इसके साथ-साथ टेस्ट क्रिकेट मे गेंदबाजी करके 13 विकेट भी ले चुके हैं।

रिचर्ड हैडली

विश्व के सर्वश्रेष्ठ हरफनमौला खिलाड़ियों मे इनका नाम भी शामिल है, तेज गेंदबाजी के साथ-साथ आक्रामक बल्लेबाजी भी कर लेते हैं। बल्लेबाजी मे 2471 रन बना चुके हैं और गेंदबाजी मे 351 विकेट केवल 69 टेस्ट मैचों मे ले चुके हैं। इनका गेंदबाजी मे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन केवल 52 रन देकर 9 विकेट लेने का है।

चैटफील्ड

वर्तमान न्यूजीलैंड टीम के तेज गेंदबाज जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट के साथ साथ एक दिवसीय क्रिकट में भी न्यूजीलैंड के लिए अच्छी गेंदबाजी की है। टेस्ट क्रिकेट में इनका गेंदबाजी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 6 विकेट 73 रन पर है। अब तक कुल 32 टेस्ट मचों मे 98 विकेट ले चुके हैं।

दक्षिण अफ्रीका

एण्ड्रीन विलियम रसेन 1924

दक्षिण अफ्रीका के अत्यंत कुशल क्षेत्ररक्षक थे। उन्होंने अपने 28 टेस्ट मैचों मे 41 कैच लिए। केवल अन्य दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों ने ही इससे अधिक कैच लिए हैं। केपटाउन मे 1956-57 में दूसरे टेस्ट में उनको "हैंडल्ड दी बॉल" अर्थात गेंद को छू लेने के कारण आउट घोषित किया गया। यह क्रिकेट टेस्ट इतिहास मे अनोखी मिसालो मे है।

गोडार्ड ट्रेवर लीजले 1933

दक्षिण अफ्रीका के बाए हाथ के सलामी बल्लेबाज और बाए हाथ से मध्यम-तेज गति से गेंद फेंकने वाले खिलाड़ी। उन्होंने कुल 41 टेस्ट मैचों में भाग लिया जिनमें से तेरह मे कप्तानी की। टेस्ट मैचों में उन्होंने 2457 से अधिक रन और 124 से अधिक विकिटें लीं। 1957-58 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध केपटाउन टेस्ट मे अफ्रीका की टीम 99 रन पर आउट हो गयी, लेकिन गोडार्ड अन्त तक आउट नहीं हुए और उन्होंने 56 रन बनाए। 1955 मे इग्लैंड के दौरे मे 25 विकिट लिए और अन्तिम टेस्ट में 31 रन पर 5 विकिट लिए। उन्होने एक मैच में तिकड़ी जमायी और कुल 3 रन पर छह विकिट लिए।

वेट जॉन हेनरी चिफोर्ड 1930

दक्षिण अफ्रीका के अत्यन्त उत्कृष्ट विकिटकीपर एव बल्लेबाज। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट मे 2405 रन बनाए हैं और 141 खिलाड़ियो को 50 टेस्ट-मैचों मे आउट किया। यह रिकार्ड संख्या है जो नॉट, ईवांस व प्राउट ने ही प्राप्त की है। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध वेट ने 1951 मे 134 रन का शतक भी बनाया।

एडक्क (नील) 1931

दाए हाथ से तेज गेंद फेंकने वाले दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी। इग्लैंड के विरुद्ध 1960 की टेस्ट शृंखला मे 26 विकिट 22.57 रन की औसत पर लिए। सन् 1955 में इंग्लैंड के दौरे पर आयी दक्षिण अफ्रीकी टीम के गेंदबाज ट्रेफील्ड ने भी 26 विकिट टेस्ट शृंखला मे 21.84 रन की औसत।

प्रॉक्टर (माइकल) 1946

दक्षिण अफ्रीकी ऑलराउंडर हैं जो गैरी सोबर्स के स्तर को चुनौती देते है। वह तेज गेंदबाज भी है। परम्परानिष्ठ शैली के अनुसार गलत कहे जाने वाले पाँव के ऐक्शन से तेज गेंद फेंकते हैं। सन् 1969-70 मे उन्होने अपने प्रथम श्रेणी के मैचो म लगातार छह शतक जमाए। उन्होंने सात टेस्ट मैच खेले और इनम 15 02 रन की औसत पर 41 टैस्ट विकिट लिए।

रोवन (एरिक) 1909

दक्षिण अफ्रीकी प्रथम श्रेणी क्रिकेट म इस खिलाडी ने 306 (अविजित) रन का रिकाड बना रखा है। करी कप मे 277 रन (अविजित) बनाकर उसमे भी उसन रिकाड बनाया। पहली बार मेन । फिर द्वितीय महायुद्ध के बाद वह 14 टेस्ट खेले। लॉड्स मैदान प र उन्होंने इंग्लैंड के विरुद्ध 236 व 60 (अविजित) रन बनाये।

श्वार्त्स 1875 म 1918

दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट खिलाडी जो बासनक्वेट की तरह गुगली फेंकत थ। इसम बडी परिशुद्धता रहती थी जिनके कारण उनका खेलना बडा कठिन हो जाता था। सिडनी म 1910 11 मे उन्होंने टेस्ट मैच मे ट्रपर सी० हिल आमस्ट्रांग पामफ्रांड और कार्टर य पाँच खिलाडी केवल 6 रन देकर आउट किए। उन्होंन नाथम्पटनशर के विरुद्ध 11 रन पर छह विकिट तथा एम० सी० के लिए 55 रन पर 8 विकिट लिए।

वह रग्बी के अन्तराष्ट्रीय खिलाडी थे और इसमे तीन बार इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया।

डिओलिवरा बेसिल लुइस 1931

दक्षिण अफ्रीका क अश्वेत बल्लेबाज व ऑफब्रेक गेंदबाज, जो 1960 म इंग्लड म खेलने के लिए आए। 44 टेस्ट मैच म इंग्लड की ओर म खेले, 40 06 की औसत पर 2484 रन बनाए और 39 55 रन की औसत पर 47 विकिट लिए। 1968 में उसके टीम में शामिल किए जान के बारे में विवाद के कारण एम० सी० सी० ने अपना दक्षिण अफ्रीकी दौरा रद्द किया।

□□□